॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
३५९

****

केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रह

[सान्वय **ऋचा** नाम्नी हिन्दी-टीकोपेत]

टीकाकार
आचार्य गुरु प्रसाद गौड़



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के. 37/117, गोपालमन्दिर लेन

पो० बा० नं० 1129, वाराणसी 221 001

दूरभाष : 2335263, 2333371

प्रथम संस्करण 2003 ई०

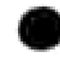
मूल्य : 30.00

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38 यू. ए., बंगलो रोड, जवाहर नगर, पो० बा० नं० 2113

दिल्ली 110 007 दूरभाष : 23956391



चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे) पो० बा० नं० 1069,

वाराणसी 221 001 दूरभाष : 2420404

भूमिका

भारतीय ज्योतिष में केरलीय ज्योतिष सामान्य रूप से उत्तर भारत में तथा विशेष रूप से दक्षिण भारत में प्रचलित है। इसका मूल उद्गम केरल प्रदेश से है। केरलीय ज्योतिष के नाम पर अब तक जो सामग्री प्रकाशित हुई है, वह तीन प्रकार की है। एक तो अक्षरांक ज्योतिष तथा दूसरी अंग स्पर्श विद्या तीसरी विषय कुंडली ज्योतिष है। इनमें प्रथम दो के प्रति ही ज्योतिषियों एवं जनसामान्य की जिज्ञासा अधिक है।

केरलीय ज्योतिष की प्राचीनता—केरलीय ज्योतिष कितना पुराना है इसका अनुमान असम्भव-सा है। हम केवल यही कह सकते हैं कि भारतीय ज्योतिष का अन्य विद्याओं की भाँति प्रस्फुटन तथा पल्लवन भी अनादि काल से हुआ है। इसकी विषय सामग्री को प्राचीन ज्योतिषियों ने अपने ग्रन्थों में स्थान दिया है। दक्षिण भारत में ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् दुर्गदेव ने ईस्वी सन् १०३२ ई. में अपने ग्रन्थ "रिट्ठ समुच्चय" में प्रश्नारिष्ट के आठ भेद—(१) अंगुलि प्रश्न, (२) अलक्त प्रश्न, (३) गोरोचना प्रश्न, (४) प्रश्नाक्षर प्रश्न, (५) आलिङ्गित प्रश्न, (६) दग्ध प्रश्न, (७) ज्वलित प्रश्न तथा (८) शान्त प्रश्न नाम से दिये हैं। इस ग्रन्थ में प्रश्नों का उत्तर देने की विधि भी दी गई है। दुर्गदेव प्रणीत यह "रिट्ठ समुच्चय" नामक ग्रन्थ प्राकृत भाषा में लिखा गया है। इसकी समाप्ति पर आचार्य लिखते हैं—

"रइयं बहु सत्थत्थं उवजीविता हु दुग्गएवेण।
रिट्ठं समुच्चय सत्थं वयणेण संजम देवस्स॥"

दुर्गदेव के गुरु का नाम संयमदेव था। वे भी केरलशास्त्र के जानकार थे। इससे इतना तो निष्कर्ष निकलता ही है कि आज से एक सहस्र वर्ष पूर्व केरलशास्त्र का भारतवर्ष में खूब प्रचार था।

केरलीय ज्योतिष का मूलाधार—केरलीय ज्योतिष का मूल आधार व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक चेष्टाओं से व्यक्त ज्योतिषीय संकेत होते हैं। व्यक्ति के अन्त:करण में जो भाव होते हैं, वे ही उसकी वाणी तथा चेष्टाओं के द्वारा प्रकट होते हैं। व्यक्ति की विविध भाव भङ्गिमाएँ उसके अन्त:करण की वृत्तियों का ही द्योतन करती है। मानव के मन में जैसा शुभाशुभ विचार आता है वैसा ही उसका फल प्रकट होता है। केरलीय ज्योतिष उन शुभाशुभत्व के विचारों की प्रतिच्छाया देखकर ही फलकथन करता है। अस्तु।

पृच्छक से किसी पुष्प, फल, देव, नदी आदि का नाम कहलवाकर और उसके आद्य वर्ण से अथवा प्रश्न के आद्य वर्ण से या वर्णों के समुच्चय से उनके आंकिक मूल्य के योग की गणित क्रिया द्वारा त्रिकाल के प्रश्नों का बोध करते हैं। आय ज्ञान की पद्धति में केवल प्रथम वर्ण से काम चल जाता है। ध्रुवांक पद्धति में सम्पूर्ण प्रश्नाक्षरों से गणित किया जाता है। अङ्गस्पर्श विद्या में व्यक्ति की चेष्टाओं के आधार पर शुभाशुभ भविष्य का

कथन करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान में पाश्चात्य जगत में जो अंकज्योतिष की धूम मची है, उसका मूल उत्स भी भारत का केरलीय ज्योतिष ही है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के विषय में—प्रस्तुत ग्रन्थ एक संग्रह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचयिता के बारे में अनिश्चय की स्थिति है, परन्तु ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर "**मूलदेवेन भाषितम्**" की भणिता लगी होने से यह विश्वास किया जा सकता है कि इसका संग्रह किन्हीं मूलदेव नामक विद्वान् ने किया है। ग्रन्थ का जो पूर्वार्द्ध है वह तो निश्चित ही मूलदेव की रचना हो सकता है। इस ग्रन्थ की दो स्थानों से प्रकाशित प्रतियों में तथा अन्य सन्दर्भों से प्राप्त सामग्री में पर्याप्त पाठभेद है। अशुद्धियां भी पर्याप्त हैं। अस्तु अच्छी तरह से पाठ का संशोधन कर **अन्वय** सहित हिन्दी टीका (ऋचा) की रचना की गयी है। टीका में गूढ़ विषयों का स्पष्टीकरण भलीभाँति कर दिया गया है। अनेक सारणियों के द्वारा छात्रों एवं जन-साधारण के उपयोग में आने लायक यह कृति पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। टीका की शैली पण्डिताऊ न होकर वर्तमान समय के अनुकूल है।

ग्रन्थ का रचनाकाल—इस ग्रन्थ के रचयिता की भाँति इसका रचना-काल भी अज्ञात है। परन्तु यह ग्रन्थ सामान्य ज्योतिषियों से लेकर जन-साधारण के लिये भी अतीव उपयोगी है। इसमें क्लिष्ट गणितीय प्रक्रियाएं नहीं हैं। इसके द्वारा सटीक उत्तर पाने वाले ज्योतिषी को आस्तिक, विवेकशील तथा सदाचारपरायण होना आवश्यक है।

विद्वानों से क्षमायाचना के साथ।

चैत्रशुक्ल सप्तमी भृगुवार
संवत् २०५९ विक्रमी
पुनर्वसु

विदुषामनुचरः
आचार्य पं. गुरुप्रसाद गौड़

केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रहविषयानुक्रमणिका

(पूर्वार्द्धम्)

॥ इति पूर्वार्द्धम् ॥

(उत्तरार्धम्)

॥ इति उत्तरार्ध ॥

नारदोक्त अङ्गविद्या

॥ इति नारदोक्त अङ्गविद्य ॥

इति केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रहविषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥



॥ श्रीः ॥

केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रह

(पूर्वार्द्धम्)

॥ ग्रन्थकारकृतमङ्गलाचरणम् ॥

त्रैलोक्यफलबोधाय येन दिव्येन चक्षुषा।
त्रिकालविषयाः प्रोक्ताः तस्मै केरलये नमः ॥ १ ॥

अन्वयः—येन दिव्येन चक्षुषा, त्रैलोक्यफल बोधाय त्रिकाल विषयाः प्रोक्ताः तस्मै केरलये नमः ॥ १ ॥

ऋचा हिन्दी टीका—जिन महर्षि केरल ने तीन लोकों को शुभाशुभ फल जानने के लिये भूत, भविष्य तथा वर्तमान इन तीनों कालों से सम्बन्धित प्रश्नों के विषयों का वर्णन अपने दिव्य नेत्रों से जानकर किया है, उनको नमस्कार है।

केरलशास्त्र के प्रणेता केरल ऋषि माने जाते हैं। अतः ग्रन्थकार ने मंगलाचरण में उनको प्रणाम किया है।

॥ टीकाकारकृत मंगलाचरणम् ॥

शिवाशिवं नमस्कृत्य गणनाथं सरस्वतीम्।
प्रश्नानामाशुबोधाय हिन्दी टीकां करोम्यहम् ॥ १ ॥
यन्मूलदेवेन सुसंगृहीतं, शास्त्रन्तु यत्केरलप्रश्नसंज्ञम्।
सम्पाद्य संशोध्य च मूलपाठं गुरुप्रसादेन गुरुप्रसादात् ॥ २ ॥

ज्ञानदीपकमासाद्य वर्तिं कृत्वा सदक्षरैः।
स्वरस्नेहेन संयोज्य ज्वालयेदुत्तरेन्धनैः ॥ २ ॥

अन्वयः—ज्ञानदीपकमासाद्य, सदक्षरैः वर्तिं कृत्वा, स्वरस्नेहेन संयोज्य उत्तरेन्धनैः ज्वालयेत् ॥ २ ॥

ऋचा०—ज्ञानरूपी दीपक को ग्रहणकर, श्रेष्ठ अक्षरों की बत्ती निर्मित कर (उस दीपक को) स्वर रूपी स्नेह (तेल या घी) से भरकर फिर उसे उत्तर रूपी ईंधन से प्रज्वलित करे।

॥ अथ प्रश्नस्य प्रयोजनम् ॥

दैवस्य हि दैवज्ञेन सदसत्फलवाञ्छया।
अवश्ये केरले मर्त्यः सर्वः समुपनीयते ॥ ३ ॥
अश्रौषीच्च पुरा विष्णोर्ज्ञानार्थे समुपस्थितः।
वचनं लोकनाथोऽपि ब्रह्मा प्रश्नादि निर्णयम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—दैवज्ञेन दैवस्य सदसत्फलवाञ्छया केरले (शास्त्रे) अवश्ये सर्वं समुपनीयते ॥ ३ ॥

पुरा (केरलशास्त्र) ज्ञानार्थे लोकनाथो ब्रह्माऽपि विष्णोः (समीपं) ज्ञानार्थे समुपस्थितः (तस्य) वचनं अश्रौषीच्च॥ ४॥

ऋचा०—ज्योतिषी को दैवज्ञ कहते हैं। जो दैव (कर्मफल या भाग्य) को जानता है वह दैवज्ञ होता है, यदि उसे शुभाशुभफल जानने की इच्छा हो तो केरलशास्त्र का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। इससे मनुष्य को सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है। प्राचीन काल में लोकनाथ ब्रह्मा जी ने भी विष्णु भगवान् के समीप जाकर प्रश्नादि-निर्णय के इस केरलशास्त्र को सुना था॥ ३-४॥

इन श्लोकों में केरलशास्त्र का महत्त्व बताते हुए कहा है कि इसके द्वारा प्रारब्ध संचित एवं क्रियमाण कर्मों के फल का ज्ञान सुगमतापूर्वक हो जाता है। अतः दैवज्ञ को इसका अध्ययन अति आवश्यक है। यह ज्ञान जहाँ से भी प्राप्त हो उसे ग्रहण करे; क्योंकि स्वयं लोकनाथ (सृष्टिकर्त्ता) होकर भी ब्रह्मा जी ने इस ज्ञान को विष्णु भगवान् से सीखा था। प्राचीन काल में स्मरण शक्ति इतनी तीव्र होती थी कि एक बार सुनकर के ही सब कुछ कण्ठस्थ कर लिया जाता था; इसे ही श्रुतिपरम्परा कहते हैं। इसी कारण वेदों, उपनिषदों को श्रुति कहा गया है। ज्ञान की प्राप्ति ज्ञाता के समीप अहंकार छोड़कर जाने से तथा सेवा से होती है। कबीर साहब ने कहा है—''शीस दिये जो गुरु मिलें तौ भी सस्ता जान।''

॥ अथ प्रश्नकथने योग्यानयोग्यांश्चाह ॥

क्षुद्र पाखण्डि धूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके।
नोत्तरं तथ्यतामेति यदि शम्भुः स्वयं वदेत्॥ ५॥
सभायां नैव वक्तव्यं नैव प्रश्नोत्तरं निशि।
नापराह्णे त्वविश्वस्ते त्वरितं न कदाचन॥ ६॥
भक्तायार्तदीनाय दैवज्ञो न दिशेद्यदि।
विफलं भवति तस्मात्तेभ्यः सदा वदेत्॥ ७॥

अन्वयः—यदि शम्भुः स्वयं वदेत् (तदापि) क्षुद्र पाखण्डि, धूर्तेषु, श्रद्धाहीनो पहासके (च) उत्तरं न तथ्यतामे ति॥ ५॥

सभायां प्रश्नोत्तरं न वक्तव्यं, नैवनिशि, नाऽपराह्णे, अविश्वस्ते तु न कदाचन त्वरितं (वक्तव्यम्)॥ ६॥

यदि दैवज्ञः भक्ताय, आर्तदीनाय न दिशेत् (तदा) विफलं भवति तस्मादेभ्यः सदा वदेत्॥ ७॥

ऋचा०—जो प्रश्नकर्त्ता क्षुद्र, पाखण्डी, धूर्त, श्रद्धाहीन उपहास करने वाला है उसको दिया हुआ उत्तर चाहे भगवान् शंकर ने भी क्यों न दिया हो सटीक नहीं निकलेगा। बहुत लोगों के समूह में प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहिये। इसी प्रकार रात्रि के समय प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहिये। दोपहर (मध्याह्न) के बाद अपराह्न के समय में तथा अविश्वस्त पृच्छक को भी उत्तर नहीं देना चाहिये। प्रश्नों का उत्तर कभी शीघ्रतापूर्वक नहीं देना चाहिये। परन्तु यदि प्रश्नकर्त्ता

भक्त, दीन या आर्त्त है तो उसके प्रश्न का उत्तर न देने पर ज्योतिषी का ज्ञान निष्फल हो जाता है। अतः ऐसे व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर अवश्य ही देना चाहिये॥ ५-७॥

इन तीनों श्लोको में प्रश्नकर्त्ता की योग्यता तथा अयोग्यता का संकेत किया गया है। जो आचरण में खोटे होते हैं, उन्हें क्षुद्र व्यक्ति कहा जाता है। जिनके आचरण में दोष होता है परन्तु ऊपर से भलमनसाहत का लबादा ओढ़े रहते हैं उनको पाखण्डी कहते हैं; जो चालाक होते हैं उन्हें धूर्त कहा जाता है। जिनमें ज्योतिषशास्त्र, प्राचीन ज्ञान तथा ऋषि प्रणीत शास्त्रों पर श्रद्धा न हो तथा जो इन सबकी खिल्ली उड़ाते हों (उपहासक हों) इन सबको प्रश्न का उत्तर देने से वह सही नहीं निकलता है; क्योंकि ऐसे लोग तो केवल परीक्षा लेने के लिये ही या ज्योतिषी का मजाक उड़ाने की गरज से ही आते हैं।

ज्योतिषी, चिकित्सक तथा वकील इनका परामर्श गोपनीय होता है, परन्तु जिस व्यक्ति से सम्बन्धित प्रश्न है वह व्यक्ति या तो पृच्छक स्वयं होता है या उससे सम्बन्धित व्यक्ति या वस्तु होती है। अतः ऐसे व्यक्ति के सामने प्रश्न का उत्तर देने से उसकी गोपनीयता भंग होती है, जिसके कारण पृच्छक को किसी प्रकार की हानि भी हो सकती है। मान लीजिये एक व्यक्ति केन्द्रीय या प्रान्तीय विधायिका हेतु होने वाले सामान्य निर्वाचन (आम चुनाव) लड़ रहा है वह चुनाव में अपनी जय-पराजय का प्रश्न पूछ रहा है और शास्त्र के अनुसार प्रश्न का उत्तर पराजय के रूप में प्राप्त होता है। अब ज्योतिषी ने यदि उस उत्तर को बहुत लोगों के सामने (सभा में) कह दिया तब वह बात उस पृच्छक के प्रतिद्वन्द्वी तक पहुँच सकती है, जिससे निःसन्देह पृच्छक को हानि होगी; क्योंकि इससे प्रतिद्वन्द्वी का मनोबल बढ़ेगा। इसी कारण ज्योतिषी को सचेत किया गया है कि—"**सभायां नैव वक्तव्यं।**"

प्रश्न कथन में रात्रि के समय का निषेध—एक तो सन्ध्याकाल फिर प्रदोषवेला ये प्रश्न के उत्तर में निषिद्ध हैं। इसके पश्चात् भी रात्रि का समय ऐसा होता है, जिसमें दैवज्ञ दिन भर का थका माँदा होता है अस्तु उस समय उसका मस्तिष्क भी ठीक से कार्य नहीं कर सकता है। अतः रात के समय में प्रश्नोत्तर न करें। इसी प्रकार मध्याह्न के पश्चात् अपराह्न वेला में दोपहर के भोजन के बाद विश्राम तथा आलस्य रहता है अतः उत्तर में गलती की सम्भावना रहती है।

अविश्वस्त व्यक्ति—अविश्वस्त व्यक्ति का अर्थ उस प्रश्नकर्त्ता से है, जिसे आप सन्दिग्ध समझते हों। चोर, उचक्के, तस्कर, असामाजिक एवं आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति अविश्वस्त होते हैं। ये ज्योतिषी को प्रश्न पूछकर उसका दुरुपयोग कर सकते हैं। अतः एकदम अजनबी व्यक्ति की अच्छी तरह परीक्षा कर लेना चाहिये कि कहीं वह अविश्वस्त की श्रेणी में तो नहीं आता। मान लीजिये कोई व्यक्ति चोरी का धन्धा करता है अब यदि वह दैवज्ञ के पास जाकर पूछता है कि मेरा कार्य सिद्ध होगा या नहीं; उसने कार्य भी नहीं बताया है तब वह व्यक्ति ज्योतिषी द्वारा "कार्य सिद्धि का योग है" ऐसा कहे जाने की स्थिति में अधिक उत्साह के साथ चोरी करेगा, जिसके कारण पीड़ित व्यक्ति या व्यक्तियों को कितना कष्ट होगा इसकी

कल्पना करना कठिन है। इसी प्रकार किसी प्रश्नकर्त्ता द्वारा चोर का नाम पूछे जाने की स्थिति में उत्तर सटीक होने पर प्रश्नकर्त्ता द्वारा चोर के सामने ज्योतिषी का नाम घोषित किये जाने के स्थिति में (भले ही वह माल पुलिस द्वारा बरामद किया जाय) चोर से दुश्मनी सुनिश्चित होगी। अतः ऐसा प्रश्नकर्त्ता भी अविश्वस्त कहा जायेगा; क्योंकि उसके द्वारा गोपनीयता भंग की गई है। अतः जो प्रष्टा प्रश्नोत्तर की गोपनीयता भंग कर सकता हो अथवा भविष्यवाणी का दुरुपयोग कर सकता हो उसे अविश्वस्त की श्रेणी में रखा गया है। और भी कई प्रकार के व्यक्ति अविश्वस्त हो सकते हैं अतः विचारपूर्वक उनको प्रश्न का उत्तर देने से ज्योतिषी को सदैव बचना चाहिये तथा स्वयं गोपनीयता की रक्षा के लिये सावधान रहना चाहिये यही अभिप्राय है।

''त्वरितं न कदाचन''—प्रश्न का उत्तर अच्छी प्रकार सोच-विचार कर ही देना चाहिये, अन्यथा हड़बड़ी तथा जल्दबाजी में दिया गया उत्तर निश्चित ही त्रुटिपूर्ण हो जावेगा और उससे ज्योतिषी को अपयश की प्राप्ति होगी।

जो रोग, ऋण, कष्ट आदि से पीड़ित होते हैं, उनको दीन तथा आर्थ कहा जाता है। इसके साथ जो ज्योतिषी में पूज्यता का भाव रखते हैं तथा निर्धन हैं ऐसे पृच्छकों के प्रश्न का उत्तर दैवज्ञ को अवश्य ही देना चाहिये अन्यथा उसे सरस्वती का शाप लगेगा और उसकी विद्या नष्ट हो जावेगी।

॥ अथ प्रश्नकर्त्तुर्नियमाः ॥

तस्मान्नृपः कुसुमरत्नफलाग्रहस्तः
प्रातः प्रणम्य वरयेदपि प्राङ्मुखस्थः।
होराङ्गशास्त्रकुशलान् हितकारिणश्च
संहृत्य दैवगणकान्सकृदेव पृच्छेत्॥ ८॥

सम्पूज्य साङ्गान् खचरान्दैवज्ञं स्वक्रियापराम्।
श्रद्धायुक्तः पूर्णपाणिः पृच्छेदव्याकुलः पुमान्॥ ९॥
फलपुष्पयुतो यो हि दैवज्ञं परिपृच्छति।
तस्यैव कथयेत् प्रश्नं सत्यं भवति नान्यथा॥ १०॥

अन्वयः—तस्मात् कुसुमरत्नफलाग्रहस्तः नृपः होराङ्गशास्त्रकुशलान् च हितकारिणो दैवगणकान् प्रातः संहृत्य प्राङ्मुखस्थः प्रणम्य अपि वरयेत् च सकृदेव पृच्छेत्॥ ८॥

साङ्गान् खचरान्, स्वक्रियापराम् दैवज्ञं (च) सम्पूज्य, अव्याकुलः पूर्णपाणि श्रद्धायुक्तः पुमान् पृच्छेत्॥ ९॥

यो फलपुष्पयुतो दैवज्ञं परिपृच्छति तस्यैव प्रश्नं कथयेत्, अन्यथा सत्यं न सम्भवति॥ १०॥

ऋचा०—अस्तु राजा या पृच्छक को चाहिये कि वह प्रातःकाल पूर्वाभिमुख बैठकर होराशास्त्र के अङ्गों में प्रवीण ज्योतिषियों, हित करनेवालों को एकत्र कर, प्रणामकर,

वरणकर, एक बार में ही प्रश्न पूछे। हाथों में फल, पुष्प, रत्नादि दक्षिणा लेकर ही दैवज्ञ के पास जाना चाहिये ॥

साङ्गोपाङ्ग नवग्रहों के साथ स्वक्रिया परायण दैवज्ञ को श्रद्धायुक्त होकर भरे हुए हाथों सहित शान्त चित्त से प्रश्न पूछना चाहिये।

जो व्यक्ति फल पुष्पादि लेकर दैवज्ञ से प्रश्न करता है तब प्रश्न का उत्तर सत्य निकलता है अन्यथा नहीं ॥ ८-१० ॥

इन श्लोकों में "**सकृदेव पृच्छेत्**" तथा "**पूर्णपाणिः**" ये दो शब्द अति महत्त्वपूर्ण हैं। **पूर्णपाणिः** का अर्थ है कि हाथ में अपनी सामर्थ्य के अनुसार फल, फूल, धान्य, रत्न या करेंसी नोट लेकर ही प्रश्न पूछना चाहिये, अन्यथा प्रश्न का फल सत्य नहीं निकलेगा। इसी प्रकार **सकृदेव पृच्छेत्** का अर्थ है कि एक बार में ही प्रश्न पूछना चाहिये उसे बार-बार नहीं दुहराना। दूसरा—एक से अधिक प्रश्न भी एक अवसर पर नहीं पूछना चाहिये।

॥ प्रष्टुर्दिङ् नियमाः ॥

प्राची प्रतीची माहेशी कौबेरी दिक् शुभावहा।
अवाची राक्षसी दुष्टा शून्याग्नेयी च मारुती ॥ ११ ॥

अन्वयः—प्राची, प्रतीची, कौबेरी च माहेशी दिक् शुभावहा। अवाची राक्षसी (च) दुष्टा, आग्नेयी मारुती च शून्या ॥ ११ ॥

ऋचा०—प्रश्न करने वाला व्यक्ति यदि ज्योतिषी के पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा या उत्तर दिशा में बैठकर प्रश्न करे तो शुभ फल होता है। दक्षिण तथा नैऋत्य कोण में बैठकर प्रश्न करने पर दुष्टफल (अशुभ) होता है तथा अग्निकोण एवं वायव्य में बैठकर प्रश्न करने पर शून्य फल की प्राप्ति कहना चाहिये ॥ ११ ॥

यहाँ **शून्य फल** का तात्पर्य है अच्छा-बुरा कोई परिणाम न होना अर्थात् सामान्य फल की प्राप्ति होना। पाठकों की सरलता के लिये दिशाओं के परिचय के साथ उनके स्वामी तथा फल दिया जा रहा है। यहाँ दिशाएँ आठ मानी गयी हैं। चार मुख्य दिशाएँ तथा चार कोण दिशाएं। कोणों को विदिशा भी कहते हैं।

१	२	३	४	५	६	७	८	क्रम संख्या
पूर्व	पू०+द०	दक्षिण	द०+प०	पश्चिम	प०+उ०	उत्तर	उ०+पू०	अष्टदिशा के नाम
प्राची	आग्नेयी अग्निकोण	अवाची याम्य	नैऋत्य राक्षसी	प्रतीची वारुणी	वायव्य वायुकोण	उदीची कौबेरी	ईशान माहेशी	पर्याय
इन्द्र	अग्नि	यम	राक्षस	वरुण	वायु (मरुत्)	कुबेर (सोम)	शिव (महेश)	स्वामी
शुभ	शून्यफल	दुष्टा	दुष्टा	शुभ	शून्यफल	शुभ	शुभ	फल

दिशा से सम्बन्धित व्यावहारिक कठिनाई—आज के समय में जब जनसंख्या विस्फोट की स्थिति निर्मित हो गई है तब ऐसे में नगर तो क्या गाँव में भी ज्योतिषी के पास

इतना स्थान नहीं होता कि उसके आठों दिशाओं में बैठकर कोई प्रष्टा प्रश्न पूछ सके तब दिशा के आधार पर फल कैसे कहा जावे यह एक व्यावहारिक परेशानी रहेगी। इस कठिनाई का हल यह है कि अग्राङ्कित प्रकार का एक चक्र बनाकर ज्योतिषी को किसी कागज, पुट्ठा (कार्ड बोर्ड) या चौकी पर रख लेना चाहिये। प्रश्नकर्त्ता से इस चक्र में दाहिने हाथ की अनामिका रखवायें। जिस दिशा के स्थान पर पृच्छक अपनी अंगुली रखे उसी दिशा का निर्णय करें। ध्यान रहे कि इस चक्र में मध्यवर्त्ती कोष्ठक ज्योतिषी का होता है, उसमें प्रश्नकर्त्ता की अंगुली नहीं रखवाना चाहिये। सुविधा के लिये चक्र के ज्योतिषीवाले (मध्यवर्त्ती) भाग को पीले या अन्य रंग में रंग देना चाहिये तथा पृच्छक को अंगुली रखवाने के पूर्व ही यह समझा देना चाहिये कि वह मध्यवर्त्ती रंगीन भाग को छोड़कर शेष आठ कोठों में से किसी पर भी अंगुली रखे।

॥ दिशासूचक चक्र ॥

ईशान	पूर्व	आग्नेय
उत्तर	दैवज्ञ के बैठने का स्थान	दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य

॥ अथ प्रश्न समये शुभशकुनमाह ॥

दृङ्मनसोः प्रीतिकरं प्रश्नेषु दर्शनं यदि श्रवणम्।
माङ्गल्यद्रव्याणां भवति शुभं विनिर्दिशेत्तत्र॥ १२॥
हयगज वृष हंसादेः पृच्छाकाले यदि रुतं भवति।
दर्शनमथवा तेषां शुभदं प्रश्नं विनिर्दिशेत्तत्र॥ १३॥

अन्वयः—यदि प्रश्नेषु माङ्गल्यद्रव्याणां दर्शनं, श्रवणं दृङ्मनसोः प्रीतिकरं भवति तत्र शुभं विनिर्दिशेत्॥ १२॥

यदि पृच्छाकाले हय-गज-वृष-हंसादेः दर्शनं अथवा तेषां रुतं भवति तदा शुभदं प्रश्नं विनिर्दिशेत॥ १३॥

ऋचा०—यदि प्रश्न समय में माङ्गल्य द्रव्यों (दही, दूध, सवत्सा गौ, जलपूर्णघट आदि) का दर्शन यां श्रवण हो तब प्रश्न का फल शुभ होता है।

इसी भाँति उस समय घोड़ा, हाथी, बैल, साँड़, हंस आदि का शब्द सुनने को मिले अथवा दर्शन हो तब भी प्रश्न का फल शुभप्रद होता है॥ १२-१३॥

इन श्लोकों में मन की प्रसन्नता सबसे बड़ा शकुन कही गयी है, जिस समय मन प्रसन्न होता है उस समय समस्त कार्य सिद्ध होते हैं; जैसा कि ग्रन्थान्तर में कहा है—

''मनसस्तुष्टिरेवात्र परमं जयलक्षणम्।'' तथा

''मनोत्सुकत्वं मनसः प्रहर्षः शुभस्य लाभो विजयप्रवाहः।

माङ्गल्यलब्धिः श्रवणं च राज्ञां ज्ञेयानि नित्यं विजयावहानि॥''

माङ्गल्य शकुनों के सम्बन्ध में शास्त्र का कथन है—

''स्वस्ति वृद्धि निनादश्च नन्द्यावर्तः सकौस्तुभः।
वादित्राणां शुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः॥''

इसके अतिरिक्त—

''त्रिदशाः सुहृदो विप्राः ज्वलितश्च हुताशनः।
गणिका च महाभागा दूर्वा चार्द्राश्च गोमयम्॥
रुक्मं रूप्यं च ताम्रं च सर्वरत्नानि चाप्यथ।
औषधानि च सर्वज्ञा यवाः सिद्धार्थकास्तथा॥
खड्गं पात्रं पताका च मृत्तिकायुधपीठकम्।
राजलिङ्गानि सर्वाणि शवं रुदितवर्जितम्॥
घृतं दधि पयश्चैव फलानि विविधानि च।''

अर्थात् देवता, मित्र, वेदपाठी ब्राह्मण, प्रज्वलित अग्नि, वेश्या, दूर्वा, ताजा गोबर, सोना, चाँदी, ताँबा, सम्पूर्ण रत्न पदार्थ, औषधियाँ (जड़ी-बूटियाँ), ज्योतिषी, जौ, सफेद सरसों, तलवार, पात्र, पताका, मिट्टी, शस्त्र, सिंहासन आदि सम्पूर्ण राजचिह्न, रोदनवर्जित शव, घी, दही, दूध, फल, मेवा, स्वस्ति, वृद्धि के शब्दों का निनाद, कौस्तुभ मणि, शंख, मंगल्यवाद्यों की आवाजें, गान्धार, षड्ज, ऋषभ इन तीन स्वरों में गाये गये गीतों का शब्द, गर्म हवा का धूलि सहित झोंका लगना ये सब पदार्थ सभी विघ्नों को दूर करने वाले कहे गये हैं।

॥ अष्टविधा प्रश्नाः ॥

**संयुक्तः, असंयुक्तः, अभिहतः, अनभिहतः, अभिघातिकः।
आलिङ्गितः, अभिधूमितः, दग्धः प्रश्न इति॥ १४॥**

अन्वयः—सरलम्॥ १४॥

ऋचा०—केरलशास्त्र में प्रश्न आठ प्रकार के होते हैं—(१) संयुक्त, (२) असंयुक्त, (३) अभिहत, (४) अनभिहत, (५) अभिघातिक, (६) आलिङ्गित (७) अभिधूमित तथा दग्ध। इनमें से प्रत्येक का लक्षण एवं परिभाषा आगे बताई गई है॥ १४॥

॥ संयुक्त प्रश्नः ॥

**यदि प्रष्टा प्रश्नसमये स्वकायं स्पृष्ट्वा पृच्छति।
तदा संयुक्तप्रश्नः स च लाभकरो भवति॥ १५॥**

अन्वयः—सरलम्॥ १५॥

ऋचा०—यदि पृच्छक प्रश्नकाल में अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ प्रश्न पूछता है तब उसे **संयुक्त प्रश्न** कहते हैं। संयुक्त प्रश्न लाभ का सूचक होता है॥ १५॥

संयुक्त प्रश्न की विशेषता यह है कि उसमें पूछने वाला व्यक्ति अपने दाहिने हाथ से

स्वशरीर के किसी भी अंग का स्पर्श करता है। तब विशेष लाभ का सूचक होता है। यदि वामहस्त से वामांग को छोड़ कर शेष शरीर का स्पर्श करे तब लाभ की संभावना नगण्य ही समझना चाहिये। मूल में वाम या दक्षिण का उल्लेख नहीं है। अत: दक्षिण हस्त की प्रधानता होने से उसके द्वारा ही स्पर्श करने का अर्थ ग्रहण करना समीचीन है।

यदि पथि शयानो दोला-गज-तुरङ्गरूढो वा भवति।
भावरहितः फल द्रव्य विवर्जितः पृच्छति तदाऽसंयुक्तप्रश्नः।
अस्मिन् प्रश्ने बहुदिनानन्तरं लाभादि सुखं भवति॥ १६॥

अन्वयः—सरलम्॥ १६॥

ऋचा०—यदि प्रश्न पृच्छकमार्ग में चलते हुए प्रश्न पूछे अथवा अपने शयनागार में किंवा बिस्तर पर लेटे हुए प्रश्न पूछे, अथवा झूले में झूलता हुआ, पालकी पर चढ़ा हुआ, लिफ्ट में, सीढ़ियों पर, हाथी, घोड़े, ऊँट, खच्चर, रथ, बैलगाड़ी, द्विचक्रयान, मोटरयान, रेल आदि में यात्रा करता हुआ प्रश्न पूछे, भावरहित हो, फल-द्रव्य, दक्षिणा रहित हो तब इस प्रकार की परिस्थितियों में पूछा गया प्रश्न **असंयुक्त** होता है। इस प्रकार के प्रश्न में बहुत दिनों बाद, लाभ-सुख कार्यसिद्धि आदि होते हैं।

स्पष्टीकरण—यहाँ पर विवेचित होने वाले प्रश्न के आठों भेद प्रष्टा की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को भली प्रकार से दर्शाते हैं। जहाँ **संयुक्त प्रश्न** व्यक्ति की संतुलित मानसिकता का द्योतक होता है; वहीं पर **असंयुक्त प्रश्न** असंतुलित एवं विशृंखलित मन:स्थिति को प्रकट करता है। इस स्थिति में पूछने वाला व्यक्ति अपने उद्देश्य के प्रति लापरवाह तथा अनुत्तरदायी होता है। उसकी आत्मा; मन तथा इन्द्रियों में पारस्परिक सहकार का अभाव रहता है और वह आधे-अधूरे मन से प्रश्न पूछता है। उसके द्वारा किया हुआ प्रयत्न भी आधा-अधूरा ही होता है। परिणामत: कार्यसिद्धि में उसके प्रयत्न की शिथिलता के अनुसार ही विलम्ब हुआ करता है।

॥ अभिहत प्रश्नः ॥

यदि प्रष्टा वामहस्तेन वामाङ्गं स्पृशति।
तदाऽभिहतः प्रश्नः अलाभकरो भवति॥ १७॥

अन्वयः—सरलम्॥ १७॥

ऋचा०—जब प्रश्न समय में पूछने वाला व्यक्ति अपने वामहस्त से स्वशरीर के वाम भाग को स्पर्श करते हुए प्रश्न करता है; तब उसे **अभिहत प्रश्न** कहा जाता है; इसका फल अलाभकर होता है॥ १७॥

''अभिहत'' शब्द विशेषण है जो ''अभि'' उपसर्ग के साथ क्रमश: ''हन्'' तथा ''क्त'' प्रत्ययों के जुड़ने से बनता है। इस शब्द का अर्थ—पीटा गया, घायल किया गया, पीड़ित या आहत होता है अत: इस प्रकार के प्रश्न में ''प्रश्न का फल पिट गया है'' ऐसा समझना चाहिये।

॥ अनभिहत प्रश्नः ॥

प्रश्नकर्त्ता स्वहस्तेन परकायं स्पृशेद्यदि।
तदाऽनभिहतः प्रश्नः कार्यलाभकरः स्मृतः॥ १८॥

अन्वयः—यदि प्रश्नकर्त्ता स्वहस्तेन परकायं स्पृशति तदा कार्यलाभकरः अनभिहतः प्रश्नः स्मृतः॥ १८॥

ऋचा०—जब पृच्छक अपने बाएँ हाथ से किसी अन्य व्यक्ति का शरीर स्पर्श करते हुए प्रश्न पूछे तब दैवज्ञ को वह प्रश्न **अनभिहत** जानना चाहिये। इस प्रश्न का फल कार्यलाभकर होता है॥ १८॥

इस प्रकार के प्रश्न में कार्य का फल ''अभिहत'' नहीं होने से कार्य सिद्ध होता है।

॥ अभिघातिक प्रश्नः ॥

मस्तकं हृदयं पादं हस्तं वा मर्दयेत्कटिम्।
तदाऽभिघातिकः प्रश्नः प्रष्टुः सन्तापकारकः॥ १९॥

अन्वयः—(यदि प्रष्टा) मस्तकं, हृदयं, पादं, हस्तं वा कटिं मर्दयेत् (तदा) प्रष्टुः सन्तापकारकः अभिघातिकः प्रश्नः (भवति)॥ १९॥

ऋचा०—जब प्रश्नकर्त्ता स्वशरीर के मस्तक, हृदय, पैर, हाथ अथवा कमर का मर्दन करता हुआ (मलता हुआ) प्रश्न करता है तब वह **अभिघातिक** प्रश्न कहलाता है। यह पूछने वाले के लिये शोक-सन्ताप देने वाला होता है॥ १९॥

अंगों का ताड़न या मर्दन करना अपशकुनकारक होता है। अङ्गुलियों का चटकाना भी इसी श्रेणी में है। ये लक्षण पृच्छक की मानसिक व्यग्रता तथा भावी कष्ट के सूचक होते हैं। ''अभिघाती'' का अर्थ शत्रु होता है। इस प्रश्न में किसी शत्रु द्वारा कार्य बाधा होती है।

॥ आलिङ्गित प्रश्नः ॥

यदि प्रष्टा दक्षिणकरेण निजं दक्षिणाङ्गं स्पृशति।
तदाऽऽलिङ्गितः प्रश्नः लाभसुखादिकारको भवति॥ २०॥

अन्वयः—सरलम्॥ २०॥

ऋचा०—जब प्रष्टा प्रश्न के समय अपने दाहिने हाथ से स्वयं के शरीर के किसी दाहिने भाग का स्पर्श करते हुए प्रश्न पूछता है, तब वह **आलिङ्गित** नामक प्रश्न लाभ तथा सुख देने वाला होता है॥ २०॥

इस प्रकार के प्रश्न में मित्र, पुत्र, पत्नी आदि सुहृदों की प्राप्ति होती है तथा उनके सहकार से कार्य-सिद्धि होती है।

॥ अभिधूमित प्रश्नः ॥

यदि प्रष्टा दक्षिण वाम करेण वा।
सर्वाङ्गं स्पृशति तदाऽभिधूमितः प्रश्नः।
अस्मिन् प्रश्ने किञ्चिल्लाभः मित्राद्यागमनं च॥ २१॥

अन्वयः—यदि प्रष्टा दक्षिणेन वा वामकरेण सर्वाङ्गं स्पृशति तदा अभिधूमितः प्रश्नः। अस्मिन् प्रश्ने मित्रादि आगमनं च किञ्चित् लाभम् (भवेत्) ॥ २१ ॥

ऋचा०—जब कोई प्रश्नकर्त्ता अपने दाहिने या बाएँ किसी भी हाथ शरीर के अनेक अङ्गों या एकाधिक अङ्गों का स्पर्श करता है तो वह **अभिधूमित** प्रश्न कहलाता है। इस प्रश्न में थोड़ा लाभ प्राप्त होता है तथा मित्रों रिश्तेदारों आदि आत्मीय व्यक्तियों से थोड़ा मिलन होता है॥ २१॥

यहाँ मूल में सर्वाङ्गस्पर्श की बात कही गयी है। कोई व्यक्ति एक साथ सारे शरीर का स्पर्श नहीं कर सकता, अतः इस विषय के नये विद्यार्थी को इस कारण प्रश्ननिर्णय में कठिनाई होगी। अस्तु सर्वाङ्ग स्पर्श का अर्थ यह समझना चाहिये कि पृच्छक प्रश्न पूछते समय अपने शरीर के अङ्गों पर लगातार हाथ सरकाता हुआ प्रश्न पूछ रहा हो। ''अभिधूमित'' का अर्थ है—चारों ओर धुवां दिखायी पड़ना। सर्वाङ्ग पर हाथ फेरने के कारण ही इस चेष्टा को ''अभिधूमित'' कहा गया है।

॥ दग्ध प्रश्नः ॥

यदि प्रष्टा रोदन दुःख भयार्त्त नीचस्थल सन्निधौ।
भक्तिभावरहितः पृच्छति तदा दग्धप्रश्न उदाहृतः।
एष प्रश्नः शोक संताप दुःख पीड़ा बह्वलाभकरो भवति॥ २२॥

अन्वयः—सरलम्॥ २२॥

ऋचा०—यदि प्रश्नकर्त्ता रोता हुआ, भयभीत, दुःखी होकर प्रश्न पूछे अथवा किसी नीच स्थल में (अस्पताल, पोस्टमार्टम गृह, श्मशान, युद्धभूमि, दुर्घटना-स्थल, गहरे गड्ढे, तहखाने, कसाईखाने, दुर्गन्धित भूमि या वातावरण) या उसके समीप प्रश्न पूछे, भक्तिभाव से रहित होकर प्रश्न पूछे तब इन स्थितियों में पूछा गया प्रश्न **दग्ध** कहलाता है। इस प्रकार का प्रश्न शोक-सन्ताप, दुःख-पीड़ा देने वाला तथा बहुत हानि करने वाला होता है॥ २२॥

'दग्ध' का अर्थ जला हुआ होता है। अस्तु इस प्रश्न की पृच्छक द्वारा की गई चेष्टाएं यह सूचित करती हैं कि कार्यार्थ किये गये प्रयत्न रूपी बीज जल चुके हैं, उनका फल प्राप्त नहीं होगा, असफलता के कारण घोर निराशा तथा पीड़ा झेलनी पड़ेगी।

॥ केरलशास्त्र महिमा॥

अथ जीवधातु मूलज्ञान नष्ट द्रव्य स्थान बन्ध मोक्षण-जीवित-मरण-जय-पराजय-लाभालाभ-गमनागमन-त्रिकाल प्रश्नान् प्रकाशयति इतीदं शास्त्रं नान्यथा॥ २३॥

अन्वयः—सरलम्॥ २३॥

ऋचा०—इस शास्त्र से जीव धातु—मूल सम्बन्धी प्रश्नों का ज्ञान, नष्ट द्रव्य की प्राप्ति अप्राप्ति, उसके स्थान का ज्ञान, बन्धन तथा मोक्षण, जीवन तथा मरण, जीत-हार, लाभ-हानि, आवागमन आदि तीनों कालों के प्रश्नों के उत्तरों का ज्ञान होता है। इन विषयों पर इस शास्त्र का प्रकाश इन्हें दृष्टिगोचर कर देता है॥ २३॥

प्रश्न के इन उल्लिखित विषयों के अन्तर्गत मानव जीवन की प्रायः सभी समस्याएं आ जाती हैं।

॥ प्रष्टुर्दृष्टिफलम् ॥

ऊर्ध्वदृष्ट्या भवेज्जीवो, अधो दृष्ट्या च मूलकम्।
समदृष्ट्या भवेद् धातुर्मूलदेवेन भाषितम्॥ २४॥

अन्वयः—ऊर्ध्वदृष्ट्या जीवो, च अधोदृष्ट्या मूलकं, समदृष्ट्या धातुः भवेत्। (इति) मूलदेवेन भाषितम्॥ २४॥

ऋचा०—इस श्लोक में मूलदेव ने पृच्छक की दृष्टि का फल बताते हुए कहा है कि यदि पूछने वाला प्रश्न पूछते समय ऊपर की ओर देखकर प्रश्न पूछता है तो उसका प्रश्न "जीव" से सम्बन्धित प्रश्न होता है। यदि पृच्छक की दृष्टि नीचे (भूमि की तरफ) हो तो उसका प्रश्न "मूल" से सम्बन्धित होता है। परन्तु यदि प्रष्टा ऊपर या नीचे न देखकर सामने की ओर देखकर प्रश्न करता है तो इस प्रकार की समदृष्टि में उसका प्रश्न "धातु" से सम्बन्धित होता है॥ २४॥

प्रश्न पूछते समय यदि पृच्छक की ग्रीवा सीधी हो तब वह "समदृष्टि" होती है। यदि उसकी गर्दन पीछे को झुकी हो तो "ऊर्ध्वदृष्टि" होगी। इसके विपरीत यदि पूछने वाले की गर्दन सामने की ओर झुकी होगी तब उसे "अधोदृष्टि" कहेंगे।

॥ प्रश्नकर्त्ता की दृष्टि के अनुसार प्रश्नविषय का चक्र ॥

ऊर्ध्वदृष्टि	**अधोदृष्टि**	**समदृष्टि**	**प्रश्नकर्त्ता की दृष्टि**
ऊपर की ओर देखना	नीचे की ओर देखना	सामने देखना	**लक्षण**
जीव	मूल	धातु	**प्रश्न का विषय**

॥ दिनमानं त्रिभिर्विभज्य प्रश्न ज्ञानम् ॥

त्रिभिर्भक्त्वा दिवामानं प्रष्टुः प्रश्नकालिकम्।
उदय भागे तु जानीयात् प्रश्नमालिङ्गितं तदा॥ २५॥
मध्यभागे दिवामाने प्रश्नमभिधूमितं भवेत्।
अस्तङ्गते दिवाभागे दग्धं प्रश्नं भवेत्तदा॥ २६॥

अन्वयः—प्रश्नकालिकं दिवामानं त्रिभिर्भक्त्वा उदयभागे आलिङ्गितं प्रश्नं जानीयात्। मध्य भागे दिवामाने अभिधूमितं प्रश्नं भवेत्। अस्तंगते दिवाभागे (यदि) प्रश्नं तदा दग्धं भवेत्॥ २५-२६॥

ऋचा०—जिस दिन प्रश्न किया जावे उस दिन के स्थानीय दिनमान को तीन से भाग दें और फिर यह देखें कि प्रश्न दिन के किस भाग में किया गया है। यदि प्रश्नकालिक इष्ट दिन

के उदय भाग (आदिभाग) में हो तो वह प्रश्न **आलिंगित** है—ऐसा जानना चाहिये। यदि दिन के मध्य भाग में प्रश्न किया गया हो तो वह प्रश्न **अभिधूमित** समझें। यदि वह प्रश्न दिन के अंतिम भाग (अस्तंगत भाग) में किया गया हो तब वह **दग्ध** प्रश्न होता है॥ २५-२६॥

मान लीजिये प्रश्न समय पर किसी दैवज्ञ का स्थानीय सूर्योदय के अनुसार निकाला गया। सूर्योदयादि इष्ट काल ८ घटी ३० पल है और उस दिन का दिनमान ३२ घटी ६ पल है। इस दिनमान में तीन से भाग देने पर लब्धि १० घटी ४२ पल प्राप्त हुए। तब प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न दिन के प्रथम भाग उदय भाग में हुआ अत: ''आलिंगित प्रश्न'' हुआ। यदि उस दिन प्रश्नकालिक इष्टकाल १० घटी ४३ पल से लेकर २१ घटी २४ पल तक होता तो वह प्रश्न मध्य भाग में होने के कारण ''अभिधूमित'' की श्रेणी में होता। यदि उसी दिन प्रश्नकालिक इष्टकाल २१ घटी २५ पल से ३२ घटी ६ पल तक होता तब वह 'दग्ध' प्रश्न कहलाता। इस प्रकार दिनमान के इन तीन भागों में तीन वेलाओं का ज्ञान होता है।

॥ दिन की तीन वेलाओं का चक्र॥

प्रथम भाग (१)	द्वितीय भाग (२)	तृतीय भाग (३)	दिन के त्रिभाग
उदय भाग उदय वेला	मध्य भाग मध्य वेला	अस्त भाग अस्तङ्गत वेला	**पयार्य**
आलिंगित प्रश्न	अभिधूमित प्रश्न	दग्ध प्रश्न	**प्रश्न का प्रकार**
आलिंगित वेला	अभिधूमित वेला	दग्ध वेला	**प्रश्न वेला**

॥ जीवधातु-मूलज्ञानम्॥

जीवन्धातुञ्च मूलञ्च भाज्यमुदयं त्रिभि:पुन:।
मध्यभागे धातुमूलं जीवम्भाज्यं पुनस्त्रिभि:॥ २७॥
अस्तङ्गते दिवाभागे मूलञ्जीवञ्च धातुकम्।
त्रिभिर्भाज्यञ्जानीयात् केरलज्ञानं सुबोधनम्॥ २८॥

अन्वय:—उदयं पुन: त्रिभि: विभज्य जीवं, धातुं च मूलं (भवेत्) मध्यभागे धातुं मूलं, जीवं (इति) पुन: त्रिभि: भाज्यम्। अस्तङ्गते दिवाभागे त्रिभिर्भाज्यं मूलं जीवं च धातुकं जानीयात्। केरलज्ञानं सुबोधनम्॥ २७-२८॥

॥ दिनमान की तीन वेलाओं के उपभाग से प्रश्न ज्ञान॥

उदयभाग			मध्य भाग			अस्तभाग			बेला
प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	उपवेला
जीव	धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	मूल	जीव	धातु	प्रश्न विषय

ऋचा०—दिनमान के आदि भाग, जिसे कि उदय भाग कहा गया है उसके पुन: तीन भाग कीजिये; अब यदि प्रश्न-समय का इष्ट काल उस आदि भाग का प्रथम भाग है तो प्रश्न जीव से सम्बन्धित होगा। आदि भाग के द्वितीय भाग में प्रश्न धातु से सम्बन्धित होगा तथा तृतीय भाग में प्रश्न का विषय मूल होगा। पुन: दिनमान के मध्य भाग के त्रिभागों में प्रश्न का विषय धातु-मूल-जीव इस क्रम से होता है। दिन के अन्तिम भागों के पुन: त्रिभागों में प्रश्न का विषय मूल, जीव तथा धातु इस क्रम से होता है। इस प्रकार पूरे दिनमान के वास्तव में नौ भाग किये जाते हैं।

॥ आलिङ्गित वेलायां प्रश्वानां फलम्॥

आलिङ्गितवेलायामालिङ्गित प्रश्ने आलिङ्गितफलम्॥ २९॥
आलिङ्गित वेलायामभि धूमित प्रश्ने अभिधूमितफलम्॥ ३०॥
आलिङ्गितवेलायां दग्धप्रश्ने दग्धफलम्॥ ३१॥

अन्वय:—सरलम्॥ २९-३१॥

ऋचा०—यदि आलिङ्गित वेला में आलिङ्गित प्रश्न किया जावे तो उसका फल आलिङ्गित होता है अर्थात् उसमें लाभ, सुख एवं आदर की प्राप्ति होती है। यदि आलिङ्गित वेला में ''अभिधूमित'' प्रकार का प्रश्न किया जावे तो उसका फल **अभिधूमित** होता है। अर्थात् अल्प मात्रा में सुख एवं लाभादि की प्राप्ति होती है। यदि आलिङ्गित वेला में ''दग्ध'' प्रश्न किया जावे तो **दग्ध** फल की प्राप्ति होती है अर्थात् अशुभ, पीड़ाकार फल प्राप्त होता है॥ २९-३१॥

॥ अभिधूमित वेलायां प्रश्नफलम्॥

अथाभिधूमितवेलायामभिधूमित प्रश्ने आलिङ्गितफलम्॥ ३२॥
अभिधूमितवेलायां दग्धप्रश्ने अभिधूमितफलम्॥ ३३॥
अभिधूमितवेलायामालिङ्गित प्रश्ने दग्धफलम्॥ ३४॥

अन्वय:—सरलम्॥ ३२-३४॥

ऋचा०—यदि अभिधूमित वेला (दिवा मध्ये) में अभिधूमित प्रश्न किया जावे तो आलिङ्गित फल की प्राप्ति होती है। यदि अभिधूमित वेला में दग्ध प्रश्न किया जावे तो अभिधूमित फल मिलता है। यदि अभिधूमित वेला में आलिङ्गित प्रश्न किया जावे तो दग्धफल मिलता है॥ ३२-३४॥

॥ दग्धवेलायां प्रश्नफलम्॥

दग्धवेलायां दग्धप्रश्ने आलिङ्गित **फलम्॥ ३५॥**
दग्धवेलायामालिङ्गित प्रश्ने अभिधूमितफलम्॥ ३६॥
दग्धवेलायामभिधूमित प्रश्ने दग्धफलम्॥ ३७॥

अन्वय:—सरलमस्ति॥ ३५-३७॥

ऋचा०—यदि दग्ध वेला (दिनमान का अन्तिम भाग) में दग्ध प्रश्न किया जावे तो

आलिङ्गित फल होता है। दग्धवेला में यदि आलिङ्गित प्रश्न किया जावे तो अभिधूमित फल प्राप्त होता है। (वेलानुसार प्रश्नफल का चक्र अगले पृष्ठ पर देखें)

इसी प्रकार यदि दग्ध वेला में अभिधूमित प्रश्न किया जावे तो उसका फल दग्ध होता है॥ ३५-३७॥

॥ वेलानुसार प्रश्नफल का चक्र॥

१ आलिङ्गित वेला			२ अभिधूमित वेला			३ दग्धवेला			वेला
आलिङ्गित प्रश्न	अभिधूमित प्रश्न	दग्ध प्रश्न	अभिधूमित प्रश्न	दग्ध प्रश्न	आलिङ्गित प्रश्न	दग्ध प्रश्न	आलिङ्गित प्रश्न	अभिधूमित प्रश्न	प्रश्नप्रकार
आलिङ्गित फल	अभिधूमित फल	दग्धफल	आलिङ्गित फल	अभिधूमित फल	दग्धफल	आलिङ्गित फल	अभिधूमित फल	दग्ध फल	प्रश्नफल
लाभ एवं सौख्य की प्राप्ति	अल्पलाभ एवं मित्रादि की प्राप्ति	शोक-दुःख पीड़ा	सुखप्राचुर्य	ईषत्सौख्यप्राप्ति	दुःखपीड़ा	प्रभूत सुखप्राप्ति	अल्पसुख-मित्रप्राप्ति	दुःख-दौर्मनस्य	फलादेशस्पष्टीकरण

॥ अथेष्टाङ्कोपरि प्रश्नकथनम्॥

इष्टमङ्कं द्विगुणितमेकेन सह संयुतम्।
त्रिभिश्चैव हरेद् भागं शेषञ्च फलमादिशेत्॥ ३८॥
चन्द्रशेषे जीवचिन्ता समे धातु प्रकीर्तितः।
शून्ये मूलं विजानीयाच्छारदावचनं यथा॥ ३९॥

अन्वयः—इष्टं अंकं द्विगुणितम्। एकेन सह संयुक्तम्। चैवत्रिभिर्भागं हरेत् शेषां च फलं आदि शेत्। चन्द्र शेषे जीवचिन्ता (भवेत्) समे (शेषे) धातु (चिन्ता) प्रकीर्तितः। यथा शारदावचनं (तथा) शून्ये (शेषे) मूलं विजानीयात्॥ ३८-३९॥

ऋचा०—प्रश्न समय का इष्टकाल निकालें उसे दूना करें (दो से गुणा करें) तथा उस

दुगुने में एक और जोड़ दें, फिर उसमें तीन का भाग दें तथा शेषानुसार फल कहना चाहिये। यदि एक शेष रहे तो जीवचिन्ता कहें। दो शेष रहने पर धातुचिन्ता कहनी चाहिये तथा शून्य या तीन शेष रहने पर मूलचिन्ता जाननी चाहिये॥ यह युक्ति सरस्वती की वाणी की तरह सत्य है॥ ३८-३९॥

मान लीजिये प्रश्न समय का इष्ट काल १७ घटी ३० पल है, इसको दो से गुणा करने पर ३५ पल हुए इसमें एक जोड़ा तो ३६ हुए, इस छत्तीस में तीन का भाग देने पर शून्य शेष बचा। अत: ''शून्ये मूलं विजानीयात्'' के अनुसार मूल चिन्ता करनी चाहिये। यहाँ यदि इष्टकाल १७ घटी ५९ पल होता तो इसको दुगुना करने पर ३५ घटी ५८ पल होते तथा एक जोड़ने पर ३६ घटी व ५८ पल होते। अत: केवल घटियों में भाग देने के कारण शेष शून्य ही रहेगा और उत्तर भी पूर्ववत् रहेगा।

परन्तु यदि इष्टकाल यदि १८ घटी ० पल होता तो दूना करने और एक मिलाने पर संख्या ३७ प्राप्त होती, जिसमें तीन का भाग देने पर शेष एक बचता तब ''चन्द्र शेषे जीव चिन्ता'' के अनुसार जीव चिन्ता कहनी होती।

॥ पूर्वादिदिग्भ्यो मुखप्रश्न कथनम्॥

पूर्वास्ये धातुचिन्ता स्याज्जीवं दक्षिणे तथा।
उत्तरास्ये वदेन्मूलं पश्चिमे मिश्रितं फलम्॥ ४०॥

अन्वयः—पूर्वे आस्ये धातुचिन्ता स्यात् तथा दक्षिणे जीवम्। उत्तरास्ये मूलं वदेत्। पश्चिमे मिश्रितं फलम् (भवेत्)॥ ४०॥

ऋचा०—यदि पृच्छक पूर्वाभिमुख होकर प्रश्न पूछे तब धातु चिन्ता तथा दक्षिणाभिमुख होने पर जीवचिन्ता बतानी चाहिये। इसी प्रकार उत्तराभिमुख पृच्छक को मूल चिन्ता होती है परन्तु पश्चिमाभिमुख पृच्छक को धातु-मूल तथा जीव की मिली जुली चिन्ता हुआ करती है। 'आस्य' का अर्थ मुख होता है॥ ४०॥

॥ पृच्छक के मुख की दिशा से चिन्ता-ज्ञान का चक्र॥

पूर्व	दक्षिण	उत्तर	पश्चिम	**दिशा**
धातुचिंता	जीवचिंता	मूलचिंता	मिश्रितचिंता	**चिन्ता**

॥ पृच्छकस्य शरीरस्पर्शनेन प्रश्नफलकथनम्॥

शिरःस्पर्शे तु जीवः स्यात्पादस्पर्शे तु मूलकम्।
धातुश्च मध्यमस्पर्शे शारदावचनं यथा॥ ४१॥
बाहुवक्त्र हनुस्पर्शे जीवचिन्ता शुभावहा।
हृदयोदरसंस्पर्शे धातुचिन्ता तु मध्यमा॥ ४२॥
गुदवृषण संस्पर्शे चाधमं मूलचिन्तनम्।
जानु जङ्घा पदस्पर्शे जीवचिन्तां विनिर्दिशेत्॥ ४३॥

अन्वयः—शिरःस्पर्शे जीवः, पादस्पर्शे तु मूलकम्, मध्यमस्पर्शे धातुः च स्यात्, यथा शारदावचनम्॥ ४१॥

बाहु वक्त्र शिरःस्पर्शे शुभावहा जीवचिन्ता, हृदयोदरसंस्पर्शे मध्यमा धातुचिन्ता (स्यात्)॥ ४२॥

गुदवृषणसंस्पर्शे मूल चिन्तनं अधमं च, जानु जङ्घा पदस्पर्शे जीवचिन्तां विनिर्दिशेत्॥ ४३॥

ऋचा०—यदि पृच्छक अपने सिर का स्पर्श करके प्रश्न पूछे तब जीव चिन्ता होती है। पाँव के स्पर्श से मूल चिन्ता, शरीर के मध्य भाग के स्पर्श से धातु चिन्ता कहनी चाहिये यह सरस्वती का वचन है। बाहु, मुख तथा ठोड़ी का स्पर्श कर पूछने पर जीवचिन्ता होती है और प्रश्न का फल शुभ परिणाम देता है। हृदय, उदर के संस्पर्श से मध्यम फलदायक धातुचिन्ता होती है। गुद, वृषण (अण्डकोश) इनका स्पर्श कर प्रश्न पूछने पर अधम प्रकार की तथा वैसा ही फल देने वाली मूलचिन्ता होती है। घुटना, पिंडली तथा चरण का स्पर्श करने पर जीवचिन्ता करने चाहिये॥ ४१-४३॥

॥ अंगस्पर्श से चिन्ता ज्ञापक चक्र॥

शिर	पैर	मध्यभाग	मुख ठोड़ी बाहु	हृदय पेट पेट	गुद वृषण	जानु, जङ्घा प्रपद	अङ्ग
जीवचिन्ता	मूलचिन्ता	धातुचिन्ता	जीवचिन्ता	धातुचिन्ता	मूलचिन्ता	जीवचिन्ता	**चिन्ता**
सामान्य	सामान्य	सामान्य	शुभफल	मध्यमफल	अशुभफल	सामान्य	**फल**

॥ अथाऽङ्कोपरि प्रश्नफल कथनम्॥

न दृश्यतेऽष्ट द्वितये च कार्यं, रसैः समुद्रैर्निज कार्यसिद्धिः।
सप्त त्रयोऽङ्काः कथयन्ति धैर्यम् नवैकपञ्च त्वरितं वदन्ते॥ ४४॥

अन्वयः—अष्टे द्वितये च कार्यं न दृश्यते, रसैः समुद्रैः निजकार्यसिद्धिः (भवेत्)। त्रयः सप्त अङ्काः धैर्यं कथयन्ति। एकं पञ्च नवं त्वरितं कार्यं (भविष्यतीति) वदन्ते॥ ४४॥

ऋचा०—इस श्लोक में अंकशास्त्र के अनुसार फल कहा गया है। प्रश्नकर्त्ता से एक से नौ अङ्कों तक कोई भी अङ्क स्वेच्छार्पूक बोलने के लिये कहना चाहिये यदि प्रश्नकर्त्ता के मुख से २ या ८ का अङ्क निकले तो कार्य सिद्ध नहीं होगा। यदि ४ या ६ में से कोई अङ्क हो तो कार्य सिद्ध होगा। यदि प्रश्नकर्त्ता ३ या ६ में से कोई अंक उच्चारित करे तो कार्य विलम्ब से होगा तथा पृच्छक को धैर्य रखना चाहिये। यदि प्रश्नकर्त्ता एक-पाँच या नौ इनमें से कोई अङ्क बोले तो कार्य अतिशीघ्र सम्पन्न होगा॥ ४४॥

अङ्कों पर प्रश्नोत्तर देने का दूसरा प्रकार—ज्योतिषी को चाहिये कि वह पार्श्व में प्रदर्शित नवकोष्ठकों वाला यन्त्र किसी कागज, कार्ड बोर्ड या चौकी पर बनाकर रख लें और पृच्छक से स्वेच्छानुसार किसी एक अंक पर अङ्गुली रखवाए। अङ्गुली स्पष्टत: किसी अङ्क पर रखनी चाहिये। दो अङ्कों के मध्य या रेखा पर अङ्गुली रखने से सही उत्तर प्राप्त नहीं होगा। नीचे के कोष्टक के अनुसार अङ्कों का फल पृच्छक को बतावें।

१	२	३
६	५	४
७	८	९

॥ अङ्क-फल चक्र ॥

एक	दो	तीन	चार	पाँच	छह	सात	आठ	नौ	अङ्क
शीघ्रसिद्धि	असिद्धि	विलंब	सिद्धि	क्षिप्रकार्य	सिद्धि	कार्यविलम्ब	असिद्धि	क्षिप्रसिद्धि	फल

॥ अथाक्षरोपरि प्रश्नविधि: ॥

पूर्वाह्णे बालकमुखात् पुष्पनाम तु ग्राहयेत्।
मध्याह्ने युवतिमुखात् फलनाम च ग्राहयेत्॥ ४५॥
अपराह्णे वृद्धमुखात् वृक्षनाम च ग्राहयेत्।
नद्या वा ग्राहयेन्नाम रात्रौ सर्वमुखाद् बुध:॥ ४६॥

अन्वय:—बुध: पूर्वाह्णे बालकमुखात् पुष्प नाम ग्राहयेत्। मध्याह्णे युवतिमुखात् च फलनाम ग्राहयेत्। वृद्धमुखाद् अपराह्णे वृक्ष नाम ग्राहयेत्। वा रात्रौ सर्वमुखात् वृक्षनाम ग्राहयेत्॥ ४५-४६॥

ऋचा०—यदि पूर्वाह्णकाल (सूर्योदय से लगभग १० बजे तक) प्रश्न किया जावे तो किसी बालक के मुख से किसी भी पुष्प का नाम कहलवाना चाहिये। यदि प्रश्नकाल मध्याह्न में (१० बजे से २ बजे तक का हो) तो कन्या के नाम से किसी फल का नाम कहलवाना चाहिये। अपराह्न समय (२ बजे से सूर्यास्त तक) वृद्ध के मुख से वृक्ष का नाम पूछना चाहिये। रात्रिकाल में प्रश्न होने पर किसी भी व्यक्ति (बालक, बालिका, स्त्री-पुरुष या वृद्ध-वृद्धा) के मुख से नदी का नाम प्रश्न का उत्तर देने के लिये ग्रहण कराना चाहिये॥ ४५-४६॥

॥ प्रकारान्तरेण ॥

प्रात:काले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने फलनाम तु।
अपराह्णे देवनाम सायं नद-नदीं वदेत्॥ ४७॥

अन्वय:—प्रात:काले पुष्पं मध्याह्न तु फलनाम वदेत्।
अपराह्णे देवनाम, सायं (च) नद नदीं वदेत्॥ ४७॥

ऋचा०—कुछ विद्वानों के मत से बालक, वृद्ध आदि का विचार न करके सीधे

प्रश्नकर्त्ता के मुख से ही अथवा किसी के मुख से प्रात:काल किसी फूल का नाम मध्याह्न में देवता का नाम तथा सायङ्काल नद या नदी का नाम कहलवा कर प्रश्न का उत्तर जानना चाहिये ॥ ४७ ॥

मेरे विचार से यही पद्धति ठीक हैं; क्योंकि इस श्लोक में रात्रिकाल का उल्लेख नहीं है जो समीचीन है। यदि रात्रि में श्लोक ४६ के अनुसार नदी का नाम लेते हैं, तो उसका विरोध ''पूर्व के श्लोक ६ के ''नैव प्रश्नोत्तरं निशि'' से होगा, जिसमें रात्रि में प्रश्न का उत्तर देने का स्पष्ट निषेध है।

अथवा

पृच्छकस्य वाक्याक्षराणि स्वरसंयुतानि ग्राह्याणि।
यदि च प्रश्नाक्षराण्यधिकान्यस्पष्टानि भवेयुस्तदायं विधिः ॥ ४८ ॥

अन्वयः—सरलमस्ति ॥ ४८ ॥

ऋचा०—जो वाक्य प्राप्त हो उसके अक्षरों को स्वर सहित ग्रहण करना चाहिये। यदि प्रश्न वाक्य के अक्षर अधिक तथा अस्पष्ट हों तो आगे लिखी विधि का प्रयोग करें ॥ ४८ ॥

॥ पृच्छकस्य वर्णानुसारं प्रश्नविधिः ॥

प्रश्नकर्त्ता भवेद्विप्रः पुष्प नाम तु तन्मुखात्।
राजन्यस्तु भवेत् प्रष्टा नद्या नाम तु ग्राहयेत्॥ ४९ ॥
वणिग्वर्णो यदा प्रष्टा नाम देवस्य उच्चरेत्।
शूद्रमुखतः फलं कश्चित् प्रश्नार्थे ग्राहयेद् बुधः ॥ ५० ॥

अन्वयः—यदा प्रश्नकर्त्ता विप्रः भवेत् तन्मुखात् तु पुष्पनाम, प्रष्टा राजन्यः भवेत् (तदा) नद्या नाम ग्राहयेत् ॥ ४९ ॥

यदा प्रष्टा वणिग्वर्णः देवस्य नाम उच्चरेत्। बुधः शूद्रमुखतः कश्चित् फलं प्रश्नार्थे ग्राहयेत् ॥ ५० ॥

ऋचा०—यदि प्रश्नकर्त्ता ब्राह्मण हो तो उसके मुख से पुष्प का नाम, क्षत्रिय हो तो नदी का नाम, वैश्य हो तो किसी देवता का नाम तथा शूद्र होने पर किसी फल का नाम उच्चारित करवा के और उन वस्तुओं के नामों में पड़ने वाले स्वर व्यञ्जनादि की अङ्क संख्या के अनुसार आगे लिखी विधि से पिण्डाङ्क बताकर उत्तर देना चाहिये ॥ ४९-५० ॥

सावधानी—दैवज्ञ को श्लोक अड़तालीस के अनुसार, प्रश्नकर्त्ता के या बालकादि के मुख से निकले हुए पुष्प, फल, नदी, वृक्ष अथवा देवादि के नामाक्षरों या वाक्याक्षरों को उनके उच्चारण के अनुसार शुद्ध रूप से कागज पर लिख लेना चाहिये। फिर उनके स्वर एवं व्यञ्जनों को अलग-अलग करके ग्रहण करना चाहिये। फिर उनके अङ्कों को आगे के श्लोकों के अनुसार देखकर जोड़कर पिण्ड बनाना चाहिये। जैसे यदि प्रश्नकर्त्ता के मुख से निकला गङ्गा तब इसे 'गङ्गा' इस प्रकार शुद्ध रूप में लिखें और इसके स्वर एवं व्यञ्जन पृथक् करें तो ग् + अ + ङ् + ग् + आ इस प्रकार पाँच अक्षर होंगे। इसी प्रकार ''अंगूर'' में अं + ग् + ऊ + र्

+ अ = ६ वर्ण होंगे। अंगूर को अङ्गूर नहीं लिखें क्योंकि केरलशास्त्र में आगे के श्लोकों में स्वतंत्र अक्षर मानकर उसे २५ अंक दिये हैं। परन्तु ओंकार को ओङ्कार लिखकर ही उसके वर्णों का विश्लेषण संस्कृत व्याकरण की पद्धति से करें। जैसे कि **चमेली** शब्द में च् + अ + म् + ए + ल् + ई = ६ अक्षर हुए।

॥ अथ पिण्डार्थं ध्रुवाङ्काः ॥

अर्क प्रकृतिरीशानो धृतिः पञ्चदशस्तथा।
जातिरष्टादश रदास्तत्वान्येकोनविंशतिः ॥ ५१ ॥
तत्वं विश्वे भवा एकविंशतिः खाग्निदिक्तिथिः।
मूर्च्छना रामनेत्राणि तदा षड्विंशतिः स्मृतः ॥ ५२ ॥
षड्विंश दशविश्वेऽक्षिनेत्र पञ्चगुणास्तथा।
पञ्चाब्धिमनुधृत्याष्टि रामेन्दु-शर-वह्नयः ॥ ५३ ॥
वस्वक्षि धृति षड्विंश तारकाः षड्गजास्तथा।
कला विश्वे त्रि चन्द्राश्च वाणरामास्तथा स्मृताः ॥ ५४ ॥
ऋत्वक्षि शर रामाश्च वाणरामास्तथा इनाः।
अकारादि हकारान्ता वर्णानान्तु ध्रुवा स्मृताः ॥ ५५ ॥

अन्वयः—वर्णानां तु ध्रुवाः अकारादि हकारान्ता स्मृताः। अर्कः[१२], प्रकृतिः[२१], ईशानः[११], धृतिः[१८], पञ्चदशः[१५] तथा जातिः[३२] अष्टादशः[१८], रदाः[३२], तत्वानि[२५], एकोनविंशतिः[२१], तत्वं[२५], विश्वे[१३], भवा[११], एकविंशतिः[२१], खाग्नि[३०], दिक्[१०], तिथिः[१५], मूर्च्छना[२१], रामनेत्राणि[२३], ततः षड्विंशतिः[२६] स्मृतः षड्विंश[२६], दश[१०], विश्वे[१३], अक्षिनेत्र[२२] तथा पञ्चगुणाः[३५], पञ्चाविध[४५], मनु[१४], धृति[१८], अष्टि[१७], रामेन्दु[१३], शरवह्नयः[३५], वस्वक्षि[२८], धृति[१८], षड्विंश[१८], तारकाः[२७], षड्गजाः[८६] तथा कला[१६], विश्वे[१३], त्रिचन्द्राः[१३] च वाणरामाः[३५], ऋत्वक्षि[२६], शररामाः[३५] च वाणरामाः[३५], तथा इनाः[१२] इति।

ऋचा०—इन पाँच श्लोकों में अकार से लेकर हकार पर्यन्त ४४ अक्षरों के ध्रुवांक बताए हैं, जो कि इस प्रकार हैं—अ=१२, आ=२१, इ=११, ई=१८, उ=१५, ऊ=२२, ए=१८, ऐ=३२, ओ=२५, औ=१९, अं=२५। ये स्वरों के ध्रुवाङ्क हैं। क्=१३, ख्=११, ग्=२१, घ्=३०, ङ्=१०, च्=१५, छ्=२१, ज्=२३, झ्=२६, ञ्=२६, ट्=१०, ठ्=१३, ड्=२२, ढ्=३५, ण्=४५, त्=१४, थ्=१८, द्=१७, ध्=१३, न्=३५, प्=२८, फ=१८, ब्=२६, भ्=२७, म्=८६, य्=१६, र्=१३, ल्=१३, व्=३५, श्=२६, ष्=३५, स्=३५, ह्=१२, ये व्यञ्जनों के ध्रुवाङ्क हैं॥ ५१ से ५५ श्लोक तक॥

स्पष्टीकरण—स्वरों एवं व्यञ्जनों की संख्या यहाँ पर तीन प्रकार से सूचित की गयी है—(१) कहीं-कहीं पर सीधे संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग करके जैसे दश, एकोनविंशतिः तथा एकविंशतिः इत्यादि। (२) कहीं-कहीं पर उतनी संख्या वाले पदार्थों से वह संख्या सूचित की गई है जैसे—रदाः=दाँत यानी दाँतों की संख्या ३२ मानी गयी है। यहाँ

यहीं संख्या अभिप्रेत है। इसी प्रकार तिथि अर्क तत्त्व आदि। (३) कहीं कई संयुक्त शब्दों (युग्म शब्दों) के द्वारा संख्या सूचित की है जैसे—"खाग्नि" शब्द में ख=० तथा अग्नि=३ इनको **अंकानां वामतो गतिः** के अनुसार इकाई के स्थान पर शून्य तथा दहाई के स्थान पर ३ का अंक रखने से तीस की संख्या होती है। इसी प्रकार "वस्वक्षि" शब्द में वसु=८ तथा अक्षि=२ होते हैं। इनको उलटा करने पर इकाई के स्थान पर वसु=८ तथा दहाई के स्थान पर अक्षि=२ रखने से अट्ठाईस की संख्या आती है। प्राचीन ग्रन्थों में श्लोकों में संख्याओं का उल्लेख इन्हीं तीन प्रकारों से किया जाता रहा है॥

॥ स्वर व्यञ्जन ध्रुवाङ्क चक्र ॥

स्वराः		व्यञ्जनानि					
अ	अर्क=१२	क्	विश्वे=१३	ठ्	विश्वे=१३	ब्	षड्विंशति=२६
आ	प्रकृति=२१	ख्	भवाः=११	ड्	अक्षिनेत्र=२२	भ्	तारकाः=२७
इ	ईशान=११	ग्	एकविंशतिः=२१	ढ्	पञ्चगुणाः=३५	म्	षड्गजाः=८६
ई	धृति=१८	घ्	खाग्नि=३०	ण्	पञ्चाब्धि=४५	य्	कला=१६
उ	पञ्चश=१५	ङ्	दिक्=१०	त्	मनु=१४	र्	विश्वे=१३
ऊ	जाति=२२	च्	तिथिः=१५	थ्	धृति=१८	ल्	त्रिचंद्रा=१३
ए	अष्टादश=१८	छ्	मूर्च्छना=२१	द्	अष्टि=१७	व्	वाणरामाः=३५
ऐ	रदाः=३२	ज्	रामनेत्राणि=२३	ध्	समेन्दु=१३	श्	ऋत्वक्षि=२६
ओ	तत्वानि=२५	झ्	षड्विंशति;=२६	न्	शरवह्निः=३५	ष्	शररामाः=३५
औ	एकोनविंशति=१९	ञ्	षड्विंशः=२६	प्	वस्वक्षि=२८	स्	बाणरामाः=३५
अं	तत्वं=२५	ट्	दश=१०	फ्	धृति=१८	ह्	इनाः=१२

॥ लाभालाभप्रश्नः ॥

लाभाऽलाभे द्विचत्वारि क्षेपो भागास्त्रिभिः स्मृतः।
एकशेषे तु लाभः स्याद् विशेषे स्वल्पलाभकः॥ ५६॥
शून्यशेषे तु हानिः स्याल्लाभालाभस्य लक्षणम्।

अन्वयः:—लाभालाभे द्वि चत्वारि क्षेपः त्रिभिर्भागैः स्मृतः। एकशेषे तु लाभः, द्विशेषेतु स्वल्पलाभः, शून्यशेषे तु हानिः स्यात् (इति) लाभालाभस्य लक्षणम्॥ ५६½॥

ऋचा०—जब कोई पृच्छक लाभ-हानि से सम्बन्धित प्रश्न पूछे तब उससे पूर्वोक्त विधि से पुष्प आदि का नाम लिवाकर उसके स्वरों-व्यंजनों से ध्रुवाङ्क ग्रहण कर उनका जोड़कर पिण्ड बना लें। उस पिण्डाङ्क में ४२ की संख्या का क्षेपक जोड़ दें, उस जोड़ (भाज्याङ्क) में तीन का भाग दें। यदि एक शेष बचे तो लाभ होगा, दो शेष बचने पर थोड़ा लाभ होगा, शून्य या तीन शेष बचने पर हानि होगी। ऐसा कहना चाहिये॥ ५७½॥

पिण्डाङ्क—स्वरों व्यञ्जनों से प्राप्त ध्रुवाङ्कों का कुल जोड़ पिण्डाङ्क कहलाता है। उसी को पिण्ड भी कहते हैं।

ध्रुवाङ्क—ध्रुवाङ्कों को पीछे चक्र में भलीभाँति समझा दिया गया है।

क्षेपाङ्क—इसे क्षेपक तथा क्षेप भी कहते हैं। प्रत्येक प्रकार के प्रश्न के उत्तर में यह क्षेपाङ्क अलग-अलग रहता है। उसे उसी प्रकार के प्रश्न के प्रसंग से ग्रहण करना चाहिये॥ क्षेपकाङ्क भी उसी का नाम है।

भाज्याङ्क—जिस प्रकार ध्रुवांकों को जोड़कर पिण्डाङ्क बनता है, उसी प्रकार पिण्डाङ्क+क्षेपकाङ्क को जोड़ने से भाज्याङ्क बनता है। इस भाज्याङ्क में भाजकाङ्क का भाग देने से जो शेष बचता है उसके अनुसार प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता है। जिसमें भाग दिया जाता है उसे भाज्याङ्क कहते हैं।

भाजकाङ्क—इसे भाजक भी कहते हैं; इससे भाग दिया जाता है। प्रत्येक प्रकार के प्रश्न में यह अलग-अलग हुआ करता है।

॥ जय पराजय प्रश्न ॥

जयाजये क्षेपकस्तु चतुस्त्रिंशत् प्रकीर्तितः ॥ ५७ ॥
रामैभार्गं समाहृत्य एकशेषे जयं वदेत्।
द्वाभ्यां सन्धिं वदेत्प्राज्ञः शून्यशेषे पराजयः ॥ ५८ ॥

अन्वयः—प्राज्ञः जयाजये तु चतुस्त्रिंशत् क्षेपकः प्रकीर्तितः। रामैर्भागं समाहृत्य एकशेषे जयं वदेत् द्वाभ्यां सन्धिं च, शून्ये शेषे पराजयः (वदेत्) ॥ ५७-५८ ॥

ऋचा०—जय-पराजय के प्रश्न में पिण्डाङ्क में ३४ क्षेपक (चौंतीस) जोड़कर तीन का भाग देते हैं। एकशेष रहने पर जीत होती है, दो शेष रहने पर सन्धि कहना चाहिये तथा शून्य शेष रहना पराजय का सङ्केत होता है ॥ ५७-५८ ॥

॥ सुख-दुःख प्रश्न ॥

सुखे दुःखे क्षेपकस्तु ह्यष्टरामाः स्मृता बुधैः।
अत्र भागो लोचनाभ्यामेकशेषे सुखं वदेत्॥ ५९ ॥
शून्ये दुःखं विजानीयात् सुखदुःखस्य लक्षणम्।

अन्वयः—बुधैः सुखे दुःखे हि अष्टरामा क्षेपकः तु स्मृतः। अत्र लोचनाभ्यां भागः एकशेषे सुखं वदेत्। शून्ये दुःखं विजानीयात् सुख दुःखस्य लक्षणं (एवं ज्ञेयम्) ॥ ५९-५९½ ॥

ऋचा०—सुख-दुःख के प्रश्न में क्षेपक अड़तीस जोड़कर (पिण्डाङ्क+ क्षेपक) भाज्याङ्क में दो (भाजक) से भाग दें। यदि एक शेष रहे तो सुख तथा शून्य शेष रहने पर दुःख जानना चाहिये ॥ ६०½ ॥

॥ गमन प्रश्नः ॥

गमने राम रामाश्च क्षेपकाः परिकीर्तिताः ॥ ६० ॥
त्रिभिर्भागं समाहृत्य ह्येक शेषे गमः स्मृतः।
द्वाभ्यां स्थितिर्विनिर्देश्या शून्ये निष्फलता भवेत्॥ ६१ ॥

अन्वयः—गमने क्षेपकाः राम रामाश्च परिकीर्तिताः। त्रिभिर्भागं समाहृत्य एकशेषे हि गमः स्मृतः। द्वाभ्यां स्थिति विनिर्देश्या। शून्ये निष्फलता भवेत्॥ ६०-६१॥

ऋचा०—गमन एवं यात्रा के प्रश्न में प्रश्न पिण्डाङ्क में ३३ (तैतीस) का क्षेपक जोड़कर उस भाज्याङ्क में तीन से भाग देते हैं, यदि एक शेष रहे तो यात्रा होती है। दो शेष रहने पर यात्रा नहीं होती परन्तु शून्य शेष रहने पर यात्रा निष्फल होती है अथवा हानि होती है॥ ६०-६१॥

॥ अथ जीवन-मरणप्रश्नः॥

जीवने मरणे क्षेपाश्चत्वारिंशत् प्रकीर्तिताः।
अथ भागस्त्रिभिर्ग्राह्यः शेषाङ्केन फलं स्मृतम्॥ ६२॥
एकेन जीवनं वाच्यं कष्ट साध्यं द्विशेषके।
शून्ये तु मरणं प्रोक्तं ज्ञातव्यं सर्वदा बुधैः॥ ६३॥

अन्वयः—जीवने मरणे चत्वारिंशत् (४०) क्षेपाः प्रकीर्तिताः। अथ त्रिभिर्भागो ग्राह्यः। शेषाङ्केन फलं स्मृतम्। एकेन जीवनं, च द्विशेषके कष्टसाध्यं वाच्यम्। शून्ये तु मरणं प्रोक्तम्। (एवं) बुधैः सर्वदा ज्ञातव्यम्॥ ६२-६३॥

ऋचा०—जीवन-मरण सम्बन्धी प्रश्न में प्रश्नाक्षरादि के पिण्डाङ्क में ४० (चालीस) का अंक क्षेपक करना चाहिये। दोनों के योग से जो भाज्याङ्क बने उसमें तीन का भाग देना चाहिये। एकशेष रहने पर जीवित रहेगा ऐसा कहना चाहिये। दो शेष रहने पर कष्टसाध्य स्थिति बतानी चाहिये। शून्य शेष में मृत्यु होगी॥ ६२-६३॥

इसका प्रयोग जब किसी रोगी या दुर्घटनापीड़ित व्यक्ति के सम्बन्ध में पूछा जावे तब अथवा क़िसी के जीवित या मृत होने में सन्देह हो या अफवाह हो तब करना चाहिये। इस प्रकार इस प्रश्न में वर्तमान स्थिति तथा भविष्य दोनों का उत्तर समाविष्ट होता है।

॥ तीर्थयात्राप्रश्नः॥

यात्राप्रश्ने क्षेपकस्तु नवराममितः स्मृतः।
रामैर्भागं समाहृत्य यात्रा स्यादेकशेषके॥ ६४॥
द्विशेषे मध्यमा ज्ञेया न यात्रा शून्यशेषके।
तीर्थयात्राफलं वाच्यमेवं प्रश्नतो बुधैः॥ ६५॥

अन्वयः—यात्राप्रश्ने नवराम (३९) मितः क्षेपकः स्मृतः। भागं समाहृत्य रामैः एकशेपके यात्रा स्याद्। द्विशेषे मध्यमा ज्ञेया, शून्यशेषके यात्रा न। एवं बुधैः प्रश्नतो तीर्थयात्राफलं वाच्यम्॥ ६४-६५॥

ऋचा०—तीर्थयात्रा के प्रश्नाङ्कों के ध्रुवाङ्कों का पिण्ड बनाकर उस पिण्डाङ्क में उनतालीस (३९) का क्षेपक मिलाकर उस योग से जो भाज्याङ्क बनेगा उसमें तीन का भाग देना चाहिये। यदि एकशेप रहे तो उत्तम यात्रा होगी और अधिक प्रमाण में होगी। यदि दो शेष रहे तो मध्यम यात्रा होगी और स्वल्प दूरी की यात्रा होगी; परन्तु शून्य शेष रहने पर यात्रा नहीं होगी। ऐसा बताना चाहिये॥ ६४-६५॥

॥ वृष्टिप्रश्नः ॥

भविष्यतीति वर्षा वा अनावृष्टिर्भविष्यति।
द्वात्रिंशद्वर्षाप्रश्ने क्षेपकः कथितो बुधै॥ ६६॥
वह्निभिर्विभजेद् धीमानेकशेषे प्रवर्षणम्।
द्वाभ्यां तु मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिः खशेषके॥ ६७॥

अन्वयः—वर्षा भविष्यति वा अनावृष्टिर्भविष्यति (इति) वर्षाप्रश्ने बुधैः द्वात्रिंत् क्षेपकः कथितः। धीमान् वह्निभिर्विभजेद्, एकशेषे प्रवर्षणम्, द्वाभ्यां मध्यमा वृष्टिः, खशेषके अनावृष्टिः॥ ६६-६७॥

ऋचा०—जब कोई वर्षाकाल में या अन्य समय पर ऐसा प्रश्न पूछे कि वर्षा होगी अथवा नहीं होगी तब इस प्रश्न में विद्वानों के द्वारा पिण्डाङ्क में जोड़ने के लिये बत्तीस (३२) क्षेपक बताया है। पिण्डाङ्क तथा क्षेपकाङ्क के योग से निर्मित भाग्याङ्क में तीन का भाग देने पर यदि एक शेष बचे तो खूब वर्षा होगी, दो शेष रहने पर वर्षा मध्यम प्रमाण में होगी तथा शून्य शेष रहने पर वर्षा नहीं होगी अर्थात् अनावृष्टि रहेगी॥ ६६-६७॥

भारतवर्ष की जलवायु कुछ इस प्रकार की है कि यहाँ पर वर्ष भर में कभी भी वर्षा सम्बन्धी प्रश्न पूछा जा सकता है। अस्तु चार महीने के वर्षा के मौसम के अतिरिक्त शीतकालीन वर्षा (मावठा) तथा अन्य अवसरों पर भी इस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।

॥ अथ गर्भप्रश्नः ॥

गर्भप्रश्ने क्षेपकस्तु षड्विंशत्कथितो बुधैः।
त्रिभिर्भागं समाहृत्य गर्भो भू शेषके स्मृतः॥ ६८॥
सन्देहस्तु द्विशेषे स्याद् गर्भनाशमथापि वा।
शून्यशेषे न गर्भं स्याद् गर्भप्रश्ने विनिश्चयः॥ ६९॥

अन्वयः—बुधैः गर्भप्रश्ने षड्विंशत् (२६) क्षेपकस्तु कथितः। त्रिभिर्भागं समाहृत्य भूशेषके गर्भः स्मृतः। द्विशेषे गर्भनाशं अथापि वा सन्देहो, शून्यशेषे गर्भं न स्यादिति गर्भप्रश्ने विनिश्चयः॥ ६८-६९॥

ऋचा०—गर्भसम्बन्धी प्रश्न का उत्तर पाने के लिये प्रश्नांक के ध्रुवाङ्कों से निर्मित पिण्डाङ्क में छब्बीस (२६) क्षेपक जोड़ना चाहिये। उस जोड़ में तीन का भाग देना चाहिये। यदि एक शेष बचे तब उस स्त्री को गर्भ है। यदि दो शेष बचे तो गर्भस्थिति में सन्देह है वह गर्भ क्षीण अथवा नष्ट हो सकता है। शून्य शेष रहने पर गर्भ नहीं है, ऐसा बताना चाहिये॥ ६८-६९॥

इस प्रकार यहाँ पर श्लोक ५६-६९ तक पिण्डाङ्कों के साथ क्षेपक जोड़कर कुल आठ प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने की विधि बतायी गयी है। कठिनाई से बचने के लिये दैवज्ञ को इन आठों प्रश्नों का एक चक्र इन श्लोकों के आधार पर बनाकर रख लेना चाहिये। जिसे देखकर प्रश्नानुसार तुरन्त ही गणना की जा सकती है तथा उस प्रश्न का उत्तर भी पृच्छक के सामने दिया जा सकता है। पृच्छक के सामने पुस्तक देखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

प्राचीनकाल के ज्योतिषी तो श्लोकों को कण्ठाग्र कर लेते थे, जिससे उन्हें उत्तर देने में पुस्तक के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। आजकल इतना परिश्रम कोई नहीं करता। हिन्दी में एक दोहा है—

"मित्र बसै परदेश में, बसै खजाने दाम।
विद्या जो पुस्तक बसै, समय न आवे काम॥

आगे इस प्रकार का सुगम कोष्टक प्रस्तुत है—

॥ प्रश्न पिण्डाङ्कों के अनुसार प्रश्न-गणना का चक्र ॥

प्रश्न	**पिण्डाङ्क में योज्य क्षेपक**	**भाजक**	**एक शेष का प्रश्नफल**	**दो शेष का प्रश्नफल**	**शून्य शेष का प्रश्नफल**
(१) लाभालाभप्रश्न	बयालीस (४२)	तीन (३)	लाभ	स्वल्प लाभ	हानि
(२) जयपराजयप्रश्न	चौतीस (३४)	तीन (३)	जय	सन्धि	पराजय
(३) सुख-दुःखप्रश्न	अड़तीस (३८)	दो (२)	सुख	×	दुःख
(४) गमन (साधारण -यात्रा) प्रश्न	तैंतीस (३३)	तीन (३)	गमन होगा	गमन नहीं	हानि-कष्ट
(५) जीवन-मरण प्रश्न	चालीस (४०)	तीन (३)	जीवन	कष्टसाध्य	मरण
(६) तीर्थयात्रा प्रश्न	उनचालीस (३९)	तीन (३)	तीर्थयात्रा होगी (उत्तमफल)	मध्यम यात्रा होगी	तीर्थाटन होगा
(७) वर्षाप्रश्न	बत्तीस (३२)	तीन (३)	उत्तम वर्षा	मध्यम वर्षा	अवर्षण
(८) 'गर्भ है या नहीं' प्रश्न	छब्बीस (२६)	तीन (३)	गर्भ है	सन्देह है	गर्भ नहीं है

उदाहरण—(१) मान लीजिये किसी ने प्रश्न किया कि मेरी तीर्थयात्रा होगी या नहीं

उसने ''दाडिम'' (फल) उच्चारित किया; अस्तु दाडिम के द्+आ+ड+इ, म्+अ इन छह अक्षरों में क्रमशः १७+२१+२२+११+८६+१२=१६९ (एक सौ उनहत्तर) पिण्डाङ्क हुआ। इस पिण्डाङ्क में तीर्थयात्रा प्रश्न का क्षेपक ३९ जोड़ा तो भाज्याङ्क २०८ (दो सौ आठ) हुआ इसमें तीन का भाग देने पर २०८÷३=लब्धि ६९ शेष एक बचा; अस्तु, उत्तम प्रकार से तीर्थयात्रा होगी।

(२) यदि यही प्रश्न सुख-दुःख का होता तो प्रश्न पिण्डाङ्क १६९ में ३८ का क्षेपक जोड़ने पर २०७ भाज्याङ्क में दो का भाग देने पर एक शेष बचता तो सुखकारक होता।

॥ अथ मूक प्रश्न विचारः ॥

पिण्डाङ्कं त्रिभिर्विभज्यैकेन जीवः, द्वाभ्यां धातुः, शून्येन मूलम् ॥ ७० ॥

अन्वयः—सरलमस्ति ॥ ७० ॥

ऋचा०—पूर्व निर्मित पिण्डाङ्क के आधार पर मूक प्रश्न का भी उत्तर दिया जाता है। मूक प्रश्न के विचार में क्षेपक नहीं जोड़ना पड़ता, अपितु पृच्छक के प्रश्नाक्षरों के आधार पर निर्मित पिण्ड को ही भाज्याङ्क माना जाता है, उसी में तीन का भाग देते हैं। यदि एक शेष बचे तो जीवसम्बन्धी प्रश्न, दो शेष बचें तो धातुसम्बन्धी प्रश्न तथा शून्य शेष बचने पर मूलसम्बन्धी प्रश्न जानना चाहिये ॥ ७० ॥

उदाहरण—(१) मान लीजिये मूक प्रश्न पूछे जाने पर दैवज्ञ (ज्योतिषी) ने प्रश्नकर्त्ता से किसी फल का नाम लेने को कहा उसने ''सेव'' कहा, अतः ध्रुवाङ्क चक्र से स्=३५+ए=१८ + व्=३५ + अ=१२ ये चार अङ्क ग्रहण किये, चारों का योग=१०० (एक सौ) हुआ इसमें तीन का भाग दिया तो १०० -३=लब्धि ३३ तथा एक शेष बचा जिसका उत्तर है कि ''प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न जीव से सम्बन्धित है।''

(२) यदि प्रश्नकर्त्ता के मुख से 'गुलाब' निकला होता तब गुलाब के ग्+उ+ल्+आ +ब् + अ इन छह वर्णों से क्रमशः २१ + १५ + १३ + २१ + २६ + १२=१०८ कुल एक सौ आठ का पिण्डाङ्क हुआ। इसमें तीन का भाग देने पर शून्य शेष बचा, अतः ''शून्येन मूलम्'' इस वाक्य के अनुसार 'मूल' सम्बन्धी प्रश्न बताया जाता।

(३) इसी प्रकार मान लो यदि दैवज्ञ ने पृच्छक से मूक प्रश्न विचार हेतु नदी का नाम कहलवाया और पृच्छक ने यमुना कहा तब उसके वर्ण क्रमशः य्+अ+म्+उ+न्+आ हुए इनसे क्रमशः प्राप्त अंक १६+१२+८६+१५+३५+२१ हैं। इनका जोड़ १८५ है। यही पिण्ड है। इसमें तीन का भाग दिये जाने पर दो शेष रहे तब मूक प्रशन का उत्तर होगा कि धातु-सम्बन्धी प्रश्न है।

॥ जीवभेदाः ॥

जीवदृष्टे जीवाश्चतुर्विधाः द्विपद-चतुष्पद-बहुपदाऽपदादिभेदात्। पिण्डस्य चतुर्भागावशेषात् एकेन द्विपदः। द्वाभ्यांश्चतुष्पदः। त्रिभिर्बहुपदः। चतुभिर-पदः ॥ ७१ ॥ तत्र द्विपदे त्रिविधाः भेदाः। आलिङ्गिते पुरुषः। अभिधूमिते नारी। दग्धकेन षण्ढः ॥ ७२ ॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ ७१-७२॥

ऋचा०—जब पूर्वोक्त विधि से जीव सम्बन्धी प्रश्न का निश्चय हो जाये तब फिर उसी पूर्व निर्मित पिण्डाङ्क में पुनः चार का भाग दे। यदि एक शेष रहे तो द्विपद सम्बन्धी चिन्ता है, दो शेष रहें तो चतुष्पद सम्बन्धी प्रश्न जानना। यदि तीन शेष रहें तो बहुपद जीव से सम्बन्धित प्रश्न है। यदि चार शेष रहें तो अपद (पदविहीन) जीव से सम्बन्धित प्रश्न समझना। यहाँ से चार प्रकार के जीवों में द्विपदों के अन्तर्गत मनुष्य, वानर, लंगूर, चिम्पांजी, गुरिल्ला आदि आते हैं। चतुष्पदों में चौपाए हैं। बहुपदों में कनखजूरा आदि तथा अपदों में सर्प जैसे जन्तु होते हैं॥ ७१॥

द्विपद जीव का निर्णय होने पर उसके तीन भेद होते हैं। पुरुष, स्त्री तथा नपुंसक। अतः यदि पृच्छक ने आलिङ्गित प्रश्न किया हो तो पुरुष-द्विपद, यदि अभिधूमित प्रश्न हो तो स्त्री-द्विपद तथा दग्ध प्रश्न होने पर षण्ढ (नपुंसक) द्विपद जानना चाहिये॥ ७२॥

उदाहरण के लिये—मूक प्रश्न में प्रश्नकर्त्ता के मुख से प्रश्नाक्षर के रूप में "नर्मदा" (नदी का नाम) उच्चारित हुआ तो उसके अक्षरों में न्=३५+अ=१२ +र्=१३+म्=८६+अ+१२ +द्=१७ +आ=२१=कुल १९६ पिण्डाङ्क प्राप्त हुआ इस एक सौ छियानवें में तीन का भाग देने पर एक शेष बचा, अतः जीव सम्बन्धी प्रश्न निर्णीत हुआ पुनः इसी पिण्डाङ्क १९६ में चार का भाग दिया तो १९६ ÷ ४=लब्धि ३६ शेष शून्य या चार बचे, अतः अपद जीव (सर्पादि) से सम्बन्धित प्रश्न है—यह निश्चय हुआ।

॥ धातुभेदाः ॥

धातवो द्विधाः। धाम्याऽधाम्याश्च। तत्र द्वाभ्यां भागः। एकेन धाम्याः, द्वाभ्यामधाम्या॥ ७३॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ ७३॥

ऋचा०—धातुएं दो प्रकार की होती हैं, धाम्य तथा अधाम्य। (जिनको अग्नि में पिघलाया जा सकता है, तथा पिघलाने पर भी जब वे अपने गुण धर्म को नहीं त्यागती तब उन्हें धाम्य कहते हैं)। पिण्डाङ्क में दो का भाग देने कर यदि एक शेष बचता हो तो धाम्य धातु कहना चाहिये तथा दो शेष बचने पर अधाम्य धातु॥ ७३॥

॥ धाम्यधातुभेदाः ॥

धाम्या अष्टविधाः सुवर्ण, रजत, ताम्र, कांस्य, पित्तल, रङ्ग, सीस लोहाख्याः। अत्राष्टभिर्भागः एकेन सुवर्णम्। द्वाभ्यां रजतम्। त्रिभिस्ताम्रम्। चतुर्भिः कांस्यम्। पञ्चभिः पित्तलम्। षड्भिः रङ्गः। सप्तभिः सीसकम्। अष्टभिर्लौहम्। तत्रापि भेदद्वयम्—घटितमघटितञ्च। तत्र द्वाभ्यां भागः। एकेन घटितम्। द्वाभ्यामघटितम्॥ ७४॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ ७४॥

ऋचा०—धाम्य धातुएं आठ प्रकार की होती हैं—(१) सोना, (२) चांदी, (३) तांबा, (४) कांसा, (५) पीतल, (६) रांगा (वङ्ग), (७) सीसा, तथा (८) लोहा। पिण्डाङ्क

में आठ का भाग देने से यदि एक शेष बचे तो स्वर्ण, दो शेष बचे तो रौप्य, तीन शेष बचे तो ताम्र, चार शेष बचे तो कांसा, पाँच शेष बचे पीतल, छह शेष बचे तो वङ्ग धातु, सात शेष बचने पर सीसा तथा आठ शेष बचने पर लोहा जानना चाहिये। इन धाम्य धातुओं के भी दो भेद होते हैं—घटित तथा अघटित। (जिस धातु से कोई आभूषण, पात्र, यंत्र, अदि गढ़ लिया गया है, उसे घटित तथा जिससे कोई अन्य वस्तु न बनी हो उसे अघटित कहते हैं।) अब पुनः पिण्डाङ्क में दो का भाग दें यदि एक शेष बचे तो घटित धातु है ऐसा जानना चाहिये। यदि दो शेष बचे तो अघटित धातु समझना चाहिये।

॥ मूलभेदाः ॥

मूलञ्चतुर्विधम्। वृक्ष-गुल्म-वल्ली-लता भेदात्। तत्र चतुर्भिर्विभज्यैकेन वृक्षः। द्वाभ्याङ्गुल्मः। त्रिभिर्वल्ली कूष्माण्ड शृङ्गाटकादयः। चतुभिर्लता तृण धान्य दूर्वा गोधूमा इति। तत्रापि द्विविधाः भक्ष्यम भक्ष्यञ्च। तत्रपिण्डाङ्के द्वाभ्याम्भागेनैकेन भक्ष्यम्। द्वाभ्यामभक्ष्यम्। तत्राऽपि द्विविधं सुगन्धिदुर्गन्धि भेदात्। प्रश्नपिण्डाङ्के द्वाभ्याम्भक्ते, एकेन सुगन्धिः, द्वाभ्यान्दुर्गधिः ॥ ७५ ॥

अन्वयः—सरलम् ॥ ७५ ॥

ऋचा०—मूल चार प्रकार के होते हैं—वृक्ष, गुल्म (झाड़ी) वल्ली तथा लता। प्रश्न पिण्डाङ्क को चार से विभाजित करें। यदि एक शेष बचे तो वृक्ष, दो शेष बचे तो गुल्म, तीन शेष बचे तो बल्ली कुम्हेड़ा, सिंहाड़ा आदि। तथा चार शेष बचने पर लता अर्थात् तिनका, घास, गेहूँ ज्वार बाजरा आदि जानना चाहिये। इस मूल के पुनः भक्ष्य तथा अभक्ष्य इस प्रकार के दो भेद हैं। प्रश्न पिण्डाङ्क में दो का भाग देने पर यदि एक शेष रहे तो भक्ष्य (खाने योग्य) तथा दो शेष बचे तो अभक्ष्य (न खाने योग्य) जानना चाहिये। पुनः इसके दो भेद और हैं सुगन्धि तथा दुर्गन्धि। एक शेष बचने पर वह मूल सुगन्धित तथा सुस्वादु है ऐसा जानना चाहिये। दो शेष रहने पर उसे दुर्गन्धित तथा अरुचिकर समझें।

यहाँ कुछ विद्वानों का मत है कि खस, चन्दन आदि पदार्थ सुगन्धित होने पर भी अभक्ष्य होते हैं। परन्तु मेरे मत से ये अभक्ष्य नहीं हैं। कोई वस्तु मुख्य आहार का अंग न होने से अभक्ष्य नहीं मानी जा सकती। धर्मशास्त्रीय दृष्टि से भी भक्ष्याभक्ष्य की परिभाषा में अन्तर आ जाता है। इसी प्रकार चिकित्साविज्ञान की दृष्टि से भक्ष्याभक्ष्य में अन्तर रहेगा। अतः ज्योतिषी को देश, काल, परिस्थिति, वंश, रीति, रिवाज आदि का विचार करके इस विषय का निर्णय करना चाहिये। तथा अत्यन्त सावधानीपूर्वक ही प्रश्न का उत्तर देना चाहिये ॥ ७५ ॥

॥ अथाङ्गस्पर्शेन मूलविचारः ॥

शिरःस्पर्शेन वृक्षः। उदरस्पर्शेन गुल्मः। पृष्ठेन वल्ली। बाहुस्पर्शेन लता। पादेन कन्दः ॥ ७६ ॥

अन्वयः—सरलम् ॥ ७६ ॥

ऋचा०—यदि प्रश्नकर्त्ता अपना सिर स्पर्श करते हुए प्रश्न पूछे तो वृक्ष कहना चाहिये। उदर को छूकर प्रश्न करे तो गुल्म कहना चाहिये। पीठ का स्पर्श करते हुए यदि पृच्छक का

प्रश्न हो तो वल्ली जाति की मूल होती है। बाहु स्पर्श कर पूछे गए प्रश्न में लता कहना चाहिये। इसी प्रकार यदि प्रश्नकर्त्ता पैर का स्पर्श कर प्रश्न पूछता तो तब (गाजर, मूली, आलू, शकरकंद, जिमीकन्द, अरई, बण्डा, मानकन्द आदि) कन्द बतलाना चाहिये॥ ७६॥

॥ नष्ट वस्तु ज्ञानम्॥

दैवज्ञेन खं निरीक्षिते दूते पृच्छति सति नष्टवस्तु खे कथनीयम्। अधो निरीक्ष-माणेऽधो वक्तव्यम्। कोणे प्रविश्य पृच्छति कोणे वक्तव्यम्। यस्यां दिशि प्रविश्य यत्राऽवलोकयेत् तत्रैव वक्तव्यम्। यद्दिने पृच्छति तदह्नि नष्टप्राप्तिर्वाच्या॥ ७७॥

अन्वयः—सरलम्॥ ७७॥

ऋचा०—जब दैवज्ञ की दृष्टि में प्रश्नकर्त्ता या दूत आकाश की ओर देखता हुआ प्रश्न पूछ रहा हो तब नष्टवस्तु घर की छत, ऊपरी मंजिल, वृक्ष के ऊपर या ऊंचे टीले आदि पर होती है ऐसा कहना चाहिये। यदि प्रश्न पूछते समय प्रश्नकर्त्ता की दृष्टि नीचे भूमि की ओर हो तब उस वस्तु की सम्भावना जमीन के नीचे, तहखाने, कुआं या बावड़ी आदि में होती है अथवा वह भूमि में गड़ी रहती है। यदि पृच्छक की दृष्टि कोने में हो या कोने (ईशान, आग्नेय, नैऋत्य या वायव्य) की ओर से प्रविष्ट होकर प्रश्न पूछता हो तो उस वस्तु को कोने में बताना चाहिये। प्रश्नकर्त्ता जिस दिशा को देखता हुआ प्रश्न करे या जिस दिशा से प्रवेश करे वस्तु के उसी दिशा में होने की सम्भावना होती है। इसी प्रकार प्रश्नकर्त्ता ने जिस दिन (वार) को प्रश्न पूछा हो उसी वार को नष्ट वस्तु की प्राप्ति होगी॥ ७७॥

मेरी सम्मति में यहाँ नष्ट वस्तुकी प्राप्ति या तो उसी दिन होगी अथवा प्राप्ति के दिन वही वार होगा। यह अवधि दिनों, मासों या वर्षों में भी हो सकती है।

॥ प्रकारान्तरेण नष्ट वस्तु ज्ञानम्॥

प्रश्न ध्रुवाङ्के द्वादशभिर्भक्ते शेषाङ्काः मेषादि राशयो ज्ञातव्याः। मेषे ग्रामे, वृषे क्षेत्रे, मिथुने चतुष्पथे, कर्के रसातले, सिंहेऽन्तरिक्षे, कन्यायां शून्यागारे, तुलायां पथि, वृश्चिके गृहे, धनुषि ग्रामे, मकरेऽन्तरिक्षे, कुम्भे तडागे, मीने नदीतीरे, गङ्गायां वा सति॥ ७८॥

अन्वयः—सरलम्॥ ७८॥

ऋचा०—पूर्वोक्त प्रकार से निर्मित प्रश्न पिण्डाङ्क में बारह का भाग देने पर जो अङ्क शेष रहे, उसी के अनुसार राशि जानना चाहिये तथा उस राशि के अनुसार फलकथन करना चाहिये। यथा—एक शेष रहने पर मेष राशि होगी उसमें नष्टवस्तु उसी ग्राम या नगर में या अन्य ग्रामादि में होती है। दो शेष रहने पर, नष्ट वस्तु खेत, मैदान या फार्म हाउस पर संभव होती है, उस समय वृषराशि जानना चाहिये। यदि तीन शेष रहे तो मिथुन राशि है और नष्ट वस्तु किसी चौराहे के समीप है, ऐसा बताना चाहिये। चार शेष में कर्कराशि होती है। कर्क राशि में नष्ट वस्तु रसातल (भूमिगत) में होती है। जबकि पाँच शेष रहने पर सिंह राशि में नष्ट वस्तु अन्तरिक्ष (छत आदि ऊपरी ऊँचे स्थान) पर होती है। छह शेष रहने पर कन्या राशि में

नष्ट वस्तु शून्यागार (सुनसान निर्जन स्थान पर, घर या खण्डहर) में होती है। सात शेष रहने पर तुला राशि में नष्ट वस्तु मार्ग में या वणिक्पथ (बाजार) आदि में होती है। आठ शेष रहने पर वृश्चिक में नष्ट वस्तु का स्थान घर का ही कोई भाग हुआ करता है। नौ शेष रहने पर धनुराशि में नष्ट वस्तु का स्थान ग्राम या नगर ही होता है। दस शेष रहने पर मकर राशि में वह वस्तु अन्तरिक्ष में हुआ करती है। अर्थात् ऊपरी मंजिल, छत, रोशनदान, वृक्ष, टीले आदि पर होती है। ग्यारह शेष रहने पर कुंभ राशि में नष्ट वस्तु किसी तालाब में या उसके समीप होती है। बारह शेष रहने पर वस्तु किसी नदी, नहर, झरना, जलप्रवाह आदि बहते हुए जलस्रोत में या उसके समीप होती है॥ ७८॥

॥ नष्ट वस्तु स्थान का चक्र॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	प्रश्नांक-१२ शेषांक
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
ग्राम	खेत	चौराहा	रसातल	अन्तरिक्ष	शून्यागार	मार्ग	गृह	ग्राम	अन्तरिक्ष	तड़ाग	नदी	नष्टवस्तु का स्थान
नगर, बस्ती	मैदान	मार्ग संगम	धरती के नीचे	छत, वृक्ष, ऊपरी मंजिल	निर्जन स्थान	बाजार	आवास	बस्ती, नगर	ऊँचे स्थान पर	तालाब	बहता हुआ जल	नष्ट वस्तु का स्थान

॥ मनोचिन्ताज्ञानम्॥

प्रश्नाक्षर ध्रुवाङ्के द्वादशभिर्भक्ते शेषाङ्के राशयो ज्ञातव्याः। मेषे द्विपदम्। वृषे चतुष्पदम्। मिथुने युग्मम्। कर्के व्यापारः। सिंहे राजचिन्ता। कन्यायां विवाहचिन्ता। तुलायां धातुः। वृश्चिके रोगः। धनुषि लाभः। मकरे कलहः। कुंभे गर्भः। मीने स्थान-चिन्ता॥ ७९॥

अन्वयः—सरलम्॥ ७९॥

ऋचा०—प्रश्नाक्षर पिण्डाङ्क में बारह का भाग देने पर यदि एक शेष बचे तो मेष राशि में द्विपद जीवों की चिन्ता होती है। मनुष्य, वानर आदि द्विपद जीव हैं। दो शेष रहने पर वृषभ राशि में चतुष्पदों (चौपाए) की चिन्ता होती है। तीन शेष रहने पर मिथुन राशि में किसी के दाम्पत्य जीवन की चिन्ता होती है। चार शेष रहने पर कर्क राशि होने से व्यापार व्यवसाय एवं वाणिज्य की चिन्ता होती है। पाँच शेष रहने पर सिंह राशि होने से राज-चिन्ता होती है। (राज चिन्ता का तात्पर्य राजनीति, पद, अधिकार, मुकदमा आदि की चिन्ता है।) छह शेष रहने पर कन्या राशि में विवाह-प्रेम सम्बन्ध या दाम्पत्य की चिन्ता होती है। सात शेष रहने

पर तुलाराशि में धातुसम्बन्धी (आभूषण, पात्र आदि) चिन्ता होती है। आठ शेष रहने पर वृश्चिक राशि में रोगचिन्ता होती है। नौ शेष रहने पर धनुराशि में लाभ की चिन्ता होती है। दस शेष रहने पर मकर राशि में कलह (लड़ाई-झगड़ा-वाद-विवाद आदि) की चिन्ता होती है। ग्यारह शेष रहने पर कुम्भ राशि में गर्भ तथा सन्तति की चिन्ता होती है। बारह शेष रहने पर मीन राशि में स्थान की चिन्ता (भवन, प्लाट, फैक्ट्री आदि से सम्बन्धित चिन्ता) होती है॥७९॥

॥ मनोचिन्ता ज्ञापक चक्र ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	०	शेषाङ्क
मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
द्विपद चिन्ता (मनुष्य, वानर आदि)	चतुष्पद चिन्ता (गाय, भैंस, घोड़ा, हाथी)	युग्म चिन्ता (पति-पत्नी/प्रेमी-प्रेमिका)	व्यापार चिन्ता (वाणिज्य, दुकान, नौकरी)	राज चिन्ता (प्रमोशन, नौकरी, राजनीति, अधिकार आदि)	विवाह चिन्ता (सगाई, सम्बन्ध)	धातु चिन्ता (आभूषण आदि या रुपया-पैसा की)	रोग चिन्ता (दुर्घटना, मानसिक रोग)	लाभ चिन्ता (रुका हुआ धन आदि)	कलह चिन्ता (फौजदारी, लड़ाई आदि)	गर्भ चिन्ता (पुत्र-पुत्री, संतति चिन्ता)	स्थान चिन्ता (भूमि, भवन, प्लाट आदि)	चिन्ता

॥ कार्यविधि ज्ञानम् ॥

आलिङ्गिते दिनं प्रोक्तं मासः स्यादभिधूमिते।
दग्धे च वत्सरं प्रोक्तं मूलदेवेन भाषितम्॥८०॥

अन्वयः—मूल देवेन भाषितं यत् आलिङ्गिते दिनं प्रोक्तं, अभिधूमिते मासः, च दग्धे वत्सरं प्रोक्तम्॥८०॥

व्या०— मूलदेव के अनुसार यदि प्रश्न आलिङ्गित हो तो कार्यसिद्धि की अवधि कुछ दिनों की होती है। अभिधूमित प्रश्न में कार्यसिद्धि की अवधि कुछ ही मासों या एक मास में होती है। दग्ध प्रश्न में कार्य एक वर्ष या अधिक वर्ष में सिद्ध होता है॥८०॥

॥ प्रकारान्तरेण कार्यावधिज्ञानम् ॥

तिथिवारर्क्षयोगस्तु त्रिघ्नः षड्भिर्युतस्तथा।
नवभिस्तु हरेद् भागं शेषाङ्के फलमादिशेत्॥८१॥
एकेन पक्षो द्वितयेन मासाः, ऋतुस्त्रिभिः स्यादयनश्चतुर्भिः।
क्रमाद्दिनं रविरथापि यामः घटी पलाद्यानि निवेदितानि॥८२॥

अन्वयः—तिथिः वारः ऋक्षः योगः तु त्रिघ्नः तथा षड्भिर्युतः। नवभिस्तु भागं हरेत्, शेषाङ्के फलं आदिशेत्। एकेन पक्षो, द्वितयेनः मासाः, त्रिभिः अयनं, चतुर्भिः अयनं स्यात्। क्रमात् दिनं, राशि, याम, घटी, पलाद्यानि निवेदितानि॥ ८१-८२॥

ऋचा०—जिस समय प्रश्न किया जावे उस समय पञ्चाङ्ग में जो तिथि, वार, नक्षत्र तथा योग हो उनकी संख्या को जोड़कर उस योगफल में तीन का गुणा करें। गुणनफल में छह और जोड़ दें फिर इस योगफल में नौ का भाग दें। यदि एक शेष बचे तो एक पक्ष (पन्द्रह दिन) के भीतर होगी। यदि दो शेष बचें तो कार्यसिद्धि एक मास के भीतर होगी। यदि तीन शेष बचें तो कार्यसिद्धि एक ऋतु (दो मास) के भीतर होगी। यदि चार शेष बचें तो एक अयन (छह मास) के भीतर कार्य सिद्ध होगा। पाँच शेष बचने पर एक दिन के भीतर, छह शेष बचने पर रात्रि के भीतर, सात शेष बचने पर प्रहर के भीतर, आठ शेष रहने पर एक घटी (चौबीस मिनट) के भीतर तथा नौ शेष बचने पर कुछ ही क्षणों में कार्यसिद्धि होगी ऐसा बताना चाहिये॥ ८१-८२॥

स्पष्टीकरण—(१) तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिये। पूर्णिमा के पश्चात् की तिथि संख्या ज्ञान के लिये उसमें १५ जोड़ना चाहिये जैसे कि कृष्ण प्रतिपदा को प्रश्न है तो १+१५=१६ तिथि ग्रहण करना चाहिये। अमावस्या की संख्या तीस होती है।

(२) वार की गणना रविवार से करें। यदि बुधवार है तो उसकी संख्या चार होगी।

(३) नक्षत्रों की गणना अश्विनी से की जाती है।

(४) योग की गणना विष्कंभ से की जाती है।

उदाहरण—मान लीजिए किसी ने संवत् २०५८ विक्रमी फाल्गुन शुक्ल षष्ठी बुधवार को मध्याह्न काल में प्रश्न पूछा कि मेरा कार्य कब तक बनेगा? उस दिन पंचाङ्ग देखने पर षष्ठी तिथि है। अतः उसका अङ्क ६ हुआ। बुधवार का अङ्क ४ हुआ। रोहिणी नक्षत्र है अतः उसका अंक चार हुआ। प्रीतियोग है उसका अंक २ हुआ। इस प्रकार तिथि ६+वार ४+ नक्षत्र ४+योग २ इन सबका योग १६ हुआ इसको तिगुना किया। १६×३=४८, इसमें छह जोड़ा अतः ४८+६=५४। इस अंक में नौ का भाग दिया। ५४÷९ तो लब्धि ६ को त्याग दिया शेष शून्य या नौ बचे अतः तत्काल कार्यसिद्ध होगा, ऐसा कहना चाहिये।

॥ कार्यावधि ज्ञानचक्र ॥

एक	दो	तीन	चार	पाँच	छह	सात	आठ	नौ/शून्य	सूत्र=तिथि+वार+नक्षत्र+ योग×३+६÷९=शेषाङ्क
पक्ष	मास	ऋतु	अयन	दिन	रात्रि	प्रहर	घटी	पल	कार्यसिद्धि की अवधि

॥ सुभिक्ष-दुर्भिक्ष प्रश्नः ॥

प्रश्न-पिण्डाङ्के त्रिभिर्भागः। एकेन समर्घम्, द्वाभ्यां समता, शून्येन महर्घम्॥ ८३॥

अन्वयः—सरलम्॥ ८३॥

ऋचा०—प्रश्नाक्षरों के आधार पर निर्मित पिण्डाङ्क में तीन का भाग देने पर यदि एक

शेष बचे तो वस्तुओं के भावों में मन्दी (समर्घ) रहेगी। दो शेष बचें तो भाव स्थिर रहेंगी। परन्तु शून्य (तीन) शेष बचने पर महर्घता (महँगाई) होगी—ऐसा बताना चाहिये॥ ८३॥

॥ जय पराजयप्रश्नः॥

आलिङ्गितेन जयः। अभिधूमितेन सन्धिः। दग्धेन भङ्गः॥ ८४॥

अन्वयः—सरलम्॥ ८४॥

ऋचा०—यदि अलिङ्गित स्वरूप का प्रश्न हो तो प्रश्नकर्त्ता के पक्ष की जीत होती है। यदि अभिधूमित प्रश्न हो तो दोनो पक्षों में सन्धि हो जाती है। यदि दग्ध प्रश्न हो तो प्रश्नकर्त्ता की युद्ध में पराजय होती है॥ ८४॥

॥ पिण्डाङ्केन जय-पराजयज्ञानम्॥

पिण्डाङ्के त्रिभिर्भक्ते एकेन जयः। द्वाभ्यां सन्धिः। शून्येन भङ्गः॥ ८५॥

अन्वयः—सरलम्।

ऋचा०—प्रश्नाक्षरों से निर्मित पिण्डाङ्क में तीन का भाग देने पर एक शेष बचने पर जीत, दो शेष बचने पर सन्धि तथा तीन शेष बचने पर या शून्य शेष रहने पर युद्ध या विवाद में पराजय होती है॥ ८५॥

॥ प्रकारान्तरेण जय-पराजयनिर्णयः॥

दक्षिणे पृच्छति जयः। वामे पराजयः।
सन्मुखे सन्धिः, पृष्ठे मरणम् इति भणितम् मूलदेवेन॥ ८६॥

अन्वयः—सरलम्॥ ८६॥

ऋचा०—यदि प्रश्नकर्त्ता दैवज्ञ के दाहिने होकर प्रश्न करता है तो जीत होती है। यदि बाईं ओर बैठकर प्रश्न करे तो हार होती है। यदि सामने से प्रश्न करे तो संधि होती है तथा पीठ पीछे की ओर का प्रश्न मृत्युकारक होता है॥ ८६॥

॥ सत्यासत्यप्रश्नः॥

पिण्डाङ्के द्वाभ्यां भागः। एकेन सत्यम्। द्वाभ्यामसत्यम्॥ ८७॥

अन्वयः—सरलम्॥ ८७॥

ऋचा०—प्रश्नाक्षर पिण्डाङ्क में दो का भाग देना चाहिये। यदि एक शेष बचे तो जो बात सुनी है वह सत्य है। परन्तु दो या शून्य शेष बचने पर उसे असत्य मानना चाहिये॥ ८७॥

जब कोई अफवाह फैले अथवा किसी घटना की पुष्टि न हो तब यह प्रश्न किया जाता है।

॥ पुंस्त्रीप्रश्नः॥

प्रश्नवर्णाङ्क मात्राङ्कस्तिथिः वारर्क्षसंयुतः।
सप्तभक्तावशेषेण समे स्त्री विषमे पुमान्॥ ८८॥

अन्वयः—प्रश्नवर्णाङ्कः मात्राङ्कः तिथिः वारः ऋक्षः संयुतः, सप्तभक्तावशेषेण समे स्त्री विषमे पुमान्॥ ८८॥

ऋचा०—प्रश्नाक्षरों एवं मात्राओं के वर्णाङ्क (पिण्डाङ्क) में तिथिवार तथा नक्षत्रों की संख्या भी जोड़ दें फिर सात का भाग देवें। यदि शेषाङ्क समसंख्यक (२-४-६) हो तो प्रश्न स्त्रीसम्बन्धित जानना चाहिये। परन्तु यदि शेष विषमसंख्यक (१-३-५-०) हो तो पुरुषसम्बन्धी प्रश्न जानना चाहिये॥ ८८॥

उदाहरण—मान लीजिये किसी ने संवत् २०५८ विक्रमी फाल्गुन कृष्ण २ शुक्रवार को हस्त नक्षत्र में प्रात:काल प्रश्न किया और बालक या प्रश्नकर्त्ता ने ''कमल'' (पुष्प) उच्चारण किया। तब पूर्वोक्त श्लोक ५१ से ५५ के अनुसार प्रश्नाक्षरों एवं मात्राओं के अंक इस प्रकार हुए—क्=१३+अ=१२+म्=८६+अ=१२+ल्=१३+अ=१२=कुलयोग=१४८ हुआ। इसमें तिथि १७+वार ६+नक्षत्र १३ का योग ३६ मिलाया तो सर्वयोग १८४ हुआ। इसमें सात का भाग देने पर शेष २ (सम संख्यक) बचने से यह स्त्री से सम्बन्धित प्रश्न है। ऐसा निर्णय हुआ।

॥ गर्भप्रश्न: ॥

वारस्त्रिगुणित: कार्यस्तिथिभिश्चैव संयुत:।
द्वाभ्यां भक्ते च यच्छेषं विषमेऽस्ति समे नहि॥ ८९॥

अन्वय:—वार: त्रिगुणित: तिथिभि: च एव संयुत: कार्य:, च द्वाभ्यां भक्ते यच्छेषं विषमे (गर्भ:) अस्ति समे नहि॥ ८९॥

ऋचा०—गर्भ से सम्बन्धित प्रश्न में प्रश्न समय में जो वार हो उसकी संख्या को रविवार से गिनकर तिगुना कर दें। उस गुणनफल में चान्द्रतिथि की संख्या भी मिला दें फिर इस योगफल में दो का भाग दें। यदि एक शेष रहे तो गर्भ है, यदि शून्य शेष रहे तो गर्भ नहीं है ऐसा कहना चाहिये॥ ८९॥

उदाहरणार्थ—मान लीजिये यदि प्रश्न के दिन गुरुवार तथा पंचमी तिथि है तो वार की संख्या ५ है इसे तिगुना किया तो पन्द्रह हुए इसमें तिथि संख्या ५ जोड़ने पर कुल २० (बीस) हुए दो का भाग देने पर शून्य या दो (सम) शेष रहे अत: गर्भ नहीं है ऐसा बताना होगा॥

॥ पुत्र-कन्याजन्मज्ञानम् ॥

तिथिवारर्क्षयोगानां योगो नामाक्षरैर्युत:।
सप्तभक्तावशेषेण समे कन्याऽसमे सुत:॥ ९०॥

अन्वय:—तिथि: वार: योगानां योगो नामाक्षरै: युत: सप्तभक्तावशेषेण समे कन्या असमे सुत:॥ ९०॥

ऋचा०—प्रश्नकालिक तिथि, प्रश्नकालीन वार, प्रश्नकालीन नक्षत्र तथा प्रश्न समय के विष्कंभादि योगों की संख्या को जोड़ दें इस योगफल में प्रश्नकर्त्ता के नाम के अक्षरों की संख्या का पिण्ड भी जोड़ दें। इस सर्वयोग में सात का भाग देने पर यदि शेष सम संख्या का हो तो कन्या का जन्म जानना चाहिये। विषमसंख्यक शेष बचने पर पुत्र का जन्म बतलाना चाहिये॥ ९०॥

प्रश्नकर्त्ता के नामाक्षरों तथा उनकी मात्राओं अर्थात् स्वरों एवं व्यञ्जनों को ध्रुवाङ्कों को पृथक् पृथक् योग कर लेना चाहिये॥

॥ पिण्डाङ्केन पुत्र-कन्याज्ञानम् ॥

प्रश्नपिण्डाङ्के त्रिभिर्भागः। एकेन पुत्रः।
द्वाभ्यां कन्या। शून्ये नास्ति गर्भः॥ ९१ ॥

अन्वयः—सरलम्॥ ९१ ॥

ऋचा०—प्रश्न पिण्डाङ्क में तीन से भाग देना चाहिये। यदि एक शेष बचे तो पुत्र का जन्म होगा। दो शेष बचे तो कन्या का जन्म होगा। यदि शून्य शेष बचे तो गर्भ नहीं है—ऐसा कहना चाहिये॥ ९१ ॥

॥ अङ्गस्पर्शेन पुत्र-कन्याजन्मज्ञानम् ॥

ओष्ठ-कण्ठ-ग्रीवा-ललाट-कर्ण-शीर्ष-नखान् स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा पुत्रजन्म।
नाभि-हस्त-पाद-स्तनात् स्पृष्ट्वा पृच्छति तदा कन्याजन्म इति॥ ९२ ॥

अन्वयः—सरलम्॥ ९२ ॥

ऋचा०—यदि प्रश्नकर्त्ता अपने ओठ, कण्ठ, गर्दन, माथा, कान, शिर या नखों में से किसी एक का स्पर्श करके प्रश्न पूछता है तो पुत्र का जन्म होगा, ऐसा बताना चाहिये। यदि पृच्छक नाभि, हाथ, पैर, स्तनों में से किसी अङ्ग को छूकर प्रश्न पूछे तब कन्या का जन्म बताना चाहिये॥ ९२ ॥

॥ गर्भस्य पितृत्वप्रश्नः ॥

अयं गर्भो ममान्यस्य वेति प्रश्नो भवेत्तदा।
योगः पञ्चगुणः कार्यो वारेण विनियोजयेत्॥ ९३ ॥
रामभक्ते तु यच्छेषं एकस्तु स्वतनूद्भवः।
द्वाभ्यामन्याद् विजानीयात् त्तिशेषे च स्ववीर्यजः॥ ९४ ॥

अन्वयः—अयंगर्भो मम वा अन्यस्य इति प्रश्नो भवेत् तदा योगः पञ्चगुणो कार्यो वारेण विनियोजयेत्। रामभक्ते तु यत् शेषं एकः तु स्व तनूद्भवः, द्वाभ्यां अन्यात्, त्रिशेषे च स्ववीर्यजः विजानीयात्॥ ९३-९४ ॥

ऋचा०—जब कोई यह प्रश्न करे कि यह गर्भ मेरा है, अथवा पराया है, तब प्रश्न-दिन पंचाङ्ग में यह देखिये कि विष्कंभादि योगों में से कौन-सा योग है, उसकी संख्या को पाँच से गुणा कर दें फिर उस गुणनफल में वार की संख्या जोड़ दें। इस योगफल में तीन का भाग देवें। यदि एक शेष बचे तो गर्भ प्रश्नकर्त्ता का है। यदि दो शेष बचे तो पराया है। शून्य शेष बचने पर भी गर्भ स्वकीय ही होता है॥ ९३-९४ ॥

उदाहरणार्थ—यदि प्रश्न के समय पंचाङ्ग में वृद्धि योग तथा शनिवार है तो विष्कंभ से गिनने पर वृद्धि ११वां है। अतः ११×५=५५ इसमें वार की संख्या ७ जोड़ने पर ५५+७=६२ हुए इसमें ३ का भाग दिया ६२÷३ शेष २ बचे तो गर्भ पराया है यह उत्तर होगा।

॥ विवाह-प्रश्नः ॥

प्रश्नपिण्डाङ्के अष्टभिर्भागः। एकेनाऽनायासेन विवाहः। द्वाभ्यां कष्टेन

विवाहः। त्रिभिर्नास्ति। चतुर्भिः कन्यामरणम्। पञ्चभिः पितृव्यादिमरणम् वा देशान्तरे गमनम्। षड्भिः नृपाद् भीतिः। सप्तभिर्द्वयोर्मरणम् वा श्वसुरमरणम्। अष्टभिः संततिमरणम्। इति विवाहचिन्ता॥ ९५॥

अन्वयः—सरलम्॥ ९५॥

ऋचा०—विवाह सम्बन्धी प्रश्न होने पर प्रश्नाक्षरों के पिण्डाङ्क में आठ का भाग देना चाहिये। यदि एक शेष बचे तो विवाह अनायास सुगमतापूर्वक सम्पन्न होगा। यदि दो शेष बचे तो विवाह कष्ट से होगा। तीन शेष बचने पर विवाह नहीं होगा। चार शेष रहने पर विवाह के पूर्व या पश्चात् शीघ्र ही कन्यामरण की सम्भावना रहेगी। पाँच शेष रहने पर कन्या के चाचा, मामा, फूफा आदि की मृत्यु या देशान्तरगमन (तबादला) होने से विवाह में बाधा होगी अथवा विवाह सुख बाधित होगा। छह शेष रहने पर राजभय उपस्थित होगा अर्थात् शारदा एक्ट, दहेज निषेध अधिनियम आदि का भय उत्पन्न होगा। सात शेष रहने पर या तो पति-पत्नी दोनों की मृत्यु होगी अथवा ससुर की मृत्यु होगी। यदि आठ शेष रहें तो विवाह तो होगा परन्तु सन्तान जीवित नहीं रहेगी। इस प्रकार से विवाह प्रश्न का विचार करना चाहिये॥ ९५॥

॥ जीवन-मरण प्रश्नः॥

अक्षरपिण्डं द्विगुणितं। मात्रापिण्डं चतुर्गुणितम्। तत्र समुदाये त्रिभिर्भागः। एकेन जीवनम्। द्वाभ्यां पीडा। शून्येन मरणम्॥ ९६॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ ९६॥

ऋचा०—यदि कोई प्रश्न करे कि अमुक व्यक्ति जीवित रहेगा या मर जावेगा? तब प्रश्नाक्षरों के स्वर एवं व्यञ्जनों के ध्रुवाङ्कों को अलग-अलग जोड़ें। व्यञ्जनों के ध्रुवाङ्कों के योग को 'अक्षरपिण्ड'' या ''वर्णपिण्ड'' कहेंगे। स्वरों के ध्रुवाङ्कों के योग को ''मात्रापिण्ड'' कहा जावेगा। अक्षरपिण्ड को दो से गुणा करें तथा मात्रापिण्ड को चार से गुणा करें। इन दोनों गुणनफलों का योग 'समुदाय' कहा जावेगा। इस समुदाय में तीन का भाग देना। यदि एक शेष बचे तो रोगी आदि जीवित है, जीवित रहेगा। यदि दो शेष बचे तो पीड़ा भोगनी पड़ेगी। यदि शून्य शेष रहे तो मृत्यु समझनी चाहिये॥ ९६॥

॥ जीवन-मरण-अवधि प्रश्नः॥

आलिङ्गिते दिनम्। अभिधूमिते मासः। दग्धे वत्सरः॥ ९७॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ ९७॥

ऋचा०—यदि आलिङ्गित प्रश्न हो तो प्रश्न का फल दिनों में प्राप्त होगा। यदि अभिधूमित प्रश्न हो तो फल मासों में प्राप्त होगा। परन्तु दग्धप्रश्न होने पर प्रश्न का फल वर्षभर के उपरान्त ही प्राप्त होगा। (श्लोक ९६ के अनुसार जीवन, पीड़ा या मरण का निश्चय हो जाने के उपरान्त फिर श्लोक ९७ के अनुसार उत्तर देना चाहिये)॥ ९७॥

॥ वस्तु लाभ प्रश्नः॥

स्ववर्णास्त्रिगुणाः कार्या वस्तुवर्णैक्यरूपयुक्।
द्विहृतं शेषजं ब्रूयात् समे लाभोऽन्यथा नहि॥ ९८॥

अन्वयः—स्ववर्णाः त्रिगुणाः कार्या वस्तुवर्णाः ऐक्यरूपयुक्। द्विहृतं शेषजं समे लाभो अन्यथा नहि ब्रूयात्॥ ९८॥

ऋचा०—जब प्रश्न यह हो कि "मुझे अमुक वस्तु का लाभ (प्राप्ति) होगी अथवा नहीं? अथवा अमुक वस्तु से लाभ होगा या नहीं?" तब प्रश्नकर्त्ता के नाम के अक्षरों की जितनी संख्या हो उसको तिगुना करें उस गुणनफल में वस्तु के नामाक्षरों की संख्या मिलावें तथा एक और जोड़े। फिर इस सर्वयोग या समुदाय में दो का भाग दें। यदि एक शेष बचे तो लाभ नहीं होगा, दो या शून्य (सम संख्या) शेष बचने पर लाभ होगा॥ ९८॥

विशेष—अनेक विद्वान् प्रश्नकर्त्ता के नामाक्षरों के ध्रुवाङ्कों से बने पिण्ड को तिगुना कर उसमें अभीष्ट वस्तु के नामाक्षरों का पिण्डाङ्क मिलकर फिर उसमें एक जोड़कर दो का भाग देकर प्रश्न का उत्तर देते हैं।

॥ अमुकाद् द्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति नवेति प्रश्नः॥

प्रभोर्नाम गुणैर्हन्याद् स्ववर्णैर्मिश्रितं हरेत्।
रामैः प्राप्तिविर्जानीयादेकशेषे द्विके नहि॥ ९९॥
त्रिशेषे चिरकालेन द्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति।
अमुकाद् द्रव्यप्राप्तिर्वा नेति प्रश्ने त्वयं विधिः॥ १००॥

अन्वयः—प्रभोर्नाम गुणैः हन्यात्। स्ववर्णैः मिश्रित। रामैः हरेत्। एकशेषे प्राप्तिः विजानीयात् द्विके नहि। त्रिशेषे चिरकालेन द्रव्यप्राप्तिः भविष्यति। अमुकात् द्रव्यप्राप्तिः भविष्यति न वा इति प्रश्ने तु अयं विधिः॥ ९९-१००॥

ऋचा०—जिस व्यक्ति से द्रव्य या अन्य लाभ की प्राप्ति होना है, उस प्रभु या दाता के नामाक्षरों की संख्या को तीन से गुणा करें तथा स्ववर्ण (प्रश्नकर्त्ता के स्वयं के नामाक्षरों की संख्या) संख्या उस गुणनफल में मिश्रित करें (जोड़ दें)। इस योगफल में तीन का भाग दें। यदि एक शेष बचे तो उस व्यक्ति से लाभ होगा। दो शेष में लाभ नहीं होगा। तीन शेष रहने पर बहुत दिनों बाद वस्तु प्राप्ति होगी। "अमुक व्यक्ति से मुझे द्रव्य प्राप्ति होगी या नहीं?" इस प्रश्न का निर्णय इस विधि से करना चाहिये॥ ९९-१००॥

विशेष—जब कोई व्यक्ति अपने रुके हुए वेतन, भत्ता, पारिश्रमिक, मानदेय, बिल आदि के भुगतान के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे तब उसे इसी विधि से उत्तर देना चाहिये।

॥ द्रव्यलाभप्रमाणज्ञानम्॥

तन्नाम वर्णसंख्यायाः हता नन्दैर्युता शरैः।
सप्तभिस्तु हरेद् भागं शेषाङ्के दशकाः स्मृताः॥ १०१॥
लब्धं पञ्चगुणं कार्यं दशकेभ्यो विशोधयेत्।
तच्च प्राप्तिर्विजानीयात् कुलमानानुसारतः॥ १०२॥

अन्वयः—तत् नाम वर्णसंख्यायाः नन्दैः हताः। शरैः युता (च) सप्तभिः तु भागं

हरेत् शेषाङ्के दशकाः स्मृताः। लब्धं पञ्चगुणं कार्यं (तत्) दशकेभ्यो विशोधयेत्। कुल-मानानुसारतः तत् च प्राप्तिः विजानीयात्॥ १०१-१०२॥

ऋचा०—जब प्रश्नकर्त्ता यह पूछे कि—''मुझे अमुक से कितनी मात्रा (प्रमाण) में द्रव्यप्राप्ति होगी?'' तब उसका उत्तर देने के लिये पृच्छक के नामाक्षरों की संख्या को नौ से गुणा करे। उस गुणनफल में पाँच जोड़ दें फिर इस योगफल में सात का भाग दे। जो अंक शेष रहें उनको ''दशक'' जानना चाहिये। सात का भाग देते समय जो लब्धि प्राप्त हो उसको पाँच से गुणाकर पूर्व प्राप्त दशकों में से घटावें। जो शेष बचे उतना ही द्रव्य कुल मान के अनुसार प्राप्त होगा॥ १०१-१०२॥

स्पष्टीकरण—(१) मूल श्लोक में **तन्नाम** शब्द का प्रयोग है जिसका अर्थ है—प्रश्नकर्त्ता का नाम।

(२) **कुलमान**—इस शब्द का अर्थ सामाजिक तथा राजकीय ओहदा होता है। आज के सन्दर्भ में वह व्यक्ति यदि शासकीय सेवा में है तो उसके राजपत्रित प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी तथा चतुर्थ श्रेणी आदि विभाग हैं, इन्हीं को कुलमान समझना चाहिये। इसी प्रकार किसी निजी क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रतिष्ठान, समवाय, उद्योग आदि का कर्मचारी भी अपनी अलग-अलग श्रेणी रखता है उसे भी ''कुलमान'' समझना चाहिये।

उदाहरण के लिये प्रश्नकर्त्ता का नाम देवेश कुमार है तो द्+ए+व्+ए+श+अ+क्+उ+म्+आ+र+अ=कुल १२ अक्षर (स्वर एवं व्यञ्जन) हैं। इनको नौ से गुणा किया तो १२×९=१०८ इसमें पाँच जोड़े तो १०८+५=११३ इसमें सात का भाग दिया अतः ११३÷७=लब्ध १५—शेष शून्य या सात हुए। अस्तु ये सात दशक हुए। लब्धि १५ को पाँच का गुणा करने पर १५×५=७५ हुए। अब पूछने वाला मान लो तृतीय श्रेणी कर्मचारी है, तो सात दशक (या शतक या सहस्त्रक) के सात हजार हुए इन सात हजार में ७५ घटा दिये तो उसे ६९२५ रुपये या ६२५ रुपये प्राप्त होंगे ऐसा ऊहापोह बुद्धि से करके उत्तर देना चाहिये।

जितने दशक प्राप्त हों उतने सैकड़ा, हजार, दस हजार (अयुत) या लाख की कल्पना पृच्छक की हैसियत के अनुसार करनी चाहिये। इस प्रकार ऐसे प्रश्न के उत्तर में दैवज्ञ के अन्तःकरण की पवित्रता तथा विवेक की आवश्यकता होती है, जिसके अनुसार आनुपातिक रूप से द्रव्य के प्रमाण का ठीक-ठीक आकलन किया जा सकता है। इस पद्धति को देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार लागू करना चाहिये। पृच्छक को यह प्राप्ति रुपया, डालर, पौण्ड, यूरो, दीनार, लिरा, येन, यी, रुबल आदि किस देश की मुद्रा में प्राप्त होगी। यह भी भलीभाँति विचार कर लेना जरूरी है।

॥ दूतागमनः प्रश्नः॥

दूतश्चलितो न वा इति प्रश्नो यदा भवेत्।
तिथिस्त्रिगुणिता कार्या पञ्चयुग् वार मिश्रिता॥ १०३॥
सप्तभिर्गुणिता द्वाभ्यां भक्ते शेषे फलं वदेत्।
एकेन चलितो दूतः शून्यशेषे तु निश्चलः॥ १०४॥

अन्वयः—यदा दूतश्चलितो न वा इति प्रश्नो भवेत् (तदा) तिथिः त्रिगुणिता कार्या, पञ्चयुक् वारमिश्रिता, (पुनः) सप्तभिर्गुणिता, द्वाभ्यां भक्ते शेषफलं वदेत्। एकेन दूतः चलितो, शून्यशेषे तु निश्चलः ॥ १०३-१०४ ॥

ऋचा०—जब कोई यह प्रश्न पूछे कि दूत अथवा अमुक मनुष्य अपने स्थान से चला है अथवा नहीं तब प्रश्नकालिक तिथि को तिगुना करें, उसमें पाँच और जोड़ दें। इस योगफल में वार की संख्या भी जोड़ दें फिर इस सर्वयोग को सात से गुना करें। फिर इस संख्या में दो का भाग दे। यदि एक शेष बचे तो दूत चल पड़ा है। यदि शून्य या दो शेष रहें तो नहीं चला है, ऐसा बताना चाहिये ॥ १०३-१०४ ॥

उदाहरणार्थ—किसी ने जब दूतागमन का प्रश्न पूछा उस समय पंचाङ्ग में चान्द्र तिथि अष्टमी तथा वार मंगल वार था अस्तु तिथि ८×३=२४ इसमें पाँच जोड़ें तो २४+५=२९ हुए। इसमें वार का अंक ३ जोड़ा तो २९+३=३२ हुए। इसे सात से गुणा किया अतः ३२×७=२२४ (दो सौ चौबीस) हुए। इसमें दो का भाग दिया तो २२४÷२=लब्धि ११२ शेष ० (शून्य) बचा अतः ''शून्यशेषे तु निश्चलः'' इस वाक्य के अनुसार दूत अभी नहीं चला है यह बताना होगा।

॥ पान्थ प्रश्नः ॥

तिथि घस्त्रौ तथा लग्नं नामाक्षरसमन्वितम्।
नक्षत्रं करणं चैव सप्तभिर्भागमाहरेत्॥ १०५ ॥
एकेन तत्र वासश्च द्वाभ्यां च गमनं भवेत्।
तृतीये चार्धमार्गे तु चतुर्थे ग्रामसन्निधौ॥ १०६ ॥
पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिसमाकुलः।
सप्तमे शून्यकार्यः स्यात् प्रश्नश्च कथितो बुधैः ॥ १०७ ॥

अन्वयः—तिथिः, घस्त्रौ, लग्नं तथा नामाक्षरसमन्वितम् एवं नक्षत्रं करणं, सप्तभिः भागं आहरेत्। एकेन (शेषेण) तत्र वासः, द्वाभ्यां च गमनं। तृतीये (शेषे) अर्धमार्गे, चतुर्थे तु ग्रामसन्निधौ भवेत्। पञ्चमे पुनः आवृत्तिः, षष्ठे व्याधिसमाकुलः। सप्तमे शून्यकार्यः स्यात् (एवं) बुधैः प्रश्नः च कथितः ॥ १०५-१०७ ॥

ऋचा०—जब कोई व्यक्ति यात्रा प्रवास में परदेश या देशान्तर में जाता है तब उसे प्रवासी, पन्था, पान्थ, पथिक, यात्री आदि कहते हैं। उसके सम्बन्ध में प्रश्न पूछे जाने पर प्रश्नकालीन चान्द्र तिथि, वार, नक्षत्र, करण, लग्न तथा प्रवासी के नाम के अक्षरों की संख्या इन सबको मिला देना चाहिये। इन सबके योग में सात का भाग देना चाहिये। यदि एक शेष रहे तो पथिक उसी स्थान पर है (जहाँ गया था)। दो शेष बचने पर चल पड़ा है। तीन शेष बचने पर बीच रास्ते में है। चार शेष बचने पर गाँव के समीप आ गया है। यदि पाँच शेष बचे तो घर को वापिस आते समय बीच से फिर लौट गया है। यदि छह शेष बचे तो बीमार पड़ गया है। सात शेष बचने पर उसका कार्य सिद्ध नहीं हुआ है। उसे रोजगार या व्यापार में सफलता नहीं मिली है। ऐसा बताना चाहिये ॥ १०५-१०७ ॥

उदाहरण—संवत् २०५८ शाके १९२४ फाल्गुन कृष्ण १२ गुरुवार दिनांक २७ फरवरी सन् २००२ को दिन के साढ़े ग्यारह बजे वृष लग्न में उत्तरापाढ़ा नक्षत्र तथा कौलव करण में देवदत्त नामक पथिक के सम्बन्ध में प्रश्न किया गया तो उत्तर इस प्रकार होगा। देवदत्त के नाम में द्+ए+व्+अ+द्+अ+त्+त्+अ=कुल नौ अक्षर (स्वर=व्यञ्जन) हैं। अत: कृष्ण द्वादशी तिथि=२७+वार ५+नक्षत्र २१+करण ३+ लग्न २+ नामाक्षर ९=६७ (सतसठ) इसमें सात का भाग दिया अत: ६७÷७=शेष ४ बचे। ''चतुर्थे ग्रामसन्निधौ'' के अनुसार प्रवासी लौटकर ग्राम या नगर के समीप आ गया है—ऐसा बताना चाहिये।

॥ मेलन-प्रश्न: ॥

घटिकास्त्रिगुणाः सैकाः सप्तभिः संयुताः पुनः।
वेदैश्च भाजितास्तत्र शेषाङ्के फलमादिशेत्॥ १०८॥
एकशेषे मेलनं च द्वाभ्याञ्च गमनान्तरे।
त्रिशेषे दर्शनाभावः समुद्रैः क्लेशकृद् भवेत्॥ १०९॥

अन्वय:—(इष्ट) घटिका: सैका: त्रिगुणा: पुन: सप्तभि: संयुता च वेदै: भाजिता: तत्र शेषाङ्के फलमादिशेत्। च एकशेषे मेलनं, द्वाभ्यां च गमनान्तरे (मेलनं), त्रिशेषे दर्शनाभाव:, समुद्रै: क्लेशकृत् भवेत्॥ १०८-१०९॥

ऋचा०—प्रश्न समय के सूर्योदयात् इष्टकाल की घटियों में एक जोड़ दें। (पल छोड़ दें)। उन्हें तिगुना करें फिर उसमें सात जोड़ दें, इस योगफल में चार का भाग देवें। यदि एक शेष बचे तो जिस व्यक्ति से मिलना चाहते हैं वह व्यक्ति मिल जायेगा। यदि दो शेष बचें तो गमनान्तरे अर्थात् दूसरी बार पुन: उसके पास जाना पड़ेगा, तब मिलना होगा। तीन शेष बचने पर उस व्यक्ति से मिलन नहीं हो सकेगा। चार शेष बचने पर बहुत कष्टपूर्वक, परिश्रम के बाद ही मिलना संभव होगा ऐसा कहना चाहिये॥ १०८-१०९॥

प्राय: लोगों को मन्त्रियों, अधिकारियों या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलना पड़ता है। कभी कभी नाते-रिश्तेदारों से अथवा व्यापार वाणिज्य के सिलसिले में अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों से मिलने की आवश्यकता बनी रहती है। तब ऐसे में इस प्रकार का प्रश्न पूछा जाता है।

उदाहरण—मान लीजिए किसी ने प्रश्न किया कि ''मैं अमुक व्यक्ति से मिलने जाना चाहता हूँ क्या वह मिलेगा? तब उस समय स्थानीय सूर्योदय के आधार पर जो इष्टकाल निकाला वह १५ घटी ३५ पल आया। अस्तु १५+१=१६×३=४८ इसमें सात और जोड़ें तो ४८+७=५५ हुए। इसमें चार का भाग दिया तो तीन शेष बचे अत: ''त्रिशेषे दर्शनाभाव:'' के अनुसार इच्छित व्यक्ति से भेंट नहीं हो सकेगी।

॥ अभीष्टजनस्य गतिविधिज्ञानम्॥

तिथिवारर्क्षयोगानां योगो द्विघ्नस्त्रिभिर्युतः।
ततो द्वादशभिर्भाज्यः शेषेण फलमादिशेत्॥ ११०॥

अन्वय:—तिथि, वार, ऋक्ष योगानां योगो द्विघ्न:। (च) त्रिभि: युत:। ततो द्वादशभि: भाज्य: शेषेण फलमादिशेत्॥ ११०॥

ऋचा०—इस प्रश्न का उपयोग अभीष्ट व्यक्ति, मित्र, बन्धु, प्रिय, शत्रु या चोरादि की तात्कालिक गतिविधि जानने में होता है। जब कोई पूछे कि अमुक व्यक्ति इस समय क्या कर रहा है ? तब प्रश्न समय के तिथि-वार-नक्षत्र योगों की संख्या को जोड़कर दूना (द्विगुण) करें उसमें तीन और जोड़ दें फिर इस समुदाय में बारह का भाग दें और शेषाङ्क के अनुसार अभीष्ट व्यक्ति की गतिविधि का सङ्केत प्रश्नकर्त्ता को बतावें॥ ११०॥

प्रष्टा जब उससे मिलेगा तब निम्नानुसार स्थितियों में देखें।

॥ एकशेषफलम्॥

हास्ययुक्तस्थितो भूम्यां स्वस्थासनयुतो जनैः।
ताम्बूलाद्युपचारैश्च ह्येकशेषे फलं वदेत्॥ १११॥

अन्वयः—एकशेषे भूम्यां स्वस्थासनस्थितो जनैः युतः हास्ययुक्तः ताम्बूलाद्युपचारैः च फलं वदेत्॥ १११॥

ऋचा०—जब पूर्वोक्त श्लोक ११० के अनुसार गणनाकर एक शेष बचे तब अभी व्यक्ति भूमि पर (चटाई इत्यादि बिछाकर या लिपे-पुते स्वच्छ फर्श पर) पान, सुपारी, तम्बाकू, गुटका खाते हुए अथवा सिगरेट इत्यादि का कश लेते हुए बहुत लोगों से घिरा हुआ ठहाके लगा रहा है ऐसा फल कथन करना चाहिये॥ १११॥

विशेष—यहाँ पर मूल श्लोक में प्रयुक्त ताम्बूलादि उपचार का अर्थ परिस्थितियों के अनुसार व्यापक है। वह व्यक्ति यदि किसी अन्य मादक द्रव्य का सेवन करता है तो उसे सेवन कर रहा है ऐसा जानना चाहिये। अस्तु इस शब्द से गांजा, भांग, अफीम, हीरोइन, एल.एस.डी. आदि सभी का ग्रहण किया जा सकता है।

॥ द्विशेषफलम्॥

व्यायामेन युतश्चापि स्वल्पमानवमिश्रितः।
उद्वेगवार्ताश्रवणं द्विशेषे दर्शनं फलम्॥ ११२॥

अन्वयः—द्विशेषे व्यायामेन युतः अपि स्वल्प मानव मिश्रितः च उद्वेगवार्त्ताश्रवणं दर्शनं फलम्॥ ११२॥

ऋचा०—यदि दो शेष बचें तो अभीष्ट व्यक्ति थोड़े लोगों के बीच उद्वेग (उत्तेजना) कारक समाचार एवं वार्त्ता सुन रहा है तथा व्यायाम कर रहा है। ऐसा फल होता है॥ ११२॥

यहाँ व्यायाम से दण्ड बैठक, योगासन, सूर्य नमस्कार आदि का ग्रहण करना चाहिये।

॥ त्रिशेषफलम्॥

कुपितः स्वासनस्थोऽपि चिन्तयन् मनसाऽस्ति सः।
पश्चात् कार्यप्रसङ्गेन गमनं च त्रिशेषके॥ ११३॥

अन्वयः—त्रिशेषके मनसा चिन्तयन् अस्ति सः स्वासनस्थोऽपि कुपितः। पश्चात् कार्यप्रसङ्गेन (तस्य) गमनम्॥ ११३॥

ऋचा०—यदि तीन शेष बचें तब वह व्यक्ति अपने आसन पर बैठा हुआ क्रोधित

भाव-भङ्गिमा ग्रहण किये है। मन में कुछ सोच रहा है और फिर किसी आवश्यक कार्य से चला जायेगा ऐसा बताना चाहिये॥ ११३॥

टिप्पणी—किसी प्रति में ''चिन्तयन् मनसास्ति सः'' के स्थान पर ''ताडनं बुद्धि-संभवम्'' ऐसा पाठान्तर है, जिसका अर्थ होगा कि किसी या किन्हीं को बौद्धिक ताड़ना दे रहा है, अर्थात् लानत मलामत कर रहा है। उन्हें उनकी लापरवाही के लिये फटकार लगा रहा है। आजकल इसके लिये कार्यालयीय भाषा में प्रताड़ित करना कहते हैं। यह प्रताड़न लिखित या मौखिक होती है। शिक्षक विद्यार्थियों को तथा माता-पिता बालकों को प्रताड़ित करते हैं।

॥ चतुश्शेषफलं पञ्चशेषफलञ्च॥

वेदशेषे तु सुप्तः स्याज्जलेन मुखशुद्धिकृत्।
पञ्चशेषे तु सुप्तः सन्नुत्थितो भोजनं भवेत्॥ ११४॥

अन्वयः—वेदशेषे सुप्तः स्यात् जलेन मुखशुद्धिकृत्। पञ्चशेषे तु सुप्तः सन् उत्थितो भोजनं भवेत्॥ ११४॥

ऋचा०—पूर्वोक्त विधि से यदि चार शेष बचें तो अभीष्ट व्यक्ति सो करके उठा और जल से उसने हाथ मुँह धोया यह बताना चाहिये।

यदि पाँच शेष बचें तो वह व्यक्ति सोकर उठने के पश्चात् भोजन करेगा ऐसा बताना चाहिये॥ ११४॥

॥ षट्-सप्तशेषफलञ्च॥

रसशेषे मार्गमध्ये दर्शनं निश्चितं भवेत्।
स्त्रीभोगव्यवहारञ्च सप्तशेषे विनिर्दिशेत्॥ ११५॥

अन्वयः—रसशेषे मध्ये मार्गे निश्चितं दर्शनं भवेत्। सप्तशेषे स्त्रीभोगव्यवहारं च विनिर्दिशेत्॥ ११५॥

ऋचा०—पूर्वोक्त प्रकार से छह शेष बचने पर अभीष्ट व्यक्ति, जिससे मिलने जाना है, रास्ते में ही निश्चित रूप से मिल जायेगा—ऐसा बताना चाहिये।

यदि सात शेष बचें तो वह स्त्री के साथ विलास में रत होगा। यह स्त्री पत्नी या प्रेमिका कोई भी हो सकती है। ऐसा बताना चाहिये॥ ११५॥

॥ अष्ट-नवशेषफलम्॥

अष्टशेषे यदा तस्य चित्तोद्वेगस्तदा भवेत्।
नन्दशेषे यदा दृष्टो धर्मकार्येषु तत्परः॥ ११६॥

अन्वयः—यदा अष्टशेषे तदा तस्य चित्ते उद्वेगः भवेत्। यदा नन्दशेषे (तदा) धर्मकार्येषु तत्परः दृष्टः॥ ११६॥

ऋचा०—यदि आठ का अङ्क शेष बचे तो अभीष्ट व्यक्ति जिससे मिलता है, उसके मन में उद्वेग होगा।

यदि नौ शेष रहें तो इच्छित व्यक्ति धर्मकार्य या सामाजिक या परोपकार के कार्य में संलग्न मिलेगा॥ ११६॥

॥ दश-एकादश-द्वादश शेषफलम् ॥

दशमे राजसम्मानं रुद्रे भोजनमेव च।

द्वादशे दुःखितः किन्तु स्त्रीभोगङ्कर्तुमिच्छति॥ ११७॥

अन्वयः—दशमे (शेषे) राजसम्मानं, रुद्रे च भोजनम् एव। द्वादशे दुःखितः (सत्) किन्तु स्त्रीभोगं कर्त्तुम् इच्छति॥ ११७॥

ऋचा०—यदि पूर्वोक्त प्रकार से दश शेष बचें तो इच्छित व्यक्ति राज-सम्मान पुरस्कार इत्यादि या पदोन्नति प्राप्त करता हुआ मिलता है।

यदि ग्यारह शेष बचें तो अभीष्ट व्यक्ति भोजन करता हुआ मिलता है।

यदि बारह शेष बचें तो वह व्यक्ति मानसिक तनाव से ग्रसित होगा तथा स्त्री सुख की लालसा से युक्त होगा॥ ११७॥

॥ शेषानुसार अभीष्ट व्यक्ति की गतिविधि ज्ञान का चक्र॥

एक	दो	तीन	चार	पाँच	छः	सात	आठ	नौ	दश	एकादश	द्वादश	**तिथि+वार+नक्षत्र+योग=योगफल × २ = गुणनफल ÷ १२ शेषाङ्क**
आसनस्थ हास्ययुक्त	व्यायाम उद्वेगवार्ता	क्रोधयुक्त	सोते से जागकर मुख धोवे	सोकर जागने के बाद भोजन में रत	मार्ग में मिले	प्रेमालापरत	उद्विग्नचित्त	धर्मकार्य में संलग्न	राजसम्मान से युक्त	भोजनरत	तनावग्रस्त	शेषाङ्क फल

॥ नष्टजातक-कथनम् ॥

वर्णध्रुवाः द्विगुणिता मात्राणां पूर्ववद् ध्रुवाः।

ऐक्यङ्कालविचारोऽयं मूलदेवेन भाषितः॥ ११८॥

अन्वयः—मात्राणां ध्रुवाः पूर्ववद्, वर्णध्रुवा द्विगुणिता ऐक्यम् अयं कालविचारो मूलदेवेन भापितः॥ ११८॥

ऋचा०—पूर्व में श्लोक ५१ से ५५ तक जो मात्राओं की ध्रुवा कहीं गई है उसके आधार पर प्रश्नाक्षरों के स्वरों की ध्रुवा का पिण्ड बनाकर उसे पूर्ववत् (ज्यों का त्यों) रहने दें तथा वर्णों अक्षरों की ध्रुवा के पिण्डाङ्क को दुगुना (द्विगुण) कर दोनों को जोड़ दे। इस प्रकार नष्ट जातक के विचार को मूलदेव ने कहा है॥ ११८॥

इस श्लोक में मात्रा पिण्डाङ्क तथा द्विगुणित वर्ण पिण्डाङ्क का योग ध्रुवाङ्क समुदाय या

पिण्डाङ्क समुदाय कहा जायेगा। जिसका जन्म-समय न हो उसकी जन्मपत्री बनाने की यह विधि है।

॥ वर्ष एवं पक्ष ज्ञानम् ॥

तत्र ध्रुवाङ्कसमुदाये अष्टोत्तरशतं भागः शेषेण वर्षः। तत्रैवाक्षरपिण्डे द्वाभ्यां भागः एकेन शुक्ल पक्षः, द्विशेषके कृष्णपक्षः॥ ११९॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ ११९॥

ऋचा०—पूर्व श्लोक ११८ के अनुसार निर्मित समुदाय में १०८ का भाग देने से शेष में गत वर्ष की संख्या प्राप्त होगी, उससे पता चलेगा कि जातक कितने वर्ष का हो चुका है।

पुनः उसी समुदाय में दो का भाग देने से पक्ष का ज्ञान होगा। यदि एक शेष रहे तो शुक्ल पक्ष का जन्म है, तथा शून्य या दो शेष रहने पर कृष्ण पक्ष का जन्म कहना चाहिये॥ ११९॥

॥ नक्षत्र ज्ञानम् ॥

तत्रैवाक्षरपिण्डे सप्तविंशतिभागः एकशेषेऽश्विनी, द्विशेषे भरणी, त्रिशेषे कृत्तिकादीन्येवं नक्षत्राणि ज्ञातव्यानि॥ १२०॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ १२०॥

ऋचा०—पूर्व के समुदाय (अक्षर पिण्ड) में २४ का भाग दें तो शेषानुसार जन्म नक्षत्र जानना चाहिये—यथा एक शेष से अश्विनी, दो शेष से भरणी, तीन शेष से कृत्तिका, चार शेष से रोहिणी, पाँच शेष से मृगशिरा इत्यादि॥ १२०॥

॥ सूर्यगतांशज्ञानम् ॥

तत्रैवाक्षरपिण्डे त्रिंशद् भागेन शेषमंशाः॥ १२१॥

अन्वयः—सरलम्॥ १२१॥

ऋचा०—पूर्वोक्त समुदाय पिण्ड में तीस का भाग देने से जन्मकालिक सूर्य का गतांश ज्ञात होगा॥ १२१॥

॥ मासज्ञानम् ॥

तत्रैव पिण्डे द्वादशभक्ते एकेन शेषेण फाल्गुनः।
द्वाभ्याञ्चैत्रः। त्रिभिर्वैशाखः। चतुर्भिर्ज्येष्ठः।
पञ्चभिराषाढः एवं श्रावणादयो बोधितव्याः॥ १२२॥

अन्वयः—सरलमस्ति॥ १२२॥

ऋचा०—पूर्वोक्त पिण्ड में बारह का भाग दें यदि एक शेष रहे तो फाल्गुन, दो शेष रहे तो चैत्र, तीन शेष रहे तो वैशाख, चार शेष से ज्येष्ठ, पाँच शेष से आषाढ़, छह शेष से श्रावण, सात शेष से भाद्रपद इस प्रकार से मासों को जानना चाहिये। तात्पर्य यह है कि इस विषय में फाल्गुन से मासों की गणना करनी चाहिये॥ १२२॥

॥ जन्मलग्नज्ञानम् ॥

एवं तत्रैवाक्षरपिण्डे द्वादश भागा एकेन मेषः, द्वाभ्यां वृषः, त्रिभिर्मिथुनमित्यादिक्रमेण लग्नानि ज्ञातव्यानि। इति नष्ट जन्मपत्र निर्माणप्रकटः ॥ १२३ ॥

अन्वयः—सरलमस्ति ॥ १२३ ॥

ऋचा०—पूर्वोक्त अक्षर पिण्ड समुदाय में १२ का भाग देकर एक शेष बचने पर मेष लग्न, दो शेष से वृषभ लग्न, तीन शेष से मिथुन लग्न इसी क्रम से जानना चाहिये। दैवज्ञ को नष्ट जन्म-पत्र निर्माण इसी प्रकार से कर लेना चाहिये ॥ १२३ ॥

नष्ट जन्म-पत्रिका निर्माण हेतु उदाहरण—

मान लीजिये किसी ब्राह्मण प्रश्नकर्त्ता ने नष्ट जातक के सम्बन्ध में प्रश्न किया और उसने 'चमेली' का उच्चारण किया तब चमेली के अक्षरों एवं मात्राओं को पृथक् करने पर निम्न ध्रुवाङ्क प्राप्त हुए—

अक्षर ध्रुवाङ्क	मात्रा ध्रुवाङ्क
च्=१५	अ=१२
म्=८६	ए=१८
ल्=१३	ई=१८
-----------	----------
योग=११४×२	योग=४८
२२८	पूर्ववत्=४८

अब अक्षरपिण्ड को दुगुना कर उसमें मात्रापिण्ड जोड़ा तो २२८+४८=२७६ यह समुदाय पिण्ड हुआ। इसमें वर्ष ज्ञान हेतु १०८ का भाग दिया तो साठ शेष बचे अतः प्रश्नकर्त्ता साठ वर्ष का हो चुका है। अब २७६ में दो का भाग दिया तो शून्य यानी दो शेष बचे अतः कृष्ण पक्ष का जन्म है। फिर इसी २७६ में २७ का भाग दिया तो शेष ६ बचे अतः छठवां नक्षत्र आर्द्रा होने से जन्म नक्षत्र आर्द्रा हुआ। इसी २७६ में तीस का भाग देने पर छह शेष बचे अतः जातक के जन्म समय पर सूर्य के गतांश छह थे। फिर इसी २७६ में १२ का भाग दिया तो शेष शून्य अर्थात् बारह हुए। फाल्गुन से गणना करने पर माघ मास का जन्म सिद्ध हुआ यह मास गणना शुक्लादि चान्द्र मास के अनुसार करनी चाहिये। पुनः इसी २७६ में बारह का भाग देने पर शून्य या बारह शेष बचे अतः जन्म के समय मीन लग्न था।

अब इस हिसाब से प्रश्न समय से ६० वर्ष पूर्व के पंचाङ्ग को देखकर मीन लग्न की कुण्डली बनाकर मुहस्थापन कर लें। यह कुण्डली फल कथन हेतु सटीक रहेगी। परन्तु परीक्षा के लिये इस विधि का उपयोग समीचीन नहीं है।

॥ सिद्ध्यसिद्धिप्रश्नः ॥

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं वार संख्या समन्वितम्।
पञ्चभिर्गुणितं तच्च पिण्डं मुनिभिराभजेत् ॥ १२४ ॥

एकत्रिशेषे वैलम्ब्यात् कार्यसिद्धिः द्विवेदयोः।
तत्क्षणात्पञ्चभिः षड्भिः कार्यनाशस्तु सप्तभिः॥ १२५॥

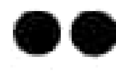
अन्वयः—प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं (ततः) वार संख्या समन्वितम्। पञ्चभिः गुणितं तत् पिण्डं च मुनिभिः आभजेत्।

एकत्रिशेषे वैलम्ब्यात्। द्विवेदयोः कार्यसिद्धिः पञ्चभिः षड्भिः तत्क्षणात्, सप्तभिः कार्यनाशस्तु॥ १२४-१२५॥

ऋचा०—प्रश्नकर्त्ता के मुख से निकले प्रश्नाक्षरों या पुष्पादि के नामाक्षरों की संख्या को दुगुना करें। उसमें प्रश्न-दिन के वार की संख्या जोड़ दें। फिर इस योगफल को पाँच से गुणा करें यह पिण्ड होगा। इस पिण्ड में सात का भाग दे यदि एक शेष बचे या तीन शेष बचें तो कार्य में विलंब होगा, दो या चार शेष बचने पर कार्य सिद्ध होगा। पाँच या छह शेष रहने पर तत्काल कार्यसिद्धि होगी। परन्तु शून्य या सात शेष बचने पर कार्यसिद्धि कदापि नहीं होगी॥ १२४-१२५॥

॥ इति केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रहे पूर्वार्द्धं समाप्तम्॥

इति आचार्य पं. गुरु प्रसाद गौड़ विरचित केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रह की ऋचा हिन्दी का पूर्वार्द्ध सम्पूर्ण हुआ॥



केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रह

उत्तरार्द्धम् (आय-प्रश्नाध्यायः)

॥ अथ ध्वजाद्याय-प्रश्ना: ॥

भूतादिविविधान् प्रश्नान् कथियिष्यामि संग्रहे।
आयप्रश्नाख्यमध्यायं चमत्कृतिकरं परम्॥ १ ॥

अन्वय:—संग्रहे विविधान् भूतादि प्रश्नान् (च) परं चमत्कृतिपरं आयप्रश्नाख्यं अध्यायं कथयिष्यामि॥ १ ॥

ऋचा०—संग्रहकर्त्ता कहते हैं, कि मैं इस उत्तरार्ध में चमत्कारी फल बताने वाले भूत भविष्य वर्त्तमान से सम्बन्धित उत्तर प्रदान करने वाले आय प्रश्न नामक अध्याय का वर्णन करता हूँ॥ १ ॥

॥ आयज्ञानविधि: ॥

उच्चारित फलनाम्नो वर्णक्रमतो ध्वजादयोऽष्टाऽऽया:।
प्रश्नाक्षरतो वापि कल्पनीया दैवविदा नित्यम्॥ २ ॥

अन्वय:—उच्चारित फल नाम्न: वर्णक्रमत: ध्वजादय: अष्ट आया:। वा प्रश्नाक्षर-तो अपि दैवविदा नित्यं कल्पनीया: ॥ २ ॥

ऋचा०—प्रश्नकर्त्ता के मुख से निकले फल, पुष्प, वृक्ष, नदी, देव आदि के नाम के प्रथमाक्षर के अनुसार अथवा प्रश्न के प्रथमाक्षर द्वारा दैवज्ञ को ध्वजादि आठ आयों का ज्ञान करना चाहिये॥ २ ॥

॥ पुनश्च स्पष्टार्थे ॥

उच्चारित फलादीनामाद्याक्षरवशात् फलम्।
ज्ञात्वाऽकारादिवर्गाश्च ध्वजादय इति क्रमात्॥ ३ ॥

अन्वय:—उच्चारित फलादीनां आद्याक्षरवशात् अकारादि वर्गाश्च ध्वजादय: (आया:) क्रमात् ज्ञात्वा फलं (वदेत्) ॥ ३ ॥

ऋचा०—अब इस श्लोक में स्पष्टता के साथ कहते हैं कि पृच्छक जो प्रश्न अथवा फलादिके नाम का जो आदि अक्षर हो उसके आधार पर ''अ क च ट त प य श' इन आठ वर्गों के अनुसार क्रमश: ध्वजादि आठ आयों का ज्ञान करें और तत्पश्चात् प्रश्न का फल इस शास्त्र में बताई गयी रीति के अनुसार करें॥ ३ ॥

॥ अथाऽऽयनामानि ॥

ध्वजो धूम्रश्च सिंहश्च श्वानो वृष-खरौ गज:।
ध्वांक्षश्चायाष्टकं ज्ञेयं शुभाऽशुभफलं क्रमात्॥ ४ ॥

अन्वयः—ध्वजः, धूम्रः च, सिंहः च श्वानः, वृषः, खरः, गजः ध्वाङ्क्षः च अष्टकं आयं (तेषां) फलं शुभम्, अशुभम् क्रमात् ज्ञेयम्॥ ४॥

ऋचा०—(१) ध्वज, (२) धूम्र, (३) सिंह, (४) श्वान, (५) वृष, (६० खर, (७) गज, तथा (८) ध्वाङ्क्ष से आठ आय हैं। इनका फल क्रमशः शुभ तथा अशुभ होता है। जैसे—ध्वज शुभ, फिर धूम्र अशुभ, फिर सिंह शुभ॥ ४॥

स्पष्टीकरण—यदि फलादि या प्रश्न का प्रथमाक्षर अवर्ग में से हो तो ध्वज आय होगा। यदि प्रथमाक्षर कवर्ग हो तो धूम्र आय होगा। मान लो किसी ने प्रश्न पूछने के लिये आम्र (फल) का उच्चारण किया तो इसका प्रथम अक्षर अवर्ग का है अतः इस प्रश्न का आय ध्वज होगा। यदि कोई ''वकुल'' (पुष्प) का उच्चारण करे तो 'व' जो कि प्रथमाक्षर है 'श' वर्ग (आठवां वर्ग) के अन्तर्गत आता है अतः ध्वाङ्क्ष आय होगा। गङ्गा (नदी) का वर्ग कवर्ग है तथा धूम्र आय है। पङ्कज (पुष्प) का आद्यक्षर पवर्ग में आने से उसका वर्ग खर है। रजनीगंधा (पुष्प) का पहला वर्ण य वर्ग के अन्तर्गत है अतः उसका आय गज होगा। चमेली चवर्ग तथा सिंह आय के अन्तर्गत आने वाला पुष्प है। इसी प्रकार से आयों का विचार करना चाहिये।

॥ ध्वजादि स्वामिनः ॥

ध्वजे सूर्यश्च विज्ञेयः धूम्रे भौमस्तथैव च।
सिंहे शुक्रश्च विज्ञेयः श्वाने सौम्यस्तथैव च॥ ५॥
वृषे गुरुश्च विज्ञेयः खरे सूर्यसुतस्तथा।
गजे ध्वाङ्क्षे चन्द्रराहू ह्येते च पतयः स्मृताः॥ ६॥

अन्वयः—ध्वजे सूर्यश्च तथैव च धूम्रे भौमः विज्ञेयः। सिंहे शुक्रः च तथैव श्वाने सौम्यः विज्ञेयः। वृषे गुरुः तथा खरे सूर्यसुतः विज्ञेयः। गजे चन्द्रः ध्वांक्षे राहू (च) ह्येते पतयः स्मृताः॥ ५-६॥

॥ आय ज्ञानचक्र ॥

क्रमांक	आय	वर्ग	(प्रश्न या फल का प्रथमाक्षर) वर्ग के अक्षर					स्वामी	फल	
१	ध्वज	अ वर्ग	अ आ	इ ई	उ ऊ	ए ऐ	ओ औ	सूर्य	शुभ	सिद्धि
२.	धूम्र	क वर्ग	क, क्ष	ख	ग	घ	ङ	मङ्गल	अशुभ	असिद्धि
३.	सिंह	च वर्ग	च	छ	ज, ज्ञ	झ	ञ	शुक्र	शुभ	सिद्धि
४.	श्वान	ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	बुध	अशुभ	असिद्धि
५.	वृष	त वर्ग	त, त्र	थ	द	ध	न	गुरु	शुभ	सिद्धि
६.	खर	प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	शनि	अशुभ	असिद्धि
७.	गज	य वर्ग	य	र	ल	व	०	चन्द्र	शुभ	सिद्धि
८.	ध्वांक्ष	श वर्ग	श	ष	स	ह	०	राहु	अशुभ	असिद्धि

ऋचा०—ध्वज आय का स्वामी सूर्य, धूम्र का भौम, सिंह का शुक्र, श्वान का सौम्य, वृष का गुरु, खर का शनि, गज आय का चन्द्र तथा ध्वाङ्क्ष का राहु होता है॥ ५-६॥

प्रश्नाद्यक्षर हेतु स्पष्टीकरण—(१) ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर में कोई भेद नहीं है।

(२) 'क्ष' अक्षर 'क्‌ष' है अत: यह कवर्ग में आता है।

(३) 'त्र' अक्षर त्‌ +र्‌ है अत: तवर्ग में आता है।

(४) 'ज्ञ' अक्षर ज्‌+ञ है अत: चवर्ग के अन्तर्गत है।

(५) 'ऋ' अवर्ग के अन्तर्गत है।

॥ प्रश्ने ध्वजाद्यायानां सामान्यं फलम्॥

ध्वज कुञ्जर सिंहेषु वृषे सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।
ध्वाङ्क्षे, श्वाने, खरे धूम्रे कार्यसिद्धिर्भवेन्नहि॥ ७॥

अन्वय:—ध्वज, कुञ्जर, सिंहेषु, वृषे ध्रुवं कार्यसिद्धिर्भवेत्। ध्वाङ्क्षे श्वाने, खरे, धूमे कार्यसिद्धि: नहि भवेत्॥ ७॥

ऋचा०—ध्वज, गज, सिंह एवं वृष इन चारों आयों में यदि प्रश्न किया गया हो तो शीघ्र ही कार्य की सिद्धि होती है। ध्वांक्ष, श्वान, खर, तथा धूम्र इन चार आयों में कार्य सिद्ध नहीं होता है॥ ७॥

विशेष वक्तव्य—देववाणी संस्कृत की यह विशेपता है कि वहाँ शब्द के साथ ही उसका भाव स्पष्टत: प्रकट होता है। यहाँ आठों आयों के जैसे नाम हैं, उसी प्रकार वे गुण भी उनसे प्रकट होते हैं—

(१) ध्वज—ध्वज का अर्थ झंडा या पताका होता है। यह विजय, कीर्ति, यश, सम्मान एवं अधिकार का प्रतीक होता है। अत: ध्वज आय वाले प्रश्न में सफलता मिलती है। कार्य सिद्ध होता है।

(२) धूम्र—इसका अर्थ धुवां है। धुवां अन्धकार तथा अस्पष्टता का प्रतीक है। इसके कारण नेत्रों को कष्ट पहुँचता है। अत: प्रश्नकाल में धूम्र आय के कारण असफलता असिद्धि, भ्रम एवं आशङ्का का परिणाम होता है।

(३) सिंह—यह शौर्य, पराक्रम, बाहुबल एवं स्वाभिमान का प्रतीक है। अस्तु सिंह आय जब प्रश्न समय में होता है तो प्रश्नकर्त्ता के बाहुबल से कार्यसिद्धि होती है।

(४) श्वान—केवल उदर पूर्ति के लिये दुम हिलाने वाला तथा टुकड़ों पर अपनी निष्ठा बदलने वाला प्राणी श्वान है। प्रश्न समय में यदि श्वान आय है तो किसी विश्वासपात्र व्यक्ति द्वारा धोखा दिये जाने के कारण कार्य विनष्ट होता है।

(५) वृष—सन्तोप, साहस, एवं बल का प्रतीक वृषभ आय परोपकारी वृत्ति वाला होने से प्रश्न समय में इस का आय दूसरों की मदद से सफलता देता है।

(६) खर—यह मूर्खता का प्रतीक जीव है। प्रश्न समय में खर आय होने से प्रश्नकर्त्ता की असावधानी, प्रमाद या चूक से बना बनाया कार्य बिगड़ जाता है। इसमें पृच्छक की वाणी के दोष से हानि होती है।

(७) गज—दूसरों की परवाह न करते हुए अपनी मस्ती से चलने वाला तथा स्वकुटुम्ब का भरण-पोषण करने वाला यह प्राणी अत्यन्त शुभ है। यह गणेश जी का भी प्रतीक होता है। अत: इस आय में सुनिश्चित सफलता होती है।

(८) ध्वाङ्क्ष—इसका अर्थ कौवा नामक प्राणी होता है। यह धूर्तता एवं स्वार्थपरता का प्रतीक है। प्रश्न समय ध्वांक्ष नामक आय होने पर प्रश्नकर्त्ता के साथ दुष्ट लोगों द्वारा अन्याय होने से, धोखाधड़ी से उसका काम बिगड़ जाता है।

॥ अस्ति-नास्ति प्रश्न: ॥

ध्वज कुञ्जर सिंहेषु, वृषे चास्ति विनिश्चितम्।
ध्वाङ्क्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति समुदाहृतम्॥ ८॥

अन्वय:—ध्वजे, कुञ्जरे, सिंहे च वृषे अस्ति विनिश्चितम्। ध्वांक्षे, श्वाने, खरे, धूम्रे (च) नास्ति इति समुदाहृतम्॥ ८॥

ऋचा०—ध्वज, गज, सिंह एवं वृष—ये आय अस्ति के सूचक हैं तथा ध्वाङ्क्ष, श्वान, खर, एवं धूम्र—ये नास्ति के सूचक हैं॥ ८॥

स्पष्टीकरण-जब प्रश्न में यह पूछा जाये कि अमुक व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, द्रव्य आदि अमुक स्थान पर है या नहीं? तब उसका उत्तर इस श्लोक के अनुसार हाँ या ना में देना चाहिये। जैसे कोई पूछे कि अमुक जगह धन गड़ा है या नहीं तब उसके उत्तर के लिये इस विधि का उपयोग करना चाहिये।

॥ लाभाऽलाभप्रश्न: ॥

ध्वजे, गजे, वृषे सिंहे शीघ्रलाभो भवेद् ध्रुवम्।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नाशश्च कलहप्रद:॥ ९॥

अन्वय:—ध्वजे, गजे, वृषे सिंहे ध्रुवं शीघ्रलाभो भवेत्। ध्वांक्षे, श्वाने, खरे धूम्रे (च) नाश: कलहप्रद: च॥ ९॥

ऋचा०—ध्वज, गज, वृष, सिंह इन चारों आयों में लाभालाभ के प्रश्न में सुनिश्चित रूप से लाभ होता है। तथा ध्वांक्ष, श्वान, खर एवं धूम्र इन आयों के प्रश्न समय होने पर कार्यनाश तथा कलह होता है॥ ९॥

॥ नष्ट वस्तु लाभाऽलाभ प्रश्न: ॥

ध्वजे, गजे, वृषे, सिंहे, नष्टलाभो भवेद् ध्रुवम्।
ध्वांक्षे, धूम्रे, खरे, श्वाने हानिर्भवति निश्चितम्॥ १०॥

अन्वय:—ध्वजे, गजे, वृषे, सिंहे ध्रुवं नष्ट (वस्तु) लाभ: भवेत्। ध्वांक्षे धूम्रे, खरे, श्वाने (च) निश्चितं हानिर्भवेत्॥ १०॥

ऋचा०—ध्वज, गज, वृष तथा सिंह इन आयों में यदि खोई हुई वस्तु का प्रश्न है तो वह निश्चित रूप से मिलती है। ध्वाङ्क्ष, धूम्र, खर, श्वान इन आयों के प्रश्न समय होने पर नष्ट वस्तु की प्राप्ति नहीं होती, वह वापिस नहीं मिलतीं॥ १०॥

॥ चौर-जातिप्रश्नः ॥

ध्वजे च ब्राह्मणश्चौरो धूम्रे क्षत्रिय एव च।
सिंहे वैश्यश्च विज्ञेयः खरे च सेवकस्तथा॥ ११॥
गजे दासी च विज्ञेया ध्वाङ्क्षे च नायकस्तथा।
वृषे श्वाने तथा ज्ञेयश्चौरश्चान्त्यजसम्भवः॥ १२॥

अन्वयः—ध्वजे ब्राह्मणः चौरः, धूम्रे च क्षत्रिय एव, सिंहे वैश्यः तथा खरे सेवकः विज्ञेयः, गजे दासी तथा ध्वाङ्क्षे नायकः विज्ञेयः, वृषे च श्वाने अन्त्यजसंभवः चौरः ज्ञेयः॥ ११-१२॥

ऋचा०—प्रश्नकाल में यदि ध्वज आय हो तो ब्राह्मण जाति का चोर होता है। धूम्र आय होने पर क्षत्रिय जाति का चोर होता है। सिंह आय होने पर वैश्य जाति का चोर हुआ करता है। खर आय होने पर घर का या कार्यालय का भृत्य ही चोर होता है। गज आय होने पर नौकरानी या महरी आदि चोर होती है। ध्वाङ्क्ष आय होने पर प्रबंधक, मुनीम, गुमाश्ता, प्रतिनिधि आदि चोर होता है। वृष या श्वान आय होने पर चोर अन्त्यज जाति का होता है॥ ११-१२॥

॥ नष्टवस्तुदिशाज्ञानम् ॥

ध्वजे पूर्वगतश्चैव धूम्रे चाग्नेय दिग्गतम्।
सिंहे च दक्षिणे वस्तु श्वाने नैर्ऋत एव च॥ १३॥
पश्चिमे वृषभे ज्ञेयं वायव्याञ्च खरे तथा।
उत्तरे कुञ्जरे द्रव्यमीशान्या ध्वाङ्क्षके तथा॥ १४॥

अन्वयः—ध्वजे च पूर्वगतं एव, धूम्रे च आग्नेय दिग् गतम्। सिंहे वस्तु दक्षिणे, श्वाने च नैर्ऋत एव। वृषभे पश्चिमे तथा वायव्यां खरे ज्ञेयम्। कुञ्जरे द्रव्यं उत्तरे, तथा ईशान्ये ध्वाङ्क्षके॥ १३-१४॥

ऋचा०—ध्वज आय होने पर, नष्ट वस्तु पूर्व दिशा में गुम होती है। धूम्र आय में, अग्निकोण में नष्ट वस्तु जाती है। सिंह आय में दक्षिण दिशा में, श्वान में नैर्ऋत्य दिशा में वृषभ आय में पश्चिम दिशा में, खर आय में वायव्य में, गज आय में उत्तर दिशा में तथा ध्वाङ्क्ष आय में ईशान दिशा में नष्ट वस्तु होती है॥ १३-१४॥

॥ प्रश्नाक्षर आयानुसार नष्ट वस्तु दिशा चक्र ॥

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	अष्टदिशा
ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	आय

॥ नष्टवस्तुस्थानज्ञानम् ॥

ऊपरे च ध्वजे नष्टं धूम्रे चाग्निगृहे तथा।
गतं सिंहे तथाऽरण्ये श्वाने स्थानान्तरेऽपि च॥ १५॥

वृषे च शाद्वले नष्टं खरे ग्रामाच्चतुर्दिशि।
नद्यास्तीरे गजे ज्ञेयं ध्वांक्षे वृक्षोपरि वदेत्॥ १६॥

अन्वयः—ध्वजे ऊषरे, धूम्रे च अग्निगृहे नष्टम्। सिंहे अरण्ये तथा श्वाने स्थानान्तरेऽपि च गतम्॥ १५॥

वृषे शाद्वले, खरे ग्रामाच्चतुर्दिशि, गजे नद्यास्तीरे नष्टं ज्ञेयं, ध्वाङ्क्षे वृक्षोपरि वदेत्॥ १६॥

ऋचा०—प्रश्न समय यदि ध्वज आय हो तो नष्ट (गुमशुदा) वस्तु ऊपर भूमि में होती है। धूम्र आय में नष्ट वस्तु अग्निगृह, रसोईघर, ईट भट्ठा आदि में या इनके समीप होती है। सिंह आय में वन में, तथा श्वान में गृह स्वामी के ही किसी दूसरे घर में या पड़ोसी के घर में वस्तु होती है।

वृष आय में चारागाह में, खर आय में ग्राम के चारों तरफ़ की भूमि में, गज आय में नदी तीर में अथवा यानशाला (गैरेज) आदि में नष्ट वस्तु होती है, तथा ध्वाङ्क्ष आय में वृक्षादि ऊँची जगह पर खोई हुई वस्तु को खोजना चाहिये॥ १५-१६॥

॥प्रवासि-कुशलप्रश्नः॥

ध्वजे, सिंहे वृषे चैव कुञ्जरे कुशलं भवेत्।
ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति कुशलं वदेत्॥ १७॥

अन्वयः—ध्वजे, सिंहे, वृषे, कुञ्जरे चैव कुशलं भवेत्। ध्वाङ्क्षे, श्वाने, खरे, धूम्रे (च) कुशलं नास्ति इति वदेत्॥ १७॥

ऋचा०—प्रश्न के अवसर पर प्रश्नकर्त्ता के मुख से निकले फल पुष्पादि के प्रथमाक्षर अथवा प्रश्न के प्रथमाक्षर के अनुसार यदि ध्वज, सिंह, वृष एवं गज आय हों तो प्रवासी-कुशल प्रश्न में प्रवासी की कुशल होती है। परन्तु ध्वाङ्क्ष, श्वान, खर या धूम्र आयों में कुशल नहीं होती॥ १७॥

॥ प्रवासि चिरस्थिर प्रश्नः॥

ध्वजे गजे स्थिरश्चैव, श्वाने सिंहे चञ्चलः।
वृषे धूम्रे प्रयाणस्थः, खरे ध्वांक्षे च कण्टकः॥ १८॥

अन्वयः—ध्वजे, गजे च स्थिर एव, श्वाने सिंहे चञ्चलः, वृषे धूम्रे प्रयाणस्थः, खरे ध्वाङ्क्षे च कण्टकः॥ १८॥

ऋचा०—यदि प्रश्न में यह पूछा जाये कि प्रवासी अपने स्थान से चला है अथवा नहीं तो प्रश्न में ध्वज एवं गज आय होने पर प्रवासी स्थिर है, ऐसा कहना चाहिये। श्वान सिंह इन आयों में कई स्थानों पर घूम रहा है। वृष तथा धूम्र आयों में चलने की तैयारी में है तथा यदि खर एवं ध्वांक्ष आय हो तो प्रवासी किसी रोग, शत्रु आदि के सङ्कट में फँस गया है॥ १८॥

॥ पथिकस्य शत्रुसैन्यस्य वा दूरत्वज्ञानम्॥

ध्वजे धूम्रे समीपस्थो, दूरस्थो गज-सिंहयोः।
वृषे, खरे च मार्गस्थो, ध्वांक्षे श्वाने पुनर्गतः॥ १९॥

अन्वयः—ध्वजे, धूम्रे समीपस्थः, गजसिंहयोः दूरस्थः, वृषे खरे च मार्गस्थः, ध्वाङ्क्षे श्वाने पुनर्गतः (इति विजानीयात्) ॥ १९ ॥

ऋचा०—जब प्रश्न यह हो कि प्रवासी, आगन्तुक अथवा शत्रुसेना कितनी दूर है तब यदि ध्वज एवं धूम आय हों तो घर के बिलकुल पास हैं ऐसा बताना चाहिये। गज एवं सिंह आयों में दूर हैं ऐसे कहे। वृष एवं खर आयों में बीच रास्ते में हैं तथा ध्वाङ्क्ष एवं श्वान आयों में रास्ते में से बापस अपने स्थान को लौट गया है—ऐसा कहना चाहिये ॥ १९ ॥

आजकल दूर संचार के साधनों में मोबाइल फोन जैसे सुविधा से घर में आने वाले मेहमान या बारात आदि कहाँ पर है इसका तुरन्त पता चल जाता है, परन्तु प्राचीन काल में तो ज्योतिष ही एक मात्र सहारा होता था तब इस प्रकार के प्रश्न प्रचुरता से पूछे जाते थे।

॥ कार्यावधिप्रश्नः ॥

ध्वजे पक्षमिति प्रोक्तं, धूम्रे सप्तदिनं तथा।
एकविंशच्च सिंहे च, श्वाने मासं तथैव च॥ २० ॥
वृषे तु सार्धमासं च, खरे मासद्वयं तथा।
गजे मासत्रयं प्रोक्तं, ध्वाङ्क्षे ह्ययनसम्मितम्॥ २१ ॥

अन्वयः—ध्वजे पक्षं तथा धूम्रे सप्तदिनं, सिंहे च एकविंशत् तथैव च श्वाने मासं प्रोक्तं, वृषे तु सार्धमासं तथा च खरे मासद्वयं, गजे मासत्रयं, ध्वाङ्क्षे हि अयनसम्मितं प्रोक्तम्॥ २०-२१ ॥

ऋचा०—जब प्रश्न यह हो कि अमुक कार्य कितने दिन में होगा अथवा आगन्तुक कितने समय में आयेगा? तब उसका उत्तर इस प्रकार है—

प्रश्न समय ध्वज आय होने पर एक पक्ष, धूम्र आय में सप्ताह, सिंह में तीन सप्ताह, श्वान आय में एक मास, वृष में डेढ़ मास (१॥ महीना), खर में दो मास, गज में तीन मास तथा ध्वाङ्क्ष में अयन (छह मास) भर समय लगता है॥ २०-२१ ॥

॥ धातु जीवमूल चिन्ता प्रश्नः ॥

ध्वजे धूम्रे धातुचिन्ता गजे सिंहे च मूलकम्।
श्वाने खरे वृषे ध्वाङ्क्षे जीवचिन्तां वदेद् बुधः ॥ २२ ॥

अन्वयः—ध्वजे धूम्रे (च) धातुचिन्ता, गजे सिंहे च मूलकं (चिन्ता), श्वाने, खरे, वृषे ध्वाङ्क्षे च बुधः जीवचिन्तां वदेत्॥ २२॥

ऋचा०—मूक प्रश्न पूछे जाने पर प्रश्न में यदि ध्वज या धूम्र में से कोई आय हो तो पृच्छक को धातुसम्बन्धी चिन्ता कहनी चाहिये, गज एवं सिंह आयों में मूल सम्बन्धी चिन्ता होती है। शेष श्वान, खर, वृष या ध्वाङ्क्ष में से कोई भी आय प्रश्न में होनेपर दैवज्ञ को जीवनसम्बन्धी चिन्ता बतानी चाहिये॥ २२॥

॥ धातुज्ञानम् ॥

ध्वजे सुवर्णकं ज्ञेयं धूम्रे रौप्यं तथैव च।
सिंहे ताम्रं च विज्ञेयं श्वाने लौहं तथैव च॥ २३॥

वृषे कांस्यं खरे बंगं कथितं शीसकं गजे।
ध्वाङ्क्षे पित्तलकं ज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः॥ २४॥

अन्वयः—ध्वजे सुवर्णकं तथैव च धूम्रे रौप्यं ज्ञेयम्। सिंहे ताम्रं तथैव च श्वाने लौहं विज्ञेयम्। वृषे कास्यं खरे नागं गजे शीसकं कथितम्। ध्वाङ्क्षे गणकोत्तमैः पित्तलं कथितम्॥ २३-२४॥

ऋचा०—जब धातुचिन्ता का निश्चय हो जाये कि कौन-सी धातु है तो पृच्छक से पुनः किसी फलादि का नाम लेने को कहे उसके अनुसार ध्वज आय होने पर स्वर्ण धातु की चिन्ता, धूम्र आय में चाँदी की चिन्ता, सिंह में ताम्र की चिन्ता, श्वान में लोहा की चिन्ता, वृष में काँसे की चिन्ता, खर में वङ्ग की चिन्ता, गज में सीसे की चिन्ता, तथा ध्वाङ्क्ष में पीतल की चिन्ता कहनी चाहिये॥ २३-२४॥

॥ आयानुसारं धातुचिन्ताज्ञापकचक्रम्॥

क्रम	आय	धातु	आंग्लनाम	लैटिन नाम
१.	ध्वज	सुवर्ण	Gold	Aurum
२.	धूम्र	रौप्य	Silver	Argentum
३.	सिंह	ताम्र	Copper	Cuprum
४.	श्वान	लौह	Iron	Ferrum
५.	वृष	कांस्य	Bronze	
६.	खर	वङ्ग (रङ्ग)	Tin	Stennum
७.	गज	सीसक	Lead	Plumbum
८.	ध्वांक्ष	पित्तल	Brass	

॥ आभूषण-ज्ञानम्॥

ध्वजे आभूषणं मूर्ध्नि धूम्रे तु मुखभूषणम्।
कण्ठस्याभूषणं सिंहे श्वाने च कर्णयोरिदम्॥ २५॥
वृषे हस्तभवं ज्ञेयं, अङ्गुलीभूषणं खरे।
गजे तु कटिसूत्रं स्यात् ध्वाङ्क्षे पादादिकं तथा॥ २६॥

अन्वयः—ध्वजे मूर्ध्नि आभूषणं, धूम्रे मुखभूषणं सिंहे कण्ठस्याभूषणं, श्वाने च इदं (आभूषणं) कर्णयोः। वृषे हस्तभवं, खरे अङ्गुलीभूषणं ज्ञेयं, गजे कटिसूत्रं तथा ध्वाङ्क्षे पादादिकं (आभूषणं) स्यात्॥ २५-२६॥

ऋचा०—प्रश्नकाल में यदि ध्वज आय हो और आभूषणसम्बन्धी प्रश्न हो तो सिर में धारण किया जाने वाला आभूषण होता है। धूम्र आय में मुख का आभूषण होता है। सिंह में कण्ठ का आभूषण होता है। इसी प्रकार श्वान आय में कर्ण का आभूषण होता है। वृष आय में हाथों में धारण किया जाने वाला आभूषण होता है। खर आय में अङ्गुलियों में पहना जाने

वाला आभूषण हुआ करता है। गज आय में कटिसूत्र तथा ध्वाङ्क्ष में पैरों में धारण किया जाने वाला आभूषण होता है॥ २५-२६॥

॥ मुष्टिप्रश्ने वस्तुवर्णज्ञानम्॥

कुसुमञ्च ध्वजे ज्ञेयं धूम्रे श्वेतं तथैव च।
लोहिताङ्गं भवेत्सिंहे श्वाने पाण्डुरनीलकम्॥ २७॥
पीतवर्णं वृषे ज्ञेयं खरे च मिश्रवर्णकम्।
गजे च श्यामवर्णं च ध्वाङ्क्षे मिश्रं पुनर्भवेत्॥ २८॥

अन्वयः—ध्वजे कुसुमं तथैव च धूम्रे श्वेतं ज्ञेयम्। सिंहे लोहिताङ्गं, श्वाने पाण्डुर-नीलकम् भवेत्। वृषे पीतवर्णं खरे च मिश्रवर्णकं ज्ञेयम्। गजे च श्यामवर्णं ध्वांक्षे पुनर्मिश्रं भवेत्॥ २७-२८॥

ऋचा०—जब कोई अपनी मुट्ठी में किसी वस्तु को रखकर यह पूछे कि मेरी मुट्ठी में कौन-सी वस्तु है तब उसका रङ्ग आयानुसार निम्न प्रकार का होता है—ध्वज आय में मुष्टिगत वस्तु का वर्ण कुसुम रङ्ग का होता है। धूम्र आय में श्वेत वर्ण की वस्तु होती है। सिंह आय में लाल वर्ण की, श्वान आय में पाण्डु तथा नीला ऐसा मिश्रित रङ्ग होता है। वृष में पीला रङ्ग तथा खर आय में मिश्रित रङ्ग (चितकबरा) होता है। गज आय में श्याम वर्ण तथा ध्वाङ्क्ष में खर की तरह मिश्रित रङ्ग होता है॥ २७-२८॥

॥ मुष्टिगत वस्तुसंज्ञा ज्ञानम्॥

ध्वजे पत्रं च विज्ञेयं धूम्रे पुष्पं प्रकीर्तितम्।
सिंहे फलञ्च विज्ञेयं श्वाने काष्ठादिकं तथा॥ २९॥
वृषे धान्यं तथा प्रोक्तं खरे तृणं निगद्यते।
गजे बीजं च विज्ञेयं तुषं ध्वाङ्क्षे तथा स्मृतम्॥ ३०॥

अन्वयः—ध्वजे पत्रं विज्ञेयं, धूम्रे पुष्पं प्रकीर्तितम्। सिंहे च फलं तथा श्वाने काष्ठादिकं विज्ञेयम्। वृषे धान्यं प्रोक्तं तथा खरे तृणं निगद्यते। गजे च बीजं विज्ञेयं तथा ध्वाङ्क्षे तुषं स्मृतम्॥ २९-३०॥

ऋचा०—अब वस्तु की संज्ञा कहते हैं। यदि ध्वज आय हो तो वह वस्तु किसी वनस्पति का पत्ता होती है। धूम्र में पुष्प होती है। सिंह आय में फल होती है। श्वान में काठ तथा खर आय में मुष्टिगत वस्तु तिनका घास आदि होती है। गज आय में मुष्टिगत वस्तु किसी पौधे का बीज जानना चाहिये तथा ध्वाङ्क्ष नामक आय में तुष होता है। भूसा को तुष कहा जाता है॥ २९-३०॥

॥ मुष्टिगत वस्तु ज्ञापक चक्र॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वाङ्क्ष	आय
पत्र	पुष्प	फल	काष्ठादि	धान्य	तृण	बीज	तुष	मुष्टिगत वस्तु

॥ पुत्र कन्या प्रश्नः ॥

ध्वजे, वृषे, गजे सिंहे गुर्विण्याः पुत्रमादिशेत्।
धूम्रे श्वाने, खरे ध्वाङ्क्षे कन्याजन्म विनिर्दिशेत्॥ ३१ ॥

अन्वयः—ध्वजे, वृषे, गजे, सिंहे गुर्विण्याः पुत्रं आदिशेत। धूम्रे, श्वाने, खरे, ध्वाङ्क्षे कन्याजन्म विनिर्दिशेत्॥ ३१ ॥

ऋचा०—प्रश्न में ध्वज, वृष, गज, सिंह, इन चारों आयों में से कोई भी हो तो गर्भिणी को पुत्रजन्म होगा, ऐसा कहना चाहिये। धूम्र, श्वान, खर तथा ध्वाङ्क्ष इनमें से कोई आय होने पर कन्या का जन्म बतलाना चाहिये॥ ३१ ॥

॥ आयुर्दाय वर्ष ज्ञानम् ॥

ध्वजे सिंहे शतं प्रोक्तं गजे व्योम गजस्तथा।
वृषे च षष्टि वर्षाणि खरे व्योमाब्धिसंज्ञकम्॥ ३२ ॥
श्वाने च विंशतिः प्रोक्ता ध्वाङ्क्षे च षोडशस्तथा।
धूम्रे वर्षमिति ज्ञेयं इत्यायुश्च विचिन्तयेत्॥ ३३ ॥

अन्वयः—ध्वजे, सिंहे शतं (वर्षाणि) तथा गजे व्योमगजः प्रोक्तः। वृषे च षष्टि खरे च व्योमाब्धिसंज्ञकं वर्षाणि। श्वाने च विंशतिः तथा ध्वाङ्क्षे षोडशः प्रोक्तः। धूम्रे वर्षमिति ज्ञेयं इति च आयुः विचिन्तयेत्॥ ३२-३३ ॥

ऋचा०—प्रश्न में ध्वजा आय होने पर एक सौ वर्ष की आयु होती है। गज आय होने पर अस्सी वर्ष की आयु होती है। वृष आय में साठ वर्ष की आयु होती है। खर आय में चालीस वर्ष की आयु होती है। श्वान आय में बीस वर्ष की आयु होती है। ध्वाङ्क्ष में सोलह वर्ष की आयु हुआ करती है। धूम्र आय में सबसे कम केवल एक वर्ष की आयु होती है॥ ३२-३३ ॥

जब कोई प्रश्नकर्त्ता आयु के सम्बन्ध में प्रश्न करे तब इन श्लोकों के आधार पर उत्तर देना चाहिये। परन्तु उत्तर देते समय यह बताना चाहिये कि आपकी या जिसके सम्बन्ध में प्रश्न है उसकी आयु इतने से इतने वर्ष के मध्य होगी। जैसे धूम्र आय में एक से १६ वर्ष के मध्य, ध्वांक्ष में सोलह से बीस के मध्य।

॥ जय-पराजयप्रश्नः ॥

ध्वजे गजे वृषे सिंहे स्थायिनो जयमाप्नुयुः।
धूम्रे, श्वाने, खरे, ध्वाङ्क्षे यायिनो जयमादिशेत्॥ ३४॥

अन्वयः—ध्वजे, गजे वृषे सिंहे स्थायिनः जयं आप्नुयुः। धूम्रे श्वाने, खरे, ध्वाङ्क्षे यायिनः जयं आदिशेत्॥ ३४॥

ऋचा०—जब जीत या हार का प्रश्न हो तो ध्वज, गज, वृष, सिंह इनमें से कोई आय प्रश्न में हो तो स्थायी की जय होती है। यदि धूम्र, श्वान, खर, ध्वाङ्क्ष इनमें से कोई आय हो तो यायी की जय होती है॥ ३४॥

मुकदमे युद्ध तथा विवाद में तथा खेलों के मैच में इस श्लोक से जीत-हार का निर्णय करना चाहिये। नीचे यायी तथा स्थायी की व्याख्या की जा रही है—

यायी—(१) युद्ध में जो पहिले आक्रमण या चढ़ाई करता है उस आक्रान्ता राजा या सेनापति या सैन्य दल को **यायी** कहा जाता है। यह अग्रसर भी कहलाता है। उसे अंग्रेजी में **अटेकर** (Attacker) कहा जाता है।

(२) किसी दीवानी या माल के वाद (मुकदमें) में जो प्रार्थी या आवेदक होता है, जिसे अरबी में मुद्दई कहते हैं तथा अंग्रेजी में **अप्लीकेण्ट** (Applicant) कहा जाता है वह भी यायी कहा जाता है। इसे वादी भी कहते हैं।

(३) फौजदारी मुकदमें में जो प्रार्थी या फरियादी होता है, जिसे अंग्रेजी में **प्लैण्टिफ** (Plaintiff) कहा जाता है वह भी यायी होता है।

(४) खेल में जो टीम पहिले गेंद फेंकती है वह यायी होती है।

स्थायी—(१) इसे नगराधिप या पुरेश भी कहते हैं जो अपने स्थान पर स्थित होता है उसे स्थायी कहते हैं। युद्ध में जिस पर आक्रमण होता है वह राजा, राष्ट्राध्यक्ष, राष्ट्र तथा सैन्य पक्ष स्थायी कहलाता है। यह अरबी में मुदर्ग्र तथा अंग्रेजी में **डिफेण्डर** (Defender) कहलाता है। यह आक्रान्त पक्ष है। यह स्थायी है।

(२) फौजदारी मामलों में जो प्रति प्रार्थी अथवा **प्रतिवादी** होता है, जिसे अंग्रेजी में **डिफेण्डेण्ट** (Defendant) कहते हैं वह भी स्थायी कहलाता है। यह बचाव पक्ष होता है।

(३) दीवानी एवं माल के मुकदमों में जो प्रतिवादी होता है उसे अंग्रेजी में **नॉनएप्लीकेण्ट** (Non-Applicant) कहते हैं वह भी स्थायी होता है।

(४) खेलों में जो पक्ष (टीम) गेंद को पकड़ती है या वापिस लौटाती है वह **स्थायी** होती है।

(५) इसी प्रकार वाद-विवाद में जो प्रश्न का उत्तर देने वाला पक्ष होता है वह **स्थायी** तथा पूछने की शुरूआत करने वाला **यायी** होता है।

॥ जनश्रुति-सत्याऽसत्यप्रश्नः ॥

उपश्रुतिः स्याद् भवतीति सत्या ध्वजे गजे सिंह वृषे तु प्रश्ने।
श्वाने, खरे, ध्वाङ्क्षकधूम्र एवमुपश्रुतिः स्याद् भवतीति मिथ्या॥ ३५॥

अन्वयः—प्रश्ने तु ध्वजे, गजे, सिंहे वृषे तु उपश्रुति सत्या स्यात् भवति इति। श्वाने, खरे, ध्वांक्षके धूम्रे उपश्रुतिः मिथ्या भवति इति॥ ३५॥

ऋचा०—यदि कोई प्रश्न करे कि अमुक जनश्रुति (अफवाह) सत्य है या झूठ तो प्रश्न समय में ध्वज, गज, सिंह तथा वृष में से कोई आय होने पर जनश्रुति (उपश्रुति) सत्य होती है। परन्तु श्वान, खर, धूम एवं ध्वाङ्क्ष में से कोई आय होने पर वह उपश्रुति (प्रवाद या अफवाह) झूठी होती है॥ ३५॥

॥ वृष्टि-प्रश्नः ॥

धूम्रे वृषे गजे श्वाने वृष्टिर्भवति चोत्तमा।
ध्वजे सिंहे विलम्बश्च, खरे ध्वाङ्क्षे न वर्षणम्॥ ३६॥

अन्वयः—धूम्रे, गजे, वृषे श्वाने (च) वृष्टिः उत्तमा भवति। ध्वजे सिंहे च विलम्बः। खरे ध्वाङ्क्षे वर्षणम् न॥ ३६॥

ऋचा०—जब वर्षा सम्बन्धी प्रश्न हो और प्रश्न में धूम्र, गज, वृष, श्वान, इनमें से कोई आय हो तो वर्षा उत्तम होती है। यदि ध्वज या सिंह आय हो तो देर से वर्षा होती है। खर तथा ध्वांक्ष आयों में वर्षा नहीं होती॥ ३६॥

॥ वर्षादिन-प्रमाणम्॥

धूम्रे सप्तदिनं प्रोक्तं वृषे दिग्भिस्तथैव च।
श्वाने च विंशतिर्ज्ञेया गजे च सप्तविंशतिः॥ ३७॥
सिंहे ध्वजे च व्योमाब्धिः खरे ध्वाङ्क्षे ऋतुस्तथा।
वर्षाकाले क्रमो ह्येष कथितो गणकोत्तमैः॥ ३८॥

अन्वयः—धूम्रे सप्तदिनं तथैव च वृषे दिग्भिः। श्वाने च विंशतिः गजे च सप्तविंशतिर्ज्ञेया। सिंहे ध्वजे च व्योमाब्धिः तथा खरे ध्वाङ्क्षे ऋतुः। गणकोत्तमैः वर्षाकाले ह्येष क्रमो कथितः॥ ३७-३८॥

ऋचा०—कितने दिन तक वर्षा होगी? इसके लिये उत्तम ज्योतिषियों ने यह क्रम बतलाया है—धूम्र आय में प्रश्न हो तो सात दिन तक वर्षा होगी, वृष आय में वर्षा के दिन दस होते हैं। श्वान आय में बीस दिन वर्षा होती है। गज आय में सत्ताईस दिन वर्षा का प्रमाण है। सिंह या ध्वज आय होने पर ४० (चालीस) दिन वर्षा प्रमाण है। खर या ध्वाङ्क्ष आयों में वर्षा-प्रश्न होने पर ऋतु (२ मास) वर्षा होती है॥ ३७-३८॥

॥ स्त्री-लाभालाभप्रश्नः ॥

ध्वजे च सिंहे च वृषे च शीघ्रम्
स्त्रियं सुरूपां लभते सुशीलाम्।
श्वाने, गजे ध्वाङ्क्ष-खरे च धूम्रे
कार्यस्य हानिः कलहस्तथैव॥ ३९॥

अन्वयः—ध्वजे, सिंहे, वृषे च शीघ्रं सुरूपां, सुशीलां स्त्रियं लभते। श्वाने, गजे, ध्वाङ्क्ष खरे, धूम्रे कार्यस्य हानि तथैव कलहः॥ ३९॥

ऋचा०—यदि स्त्री लाभ या प्राप्ति का प्रश्न हो और उस समय प्रश्न में ध्वज, सिंह या वृष में से कोई आय हो तो शीघ्र ही सुन्दर, सुशील, स्त्री की प्राप्ति होती है। श्वान, गज, ध्वाङ्क्ष खर या धूम्र में से कोई आय होने पर कार्य की हानि होती है अर्थात् स्त्री प्राप्ति नहीं होती तथा कलह होता है॥ ३९॥

॥ व्यवहार-प्रश्नः ॥

ध्वजे, गजे, वृषे सिंहे व्यवहारः शुभावहः।
ध्वाङ्क्षे श्वाने खरे धूम्रे कलहाऽऽद्यशुभप्रदः॥ ४०॥

अन्वयः—ध्वजे, गजे, वृषे, सिंहे व्यवहारः शुभावहः। ध्वाङ्क्षे, श्वाने, खरे, धूम्रे कलहादि अशुभ (फल) प्रदः॥ ४०॥

ऋचा०—लेन-देन, सम्पर्क, रिश्तेदारी मैत्री आदि कर्म व्यवहार होते हैं। जब प्रश्न में ध्वज, गज, वृष या सिंह में से कोई आय हो तो सम्बन्धित व्यक्ति से व्यवहार शुभ होगा ऐसा बताना चाहिये; क्योंकि ये आय शुभ फल देने वाले होते हैं। परन्तु ध्वाङ्क्ष, श्वान, खर तथा धूम्र आय के व्यवहार प्रश्न में व्यवहार का फल कलह लड़ाई-झगड़ा आदि होता है॥ ४०॥

॥ राज्याप्ति-प्रश्नः ॥

गजे ध्वजे चिरात् प्राप्तिर्वृषे सिंहे च शीघ्रता।
श्वाने खरे न च प्राप्तिर्शत्रुर्गृह्णाति वै ध्रुवम्॥ ४१॥
ध्वाङ्क्षे धूम्रे पदं नास्ति कलहो भ्रातृभिः सह।
राजयोगविचारेषु कथितो गणकोत्तमैः॥ ४२॥

अन्वयः—राजयोगविचारेषु गणकोत्तमैः कथितः (यत्) गजे ध्वजे चिरात् (राज्य) प्राप्तिः, च वृषे, सिंहे च शीघ्रता, च श्वाने खरे प्राप्तिर्न ध्रुवं वै शत्रुः गृह्णाति। ध्वाङ्क्षे धूम्रे नास्ति राज्य (पदम्) च भ्रातृभिः कलहः॥ ४१-४२॥

ऋचा०—जब राज्य, अधिकार या पद प्राप्ति का प्रश्न हो या चुनाव में सफलता का प्रश्न हो तब यदि गज, ध्वज में से कोई आय हो तो चिरकाल में राज्यप्राप्ति होती है या सफलता मिलती है। यदि वृष या सिंह आय हो तो शीघ्र ही राज्य प्राप्ति होती है या उसी चुनाव में सफलता मिल जाती है। श्वान या खर आय में राज्य प्राप्ति नहीं होती अपितु पृच्छक या उसका पक्ष शत्रु के हाथों मात खाता है या असफल रहता है। ध्वांक्ष या धूम्र आय होने पर भाइयों के साथ कलह के कारण पद प्राप्ति नहीं होगी अथवा चुनाव में भीतरघात के कारण असफलता हाथ लगती है। उत्तम ज्योतिषियों ने राजयोग के विचार में ऐसा कहा है॥ ४१-४२॥

॥ नौका कुशल प्रश्नः ॥

ध्वज कुञ्जर सिंहेषु वृषे च कुशलान्विता।
ध्वाङ्क्षे, धूम्रे, खरे श्वाने ध्रुवं नौका निमज्जति॥ ४३॥

अन्वयः—ध्वज-कुञ्जर-सिंहेषु वृषे च (नौका) कुशलान्विता। ध्वाङ्क्षे धूम्रे, खरे श्वाने नौका ध्रुवं निमज्जति॥ ४३॥

ऋचा०—जब समुद्री मार्ग से व्यापार के लिये नौका भेजी गयी हो अथवा कोई ट्रक माल बेचने या लेने गया हो, तब उसकी कुशल-क्षेम के लिये किये गये प्रश्न का उत्तर निम्न प्रकार देना चाहिये—

यदि प्रश्नाक्षरों से ध्वज, कुञ्जर, सिंह या वृष आय हो तो नौका या ट्रक आदि को

सकुशल समझना चाहिये। यदि ध्वाङ्क्ष, धूम्र, खर या श्वान इनमें से कोई आय हो तो नौका, जलपोत या ट्रक आदि को दुर्घटनाग्रस्त समझना चाहिये या मुसीबत में फँसा हुआ समझना चाहिये॥ ४३॥

॥ अधिकार-प्राप्तिप्रश्नः॥

ध्वजे गजे चिरात् प्राप्तिर्वृषे सिंहे च सत्वरम्।
कलहश्च खरे श्वाने नास्ति च ध्वाङ्क्ष-धूम्रयोः॥ ४४॥

अन्वयः—ध्वजे च गजे चिरात् प्राप्तिः। वृषे च सिंहे सत्वरम् (प्राप्तिः)। खरे श्वाने च कलहः। ध्वाङ्क्ष धूम्रयोः नास्ति॥ ४४॥

ऋचा०—किसी पद विशेष, भू-भाग, सम्पत्ति आदि पर कब्जे का प्रश्न होने पर यदि ध्वज या गज आय हो तो देर में अधिकार मिलेगा। वृष या सिंह आय शीघ्र ही अधिकार दिलाते हैं। खर एवं श्वान में से कोई आय होने पर कलह होता है तथा ध्वाङ्क्ष या धूम्र में से कोई आय हो तो अधिकार-प्राप्ति नहीं होती॥ ४४॥

॥ ग्रामादि-प्राप्तिप्रश्नः॥

ध्वजे गजे वृषे सिंहे ग्रामप्राप्तिर्भवेद् ध्रुवम्।
श्वाने खरे तथा ध्वाङ्क्षे धूम्रे नास्तीति निश्चितम्॥ ४५॥

अन्वयः—ध्वजे, गजे, वृषे सिंहे (वा) ग्रामप्राप्तिः ध्रुवं भवेत्। श्वाने, खरे, ध्वाङ्क्षे तथा धूम्रे नास्ति इति निश्चितम्॥ ४५॥

ऋचा०—यदि प्रश्न में पूर्वोक्त विधि से ध्वज, गज, वृष या सिंह में से कोई आय हो तो सुनिश्चित रूप से ग्राम आदि की प्राप्ति होगी। परन्तु श्वान, खर, ध्वाङ्क्ष या धूम्र में से कोई आय होने पर ग्रामादि की प्राप्ति नहीं होती॥ ४५॥

प्राचीन काल में राजा लोग प्रसन्न होकर ग्रामदान कर देते थे अतः उस ग्राम की भूमि की उपज का कुछ भाग उनको प्राप्त हो जाता था। आजकल इसके स्थान पर पेंशन का प्रबन्ध शासन की ओर से होता है, अस्तु जीवन निर्वाह भत्ता या पेंशन का विचार इस श्लोक से करना समीचीन है।

॥ कार्यसिद्धि-प्रश्नः॥

ध्वजे गजे चिरात् कार्यं त्वरितं वृषसिंहयोः।
दीर्घकाले खरे श्वाने ध्वाङ्क्षे धूम्रे न सिध्यति॥ ४६॥

अन्वयः—ध्वजे, गजे (वा) कार्यं चिरात्, वृषसिंहयोः त्वरितं, खरे श्वाने दीर्घकाले (भवेत्)। ध्वाङ्क्षे धूम्रे न सिध्यति॥ ४६॥

ऋचा०—यदि कार्य सिद्धि का प्रश्न हो तो ध्वज एवं गज आय चिरकाल में कार्यसिद्धि के सूचक होते हैं। वृष एवं सिंह आयों में शीघ्र ही कार्य सम्पन्न होता है। खर एवं श्वान इनमें से कोई आय हो तो बहुत चिरकाल में कार्य सिद्ध होता है। परन्तु ध्वाङ्क्ष या धूम्र इनमें से कोई आय होने पर कार्य कभी सिद्ध नहीं होता॥ ४६॥

॥ बन्दि-मोक्ष-प्रश्नः ॥

धूम्रे, श्वाने, खरे, ध्वाङ्क्षो बन्दी शीघ्रं प्रमुच्यते।
ध्वजे गजे वृषे सिंहे बन्दिकष्टं समादिशेत्॥ ४७॥

अन्वयः—धूमे, श्वाने, खरे, सिंहे (वा) बन्दी शीघ्रं प्रमुच्यते। ध्वजे, गजे, वृषे, सिंहे (वा) बन्दिकष्टं समादिशेत्॥ ४७॥

ऋचा०—जब कारागार में पड़े व्यक्ति या पुलिस हिरासत में निरुद्ध व्यक्ति या अपहरण कर्त्ताओं के चङ्गुल में पड़े व्यक्ति के सम्बन्ध में प्रश्न किया जावे तब यदि धूम्र, श्वान, खर या ध्वाङ्क्ष में से काई आय हो तो वह व्यक्ति कारागार, पुलिस या डाकुओं के चङ्गुल से शीघ्र मुक्त होगा। इसके विपरीत यदि ध्वज-गज-वृष-सिंह इनमें से कोई आय हो तो बन्दी कष्ट में रहेगा। बड़ी कठिनाई से ही उसका मुक्त होना सम्भव होगा॥ ४७॥

यहाँ पर शुभ आय बन्दी को पीड़ाकारक तथा अशुभ आय बन्दि-मोक्षप्रद होते हैं। यहाँ महर्षि पाराशर के इस सिद्धान्त की पुष्टि होती है—

''न दिशन्ति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपा यदि। क्रूराश्चेदशुभम्।''

अर्थात् सौम्य (नैसर्गिक) शुभग्रह यदि केन्द्रों के स्वामी होते हैं तो शुभफल नहीं देते तथा पाप ग्रह केन्द्रेश होने पर अशुभफल नहीं देते।

॥ कार्यसिद्ध्यर्थं देवपूजा ॥

ध्वजे भैरवपूजा स्याद् धूम्रे च जगदंबिकाम्।
सिंहे च पूजयेत् सूर्यं श्वाने वायुसुतं तथा॥ ४८॥
वृषे शिवार्चनं चैव खरे वागीश्वरी तथा।
गणेशं गजराजाख्ये ध्वाङ्क्षे च पितृपूजनम्॥ ४९॥

अन्वयः—ध्वजे भैरवपूजा स्यात् च धूम्रे जगदम्बिकां (पूजयेत्)। सिंहे च सूर्यं तथा श्वाने वायुसुतं पूजयेत्। वृषे शिवार्चनं च एव, तथा खरे वागीश्वरी, गजराजाख्ये गणेशं च ध्वाङ्क्षे पितृपूजनम्॥ ४८-४९॥

ऋचा०—जब कोइ यह पूछे कि ''मैं अपने कार्य की सिद्धि के लिये कौन से देवता की पूजा करूँ?'' तब पृच्छक के गुण से प्रश्न के प्रथमाक्षर अथवा फल, पुष्पादि के प्रथमाक्षर से प्राप्त आय के अनुसार उत्तर दें।

यदि ध्वज आय हो तो भैरव की पूजा करने से कार्य सिद्ध होता है। धूम्र आय होने पर जगदंबा का पूजन करना अभीष्ट होता है। सिंह आय में सूर्य की पूजा करें। श्वान में वायुपुत्र हनुमान् जी की पूजा करें। वृष आय में शिवार्चन करें। खर आय में सरस्वती की पूजा करें। गज आय में श्रीगणेश जी की पूजा करने से कार्य की सिद्धि होती है। ध्वाङ्क्ष नामक आय में पितरों की पूजा करने से सफलता मिलती है॥ ४८-४९॥

॥ कार्यसिद्ध्यर्थं दानादिव्यवस्था ॥

गोधूमान्नं ध्वजे दद्यात् धूम्रे चैव तिलांस्तथा।
पीतवस्त्रं च सिंहे तु श्वाने च बलिविस्तरम्॥ ५०॥

वृषे च तण्डुला: प्रोक्ता: खरे चणकधान्यकम्।
गजे गुडं तथा दद्याद् ध्वाङ्क्षे च यवधान्यकम्॥ ५१॥

अन्वय:—ध्वजे गोधूमात्रं च धूम्रे तिलान् दद्यात्। तथा सिंहेषु पीतवस्त्रं, श्वाने बलिविस्तरम् (दद्यात्)। वृषे च तण्डुल: खरे च चणकधान्यकं प्रोक्तम्। गजे गुडं च ध्वाङ्क्षे यव धान्यकं दद्यात्॥ ५०-५१॥

ऋचा०—कार्य सिद्धि हेतु देवपूजा के अतिरिक्त वस्तुओं के दान का विधान भी है, वह इस प्रकार है—प्रश्न में ध्वज आय होने पर गेहूँ का दान करें। धूम्र आय होने पर तिलों का दान करें। सिंह आय में पीत वस्त्रों का दान करें। श्वान आय में विस्तार से बलि देवें (यह बलि दही भात की देनी चाहिये) वृष आय में तण्डुल दान करें, खर आय में चने का दान करना चाहिये। गज आय होने पर गुड़ का दान करें तथा ध्वाङ्क्ष आय में जौ का दान किया जाता है॥ ५०-५१॥

॥ कार्यसिद्धिहेतु पूजनदानचक्रम्॥

१ ध्वज	२ धूम्र	३ सिंह	४ श्वान	५ वृष	६ खर	७ गज	८ ध्वांक्ष	आय
भैरवपूजा	जगदंबिका पूजा	सूर्यपूजा	हनुमत्पूजा	शिवपूजा	सरस्वतीपूजा	गणेशपूजा	पितृपूजा	देवपूजा
गेहूँ	तिल	पीतवस्त्र	दध्योदनबलि	चावल	चना	गुड़	जौ	दान

॥ गृहप्रश्ने आयानां फलम्॥

कीर्ति: शोको जयो वैरं धनं निर्धनता सुखम्।
रोगश्चेति गृहारंभे ध्वजादीनां फलं क्रमात्॥ ५२॥

अन्वय:—गृहारंभे ध्वजादीनां फलं क्रमात् कीर्ति: शोक: जय: वैरं, धनं, निर्धनता, सुखं, च रोग इति॥ ५२॥

ऋचा०—जब कोई प्रश्न करे कि मैं घर बनाना चाहता हूँ, कैसा रहेगा? तब प्रश्नसमय यदि ध्वज आय हो तो कीर्तिप्रद, धूम्र आय हो तो शोकप्रद, सिंह आय हो तो जयप्रद, श्वान आय हो तो वैरप्रद, वृष आय हो तो धनदायक, खर आय होने पर निर्धनतादायक, गज आय होने परसुखकारक तथा ध्वाङ्क्ष आय होने पर रोगकारक फल होता है॥ ५२॥

॥ कालनियमप्रश्न:॥

ध्वजे सप्तदिनं प्रोक्तं सिंहे पक्षस्तथैव च।
वृषे मासश्च विज्ञेयो गजे मासत्रयं तथा॥ ५३॥

श्वाने खरे च षण्मासं धूम्रे ध्वाङ्क्षे च वर्षकम्।
इति कालं वदेत् प्रश्ने, सर्वकार्येषु चिन्तयेत्॥ ५४॥

अन्वयः—ध्वजे सप्तदिनं, सिंहे पक्षः प्रोक्तम्। तथैव च वृषे मासः, गजे मासत्रयं विज्ञेयः। श्वाने च खरे षण्मासं, धूम्रे ध्वाङ्क्षे च वर्षकम्, प्रश्ने सर्वकार्येषु इति कालं वदेत्, चिन्तयेत्॥ ५३-५४॥

ऋचा०—जब प्रश्न यह हो कि "कार्य सिद्ध कितने दिवस में होगा" तब यदि ध्वज आय है तो सात दिन में कार्य सम्पन्न हो जावेगा। यदि सिंह आय हो तो १५ दिन (पक्ष) में कार्य बनेगा। वृष आय होने पर कार्यसिद्धि में एक मास का समय लगेगा। गज आय होने पर तीन मास लगेंगे। श्वान तथा खर आय होने पर छह मास का समय लगता है। धूम्र एवं ध्वाङ्क्ष में से कोई आय होने पर एक वर्ष में कार्य सिद्ध होता है। प्रश्न में सभी कामों के लिये यह समयावधि विचारणीय कही गयी है॥ ५३-५४॥

॥ प्रश्नकालिक-आयानुसारं कार्यसिद्ध्यवधिः ॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वाङ्क्ष	आय
सात दिन	एक वर्ष	पन्द्रह दिन	छह मास	एक मास	छह मास	तीन मास	एक वर्ष	अवधि प्रमाण

॥ इति केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रहे उत्तरार्धे आय प्रश्नाध्यायः ॥

॥ केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रह के उत्तरार्ध में आयाध्याय की ऋचा हिन्दी टीका पूर्ण ॥

●●

अथ नारदोक्त अङ्गविद्या

अङ्गविद्यां **प्रवक्ष्यामि नारदेन स्वयं** कृताम्।
अङ्गस्पर्शनमात्रेण ज्ञातव्यं हि शुभाशुभम्॥ १॥

अन्वयः—नारदेन स्वयंकृतां अङ्गविद्यां प्रवक्ष्यामि। (येन) अङ्गस्पर्शनमात्रेण शुभाशुभं हि ज्ञातव्यम्॥ १॥

ऋचा०—संग्रहकर्त्ता के अनुसार यह अंगविद्या नारद जी द्वारा स्वयं रची गयी है। इस विद्या से अङ्ग स्पर्शन मात्र से ही शुभाऽशुभ फल का ज्ञान हो जाता है॥ १॥

विशेष—व्यक्ति की चेष्टा से सम्बन्धित यह विद्या उसके मनोभावों को भलीभाँति प्रकट करती है। मनोभावों के फल के अनुसार ही परिणाम भी बाह्य जगत में प्रकट होते हैं। आधुनिक सामुद्रिक शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने इस विषय पर खूब प्रकाश डाला है और 'व्यक्तित्व' विश्लेषण में इस विद्या का उपयोग किया है॥ १॥

॥ उत्तमाङ्गानां स्पर्शफलम्॥

स्पृश्यमाने शिरे पृच्छेन्महालाभो भविष्यति।
हिरण्य-धन-धान्यस्य भवेल्लाभोऽस्य निश्चितम्॥ २॥

अन्वयः—शिरे स्पृश्यमाने पृच्छेत् महालाभो भविष्यति। (तर्हि) निश्चितं हिरण्य-धन-धान्यस्य लाभः अस्य निश्चितं भवेत्॥ २॥

ऋचा०—जब कोई प्रश्नकर्त्ता अपना सिर स्पर्श करते हुए ज्योतिषी से प्रश्न करता है तब उसे स्वर्णादि, धन धान्यादि का सुनिश्चित रूप से लाभ होता है॥ २॥

मुखं च नासिकाञ्चैव चक्षुः श्रवणमेव च।
स्पृशञ्जनो यदा पृच्छेत्तदा लाभं विनिर्दिशेत्॥ ३॥

अन्वयः—यदा जनो मुखं, नासिकां च एव चक्षुः श्रवणं एवं स्पृशन् पृच्छेत् तदा लाभं विनिर्दिशेत्॥ ३॥

ऋचा०—जब प्रष्टा व्यक्ति अपने मुख, नाक, नेत्र, कान आदि का स्पर्श करते हुए प्रश्न पूछता है तब उस व्यक्ति को लाभ होगा—ऐसा कहना चाहिये॥ ३॥

वक्तव्य—श्लोक २-३ में सिर में अवस्थित अङ्गों के स्पर्श का फल अत्यन्त शुभ तथा समृद्धिकारक कहा है। इसका कारण यह है कि सिर शरीर का उत्तमाङ्ग होता है। इसी से व्यक्ति की पहिचान भी होती है। प्राणियों के प्राण तथा सभी इन्द्रियां इसी के भीतर आश्रित तथा सुरक्षित रहती हैं, अतः यह शरीर के सभी अङ्गों में उत्तम अङ्ग है—

''प्राणाः प्राणभृतां यत्राश्रिताः सर्वेन्द्रियाणि च।
यदुत्तमाङ्गमङ्गानां शिरस्तदभिधीयते॥''

—च. सू. अ., १७/१०

इस कारण सिर या उसके उपाङ्गों नाक, कान, आँख, मुख आदि का स्पर्श शुभता का सूचक होता है।

॥ मध्यमाङ्गानां स्पर्शफलम् ॥

ग्रीवां स्कन्धं तथा कण्ठं बाहुञ्चैव तथा स्पृशेत्।
पृच्छति पृच्छको यस्य तस्य लाभोऽल्प एव च॥ ४॥

अन्वयः—पृच्छको ग्रीवां, स्कन्धं कण्ठं, बाहुं च एव स्पृशेत् यस्य (प्रश्नं) पृच्छति तस्य अल्प एव लाभो (भवेत्) ॥ ४॥

ऋचा०—जब पृच्छक ग्रीवा (गर्दन) कन्धों, गले, भुजाओं को स्पर्श करता हुआ प्रश्न करता है, तो जिस वस्तु के बारे में उसकी पृच्छा होती है उसका थोड़े परिमाण में लाभ होता है॥ ४॥

उदरं नाभिमूलं वा स्पृष्ट्वा यः पृच्छति स्वयम्।
अन्नपानं भवेत्तस्य कृषिकर्मेति सिध्यति॥ ५॥

अन्वयः—यः स्वयं उदरं, नाभिमूलं वा स्पृष्ट्वा पृच्छति तस्य अन्नपानं कृषिकर्मणि भवेत् इति सिध्यति॥ ५॥

ऋचा०—जो पृच्छक स्वयं उदर तथा नाभि के नीचे स्पर्श करता हुआ प्रश्न पूछता है, तो उसके यहाँ अन्न जल उत्पन्न होता है तथा उसकी आजीविका कृषि कार्य से ही चलती है॥ ५॥

विराट पुरुष के शरीर में उदरादि वैश्यों का स्थान है और इनका कृषि कर्म सिद्ध ही है।

कटिं शिश्नं तथोरुं च पृच्छको यदि संस्पृशेद्।
कन्यालाभो भवेत्तस्य पुत्रसम्पत्तिरेव च॥ ६॥

अन्वयः—यदि पृच्छकः कटिं, शिश्नं तथा ऊरुं च संस्पृशेत् (तदा) तस्य कन्यालाभो, पुत्रसम्पत्तिः एव च भवेत्॥ ६॥

ऋचा०—जो प्रष्टा अपनी कमर, शिश्न (Penis), ऊरु का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो उसे कन्या एवं पुत्र सन्तति का लाभ होता है॥ ६॥

प्रजननाङ्गों से सम्बन्धित भाग का स्पर्श संततिलाभ का सूचक होता है। श्लोक ४-५-६ में शरीर के मध्य भाग के अङ्ग स्पर्श का फल मध्यम प्रकार का होता है, परन्तु इनमें सफलता अवश्य मिलती है। सिर के पश्चात् इन स्थानों का महत्त्व भी आरोग्य की दृष्टि से ध्यान में रखने योग्य है; क्योंकि सिर के अतिरिक्त प्राणों का निवास हृदय तथा बस्ति (मूत्राशय+वृक्क) में भी प्राणों का निवास होता है—

"हृदये मूर्ध्नि वस्तौ च नृणां प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
तस्मात्तेषां सदा यत्नं कुर्वीत परिपालने॥"

—चरक. सिद्धि. अ. ८/९

॥ अधमाङ्ग-स्पर्शफलम् ॥

जानुजङ्घे तथा गुल्फौ पादौ यदि च संस्पृशेत्।
पृच्छकस्य भवेन्मृत्युः क्लेशो वापि न संशयः ॥ ७ ॥

अन्वयः—जानु-जङ्घे, गुल्फौ पादौ यदि संस्पृशेत् (तदा) पृच्छकस्य मृत्युः क्लेशं वा अपि भवेत् न संशयः ॥ ७ ॥

ऋचा०—यदि पूछने वाला घुटनों, पिंडलियों, टखनों या पैरों का स्पर्श करता हुआ प्रश्न पूछता है, तो उसे निःसन्देह क्लेश की प्राप्ति होगी तथा मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्त होगा ॥ ७ ॥

घुटनों से नीचे के अङ्ग अधमाङ्ग होते हैं।

॥ सदक्षिणा पृच्छा फलम् ॥

फलं पुष्पन्नवं वस्त्रं गृहीत्वा यदि पृच्छति।
सर्वञ्च पृच्छतस्तस्य जायते सफलोदयम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—यदि फलं पुष्पं नवं वस्त्रं गृहीत्वा पृच्छति ततः तस्य पृच्छतः सर्वं सफलोदयं जायते ॥ ८ ॥

ऋचा०—जो पृच्छक, फल, पुष्प, नया वस्त्र (दक्षिणा) आदि लेकर प्रश्न पूछता है तो पूछते ही उसके पूर्व पुण्यों के उदय से उसके कार्य सफल होते हैं, मनोकामनाएं पूरी होती हैं। ज्योतिषी की वाणी सत्य होती है ॥ ८ ॥

॥ निषिद्धद्रव्यसहितं पृच्छाफलम् ॥

अङ्गारकांस्तृणादींश्च गृहीत्वा यदि पृच्छति।
न तस्य जायते सिद्धिः कार्यस्य प्रयतोऽपि हि ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदि अङ्गारकान् तृणादीन् च गृहीत्वा पृच्छति (तदा) कार्यस्य प्रयतोऽपि तस्य सिद्धिः न जायते ॥ ९ ॥

ऋचा०—जो हाथ में कोयला, ठीकरा, तृण आदि लेकर प्रश्न पूछता है, उसके कार्य लाख प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं होते ॥ ९ ॥

बिना दक्षिणा के पूछा गया प्रश्न अथवा निषिद्ध दक्षिणा देकर पूछे गए प्रश्न सदैव असफल होते हैं; क्योंकि यज्ञ की पत्नी का नाम दक्षिणा है।

तथैव

शस्त्रं काष्ठञ्च गन्धञ्च गृहीत्वा यदि पृच्छति।
क्षोभस्तस्य भवेन्नित्यं ग्रहदोषश्च जायते ॥ १० ॥

अन्वयः—यदि शस्त्रं, काष्ठं च गन्धं च गृहीत्वा पृच्छति तस्य नित्यं क्षोभो भवेत् च ग्रहदोषः जायते ॥ १० ॥

ऋचा०—पृच्छक को हाथ में शस्त्र, काष्ठ (लाठी) तथा दुर्गन्धित पदार्थ लेकर प्रश्न

नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से उसे प्रतिदिन क्षोभ होता है तथा ग्रह-दोष से पीड़ा होती है॥ १०॥

वक्तव्य—मूल श्लोक में **गन्धं** शब्द का प्रयोग है अत: मेरी सम्मति में सुगन्धित द्रव्य के साथ प्रश्न पूछना शुभ है, परन्तु दुर्गन्धित पदार्थ या उग्रगन्धी पदार्थ सहित प्रश्न करना अशुभ होगा। अत: यहाँ गन्ध शब्द का अर्थ 'दुर्गन्ध' ग्रहण करना ही समीचीन होगा।

॥ हिरण्यादिदक्षिणाफलम् ॥

हिरण्यं रत्नभाण्डं च गृहीत्वा चान्नपानकम्।
पृच्छकः सिद्धिमाप्नोति, सद्य एव न संशयः॥ ११॥

अन्वयः—हिरण्यं, रत्नभाण्डं, अन्नपानं च गृहीत्वा। पृच्छकः सद्य एव सिद्धिं आप्नोति न संशयः॥ ११॥

ऋचा०—यदि पृच्छक स्वर्ण, रजत, रत्न आदि तथा अन्नपानादि लेकर प्रश्न पूछता है तो उसे तुरंत ही सफलता प्राप्त होती है॥ ११॥

॥ पवित्रभूमि-स्पर्शफलम् ॥

आरामस्य स्पृशन्भूमिं यदा पृच्छति पृच्छकः।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा॥ १२॥

अन्वयः—यदा पृच्छकः आरामस्य भूमिं स्पृशन् पृच्छति तस्य सर्वसिद्धिर्भवेत्। न अत्र विचारणा कार्या॥ १२॥

ऋचा०—जब प्रष्टा बाग-बगीचे की भूमि का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो उसके सभी कार्य सिद्ध होते हैं इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं होती॥ १२॥

देवगेहे नदीतीरे स्थाने चैव मनोरमे।
उपविश्य यदा पृच्छेत्तदा सिद्धिमवाप्नुयात्॥ १३॥

अन्वयः—यदा देवगेहे, मनोरमे स्थाने, नदी तीरे चैव उपविश्य पृच्छेत् तदा सिद्धिं अवाप्नुयात्॥ १३॥

ऋचा०—जब पृच्छक देवालय, नदी तथा अन्य किसी मनोरम स्थल में बैठकर प्रश्न पूछता है तो पृच्छक का कार्य सिद्ध होता है॥ १३॥

॥ प्रश्ने निषिद्धासनफलम् ॥

शुष्ककाष्ठे क्षते दुष्टे गुल्मे भग्ने तदैव च।
स्थानेष्वेतेषु यः पृच्छेत् तस्य क्लेशं समादिशेत्॥ १४॥

अन्वयः—शुष्क काष्ठे, क्षते, दुष्टे, गुल्मे तथैव च—एतेषु स्थानेषु य पृच्छेत् तस्य क्लेशं समादिशेत्॥ १४॥

ऋचा०—जो पृच्छक सूखे काठ, फटे टूटे काठ के आसन पर या झाड़ी आदि के समीप बैठकर प्रश्न पूछता है उसे क्लेश की प्राप्ति कहनी चाहिये। पत्थर आदि पर बैठकर भी प्रश्न नहीं पूछना चाहिये॥ १४॥

॥ प्रश्ने सुखासन फलम् ॥

सुखोपविष्टे दिक्स्थे च पृच्छके सिद्धिरद्भुता।
विदिक्स्थे च दुरासीने कार्यसिद्धिर्न जायते॥ १५॥

अन्वयः—पृच्छके दिक्स्थे सुखोपविष्टे अद्भुता सिद्धिः (भवेत्)। विदिक्स्थे दुरासीनेः न जायते कार्यसिद्धिः॥ १५॥

ऋचा०—जब पृच्छक सही दिशा में सुख पूर्वक बैठकर प्रश्न करता है तब उसका कार्य सिद्ध होता है जब विदिशाओं में तथा दुरासन पर बैठकर प्रष्टा प्रश्न करता है तब उसका कार्य सिद्ध नहीं होता॥ १५॥

वक्तव्य—चार दिशाएं पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण होती हैं। इनमें से सही तौर पर किसी दिशा में बैठना **दिक्स्थ** कहलाता है। परन्तु चारों कोणों में बैठने को विदिक्स्थ कहा जाता है। दिशाओं की माप दैवज्ञ के आसन से की जाती है।

ठीक दिशा में बैठना तथा सुखपूर्वक श्रेष्ठ आसन पर बैठकर प्रश्न करना सफलतादायक होता है। कोनों में, निषिद्ध आसन पर बैठकर दैवज्ञ से प्रश्न पूछना असफलता देता है॥

॥ संक्षेपतः अङ्गस्पर्शफलम् ॥

अङ्गुष्ठकर्णवदनस्तन हस्तकेश
कट्यं सपादतल गुह्य शिरांसि गण्डम्।
ओष्ठं च संस्पृशति वक्ति शुभानि यद्वा
प्रष्टा तदा कलयति ध्रुवमिष्टसिद्धिम्॥ १६॥

अन्वयः—यत् प्रष्टा अङ्गुष्ठ, कर्ण, वदन, स्तन, हस्त, केश, कट्यं, सपादतल, गुह्य, शिरांसि, गण्डं, ओष्ठं च संस्पृशति, वा शुभानि वक्ति तदा ध्रुवं इष्टसिद्धिं कलयति॥ १६॥

ऋचा०—जब प्रष्टा अँगूठा (हाथों का), कान, मुख, स्तन, हाथ, केश, कटि, पगतली, गुप्ताङ्ग, शिर गण्ड (कपोल) ओष्ठ—इनमें से किसी अङ्ग का स्पर्श करता हुआ शुभ वाणी से प्रश्न करता है, तब वह निश्चित रूप से सफलता बटोरता है॥ १६॥

॥ मतान्तरेण ॥

स्पृशेच्छिरो वक्त्र विलोचनं श्रुतिं
प्राप्नोति धान्याम्बर हेम पूर्वकम्।
ग्रीवा हनुस्कन्ध युगं यदा नरो
दुःखात्तदा तस्य विलब्धिमादिशेत्॥ १७॥

अन्वयः—यदा नरो शिरो, वक्त्रं, विलोचनं, श्रुतिं स्पशेत् तदा हेमपूर्वकं धान्याम्बरं प्राप्नोति। ग्रीवा हनुस्कन्धयुगं (स्पृशेत्) तदा तस्य दुःखात् विलब्धिं आदिशेत्॥ १७॥

ऋचा०—अब मतान्तर से अङ्गस्पर्श का फल कहते हैं यदि प्रष्टा शिर, मुख, नेत्र, कान, इनका स्पर्श करता है, तो स्वर्णादि तथा धान्यादि की प्राप्ति होती है। परन्तु यदि ग्रीवा,

ठोड़ी, कन्धे—इनमें से किसी का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करता है, तो उसे असफलता तथा दुःख की प्राप्ति होती है॥ १७॥

नाभिं सकुक्षिं स्पृशतोऽर्थसिद्धिं
गुल्फांघ्रि जानुस्पृशतोऽति दुःखम्।
जङ्घां, कटिं लिङ्गमिह स्पृशेद्यो
कन्यां लभेत सुलभां सुयोगात्॥ १८॥
कचस्पृगेति प्रभुतां फलादि
स्पृष्टं शुभं वै तृण वह्नि शेषम्।
न सिद्धिवान् कर्दम काष्ठ वस्त्र
स्पृक् खेट पीडां लभते तथाऽऽधिम्॥ १९॥

अन्वयः—सकुक्षिं नाभिं स्पृशतः अर्थसिद्धिं गुल्फ अंघ्रि जानु स्पृशतो अति दुःखम्। यो जङ्घां, कटिं, लिङ्गं इह स्पृशेत् स सुयोगात् सुलभां कन्यां लभेत। कच स्पृग् इति प्रभुतां फलादि स्पृष्टं शुभम्। तृण वह्निशेषं वै न सिद्धिवान्। कर्दम, काष्ठ वस्त्र स्पृक् खेट पीडां तथा आधिं लभते॥ १८-१९॥

ऋचा०—यदि प्रश्नकर्त्ता कुक्षि एवं नाभि का स्पर्श करते हुए प्रश्न पूछता है तो कार्यसिद्धि होती है। टखने, पैर, घुटने को छूता हुआ प्रश्न करे तो अतिदुःख होता है। जङ्घा, कमर लिङ्ग इनका स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे उसे सुयोग से श्रेष्ठ कन्या की प्राप्ति होती है।

जो केशों का स्पर्श करता हुआ प्रश्न पूछे तो प्रभुता (ऐश्वर्य) की प्राप्ति होती है। जो फलादि का स्पर्श करता हुआ प्रश्न पूछता है उसको शुभ फल मिलता है। जो तृण या वह्निशेष (कोयला-राख आदि) को स्पर्श करके प्रश्न पूछता है उसका कार्य सिद्ध नहीं होता। जो कीचड़, काठ, या वस्त्र (जीर्ण) का स्पर्श करता हुआ प्रश्न पूछता है उसे ग्रहों द्वारा पीड़ा प्राप्त होती है॥ १८-१९॥

टिप्पणी—श्लोक १६-१७-१८-१९ ये प्रक्षिप्त जान पड़ते हैं, परन्तु किसी-किसी प्रति में इनके होने से यहाँ दे दिये गए हैं।

॥ प्रश्नाक्षरवर्गोपरि लग्नज्ञानम्॥

अवर्गे सिंहलग्नं च कवर्गे मेष-वृश्चिकौ।
चवर्गे यूकवृषभौ टवर्गे युग्म कन्यके॥ १॥
तवर्गे धन-मीनौ च तवर्गे कुंभ-नक्रकौ।
य-शवर्गे कर्कटश्च लग्नं शब्दाक्षरैर्वदेत्॥ २॥

अन्वयः—अवर्गे सिंह लग्नं कवर्गे मेष वृश्चिकौ च। चवर्गे वृषभ यूकौ, टवर्गे युग्म कन्यके, तवर्गे धनमीनौ च, पवर्गे नक्रकुभकौ, यवर्गे शवर्गे च कर्कटश्च (एवं) शब्दाक्षरैः लग्नं वदेत्॥ १-२॥

ऋचा०—लग्न ज्ञानार्थ पृच्छक के मुख से प्रश्न का जो प्रथमाक्षर प्राप्त हो अथवा फल

पुष्पादि के नाम का जो आदि अक्षर हो उसके आधार पर अवर्ग का अक्षर होने पर सिंह लग्न, कवर्ग में मेष तथा वृश्चिक लग्न, चवर्ग में वृष-तुला। टवर्ग में मिथुन कन्या, तवर्ग में धन, मीन, टवर्ग में मकर कुंभ तथा यवर्ग एव शवर्ग का आद्यक्षर होने पर कर्क लग्न होता है ॥ १-२ ॥

॥ वर्गपाः ज्ञानम् ॥

रविः कुजो भृगुर्ज्ञेज्याः शनीन्दू वर्गपाः क्रमात्।
लग्नं तत्र कुजादीनामोजे चोजं समे समम्॥ ३ ॥
तल्लग्नाद् ग्रहयोगैश्च वक्ष्यमाणैः फलं दिशेत्।
प्रश्नोच्चारितवर्णेभ्यो लग्नेशांस्तु कल्पयेत्॥ ४ ॥

अन्वयः—रविः कुजः, भृगुः, ज्ञ इज्यः शनिः इन्दुः क्रमात् वर्गया; तत्र कुजादीनां ओजे ओजं समे समं लग्नम्। ग्रहयोगैः तत् लग्नात् वक्ष्यमाणैः फलं दिशेत्। (एवं) प्रश्नोच्चारित वर्णेभ्य; तु लग्नेशान् कल्पयेत्॥ ३-४॥

व्याख्या०—'अकचटतपयश' इन आठ वर्गों के सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध, गुरु, शनि तथा चन्द्र क्रमशः स्वामी हैं। प्रत्येक वर्ग में पाँच अक्षर प्रायः होते हैं। यदि वर्ग का प्रथम अक्षर वर्ग का विषम अक्षर हो तो भौमादि पञ्च ताराग्रहों में विषम राशि वाला लग्न होगा यदि सम संख्या वाला अक्षर हो तो समराशि वाला लग्न होगा। सूर्य एवं चन्द्र इनका तो एक ही लग्न हैं। इस प्रकार के लग्न में तत्कालीन पंचाङ्ग से ग्रह रखकर फल विचारना चाहिये॥ ३-४॥

॥ (१) ध्वज आय (अवर्ग) में लग्न ज्ञान का चक्र॥

अ/आ	इ/ई	उ/ऊ	ए/ऐ	ओ/औ	अवर्ग के अक्षर
सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सूर्य का लग्न

॥ (२) धूम्र आय में लग्न ज्ञान का चक्र॥

क-का	कि-की	कु-कू	के-कै	को-कौ	कवर्ग के अक्षर
मेष	वृश्चिक	मेष	वृश्चिक	मेष-वृश्चिक	मंगल के लग्न

॥ (३) सिंह आय में लग्न ज्ञान का चक्र॥

च-चा	चि-ची	चु-चू	चे-चै	चो-चौ	च वर्ग के अक्षर
तुला	वृष	तुला	वृष	तुला	शुक्र के लग्न

॥ (४) श्वान आय में लग्न ज्ञान का चक्र॥

ट-टा	टि-टी	टु-टू	टे-टै	टो-टौ	ट वर्ग के अक्षर
मिथुन	कन्या	मिथुन	कन्या	मिथुन	बुध के लग्न

॥ (५) वृष आय में लग्नज्ञान का चक्र ॥

त-ता	ति-ती	तु-तू	ते-तै	तो-तौ	त वर्ग के अक्षर
धनु	मीन	धनु	मीन	धनु	गुरु के लग्न

॥ (६) खर आय में लग्नज्ञान का चक्र ॥

प-पा	पि-पी	पु-पू	पे-पै	पो-पौ	प वर्ग के अक्षर
कुंभ	मकर	कुंभ	मकर	कुंभ	शनि के लग्न

॥ (७) गज आय में लग्नज्ञान का चक्र ॥

य	र	ल	व	०	यवर्ग के अक्षर
कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	०	चन्द्र के लग्न

॥ (८) ध्वाङ्क्ष आय में लग्नज्ञान का चक्र ॥

श	ष	स	ह	०	शवर्ग के अक्षर
कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	०	चन्द्र के लग्न

॥ इति केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रहे उत्तरार्धं समाप्तम् ॥

सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः

॥ इति आचार्य पं. **गुरुप्रसाद गौड़** विरचित केरलप्रश्नशास्त्रसंग्रह के उत्तरार्ध की **ऋचा हिन्दी टीका** सम्पूर्ण ॥

दो सहस्र के ऊपरै, उनसठ विक्रम वर्ष।
चैत्र शुक्ल की सप्तमी, टीका पूर्ण सहर्ष॥

॥ शुभं भवतु ॥

●●